हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमोअरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमोआयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

वर्ष 59 अंक 6
जून, 2002 जयेष्ठ 2059

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण प्रतिष्ठान

" रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स "

जलगाँव के यहाँ।

सोने - चांदी के यह सुंदर अलंकार शिल्प!

अलंकारों के सैंकडो विविधतम नये नमूने, एक से बढकर एक आकर्षक कलात्मक कारीगरी से सजे अनगिनत डिजाईन्स।

कुंदन-जडाव, मीनाकाम, ऑक्साईड पॉलीश, छिलाई व कास्टीग काम की उच्चतम श्रेणी।

हीरों के आभूषणों की नई विशाल मालिका।

चांदी में बने नये मनमोहक वैभवशाली बर्तन हाजिर स्टॉक में उपलब्ध हैं।

गहनों की 'वापसी विश्वसनीयता' स्पष्ट रूपसे बिल पर और अलंकारों पर भी।

व्यापारियों के लिए सोने गहने एवं चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सेवा शुरू है।

रतनलाल सी. बाफना, ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी बर्तन शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३, २२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

चेतावनी : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नहीं!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  प्रकाशचन्द डागा
  मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
  3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.
- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
  डाक पंजीयन सं. RJ2803/02
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

कण-कुण्डगं चइत्ताणं,
विट्ठं भुंजइ सूयरे।
एवं सीलं चइत्ताणं,
दुस्सीले रमइ मिए॥
-उत्तराध्ययन सूत्र 1.5

सूअर धान्य भूस को तज कर,
विष्ठा में ललचाता है।
शील छोड़ अज्ञानी वैसे,
उत्पथ में रम जाता है ॥5॥

जून 2002
वीर निर्वाण सं. 2528
ज्येष्ठ, 2059

वर्ष : 59 **अंक** : 6

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

तप हो सम्यक् और निष्काम : मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. 6
परिवर्तन का हेतु सामायिक : श्री एस.सी. मोहनोत 13
उपयोग या उपभोग : श्रीमती विमला जोटा 18
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य(7) : श्री जशकरण डागा 29
सरलमना महासती राजमती जी : श्रीमती आनन्दकंवर मेहता 31
मुक्त होना : सरलतम व कठिनतम : श्री कन्हैयालाल लोढ़ा 38

विचार / तथ्य

शांति की खोज : भंडारी सरदारचन्द जैन 17
अहिंसा का विस्तार : शान्ति का हेतु : श्रीमती सुधा भंसाली 20
उत्तराध्ययनसूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन : प्रो. चाँदमल कर्णावट 30

कथा / कविता / प्रसंग

जिनशासन : श्री प्रकाशचन्द्र जैन 'दास' 21
जनगणमन अधिनायक............... : रवीन्द्रनाथ टैगोर 22
मूल्यवान कौन? : श्री प्रकाश गुन्देचा 23
मम्मी! तुम डायन हो : श्री नवलसिंह जैन 24
अहिंसाणुव्रत : वध अतिचार : श्री लालचन्द्र जैन 32
मनहूस चेहरा : आनन्दीराज धीसूलाल तलेसरा 40

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय : डॉ. धर्मचन्द जैन 3
जैनागम-विशेषांक पर अभिमत : संकलित 33
साहित्य-समीक्षा : डॉ. धर्मचन्द जैन 36
समाचार-संकलन : संकलित 41
संक्षिप्त समाचार : संकलित 50
बधाई : संकलित 51
श्रद्धांजलि : संकलित 52
राष्ट्रीय समाचार : संकलित 54
साभार–प्राप्ति–स्वीकार : संकलित 57

आर्त्तध्यान

डॉ. धर्मचन्द जैन

चित्त की एकाग्रता को ध्यान कहा जाता है। ध्यान शुभ भी होता है और अशुभ भी।धर्मध्यान और शुक्लध्यान शुभ हैं तथा आर्त्तध्यान और रौद्रध्यान अशुभ हैं।

जो ध्यान चित्त को मलिन बनाता है, रागादि कषायों में वृद्धि करता है, कर्म बन्धन में सहायक बनता है वह अप्रशस्त या अशुभ ध्यान है तथा जो ध्यान चित्त को निर्मल बनाता है, रागादि पर विजय प्राप्त करने एवं कर्मों की निर्जरा में सहायक बनता है वह प्रशस्त या शुभ ध्यान है। टी.वी. पर चित्रहार देखते समय जो ध्यान लगता है, चित्त एकाग्र रहता है वह रागादि कषायों को अभिवृद्ध करने के कारण अशुभ ध्यान है, किन्तु धर्मग्रन्थों का स्वाध्याय करते समय जो चित्त की एकाग्रता है वह प्रशस्त या शुभ ध्यान है, क्योंकि उससे रागादि कषायों में कमी आती है एवं चित्त व आत्मा की निर्मलता बढ़ती है।

'ध्यान' को आभ्यन्तर तप में भी स्थान दिया गया है। वह ध्यान शुभ ही होता है, अशुभ नहीं। साधना के क्षेत्र में ध्यान का जो महत्त्व है वह शुभ या प्रशस्त ध्यान का ही है, अशुभ या अप्रशस्त ध्यान का नहीं। किन्तु व्यवहार में 'ध्यान रखना', 'ध्यान कहां है' आदि प्रयोग हमारी प्रत्येक प्रवृत्ति के साथ जुड़े हैं। ध्यान के बिना कोई भी कार्य सम्यक् रूपेण नहीं होता। प्रत्येक कार्य में ध्यान की अपेक्षा है।

जैन धर्म में ध्यान के चार भेद हैं– 1. आर्त्तध्यान 2. रौद्रध्यान 3. धर्मध्यान और 4. शुक्ल ध्यान। इनमें प्रथम दो संसार के हेतु होने से अशुभ या अप्रशस्त हैं तथा अन्तिम दो मोक्ष के हेतु होने से प्रशस्त या शुभ हैं।

मनुष्य अधिकतर आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान में ही जीता है। यही उसके दुःख का कारण है। दुःखमुक्ति के लिए धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान उपयोगी हैं। धर्म ध्यान में वीतराग-वचन, दोष-निवारण, कर्म-फल, लोकस्वरूप आदि का विचार कर सत्यान्वेषण किया जाता है। शुक्ल ध्यान तो पूर्वधरों एवं केवलियों को होता है। यह सर्वोत्कृष्ट ध्यान है। इस ध्यान का चौथा भेद अयोगी को होता है।

आर्त्त का अर्थ होता है दुःखी। दुःखी व्यक्ति का ध्यान आर्त्तध्यान है। आर्त्तध्यान की अवस्था व्यक्ति को दुःखी कर देती है। आर्त्तध्यान के चार प्रकार हैं–

1. अप्रिय या अनिष्ट वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि के प्राप्त होने पर उनके वियोग के लिए सतत चिन्ता करना।
2. प्रिय वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि का वियोग होने पर उनकी पुनः प्राप्ति के लिए सतत चिन्ता/चिन्तन करना।
3. रोग आदि की प्रतिकूल वेदना होने पर उसके निवारण हेतु चिन्ता करना।

4. अप्राप्त वस्तु आदि की प्राप्ति के लिए संकल्प करना, भोग की लालसा रखना या भोग-प्राप्ति का चिन्तन करना।

आर्त्तध्यान के ये चार प्रकार हमारे दैनिक जीवन में घटित होते हुए अनुभव में आते हैं। अनादिकाल के अप्रशस्त संस्कारों से बिना प्रयत्न के भी यह आर्त्तध्यान उत्पन्न होता रहता है।(ज्ञानार्णव 25.41) आर्त्तध्यान के कारण जीव सदा शंका, शोक, भय, प्रमाद, कलह, चित्तभ्रम, उन्माद, विषयोत्सुकता, मूर्च्छा आदि से ग्रस्त रहता है। यह आर्त्तध्यान मिथ्यात्वी जीवों को तो होता ही है, किन्तु सम्यक्त्वियों में छठे प्रमत्तसंयतगुणस्थान तक भी सम्भव है। छठे गुणस्थान में आर्त्तध्यान का चौथा भेद नहीं पाया जाता है।

जिस व्यक्ति का जीवन बाह्य वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों में अटका हुआ है, उनकी मनोज्ञता में लालायित एवं अमनोज्ञता में आर्त्त होता है वह आर्त्तध्यान से ग्रस्त बना रहता है। आर्त्तध्यान मानव के सम्यक् सोच को कुण्ठित बनाये रखता है। आर्त्तध्यान सर्वथा अनावश्यक एवं अनपेक्षित है, फिर भी मनुष्य के अपने वासनाजनित संस्कार के कारण वह आर्त्तध्यान की चपेट में आता रहता है।

भोगवादी विचारधारा से ग्रस्त व्यक्ति भोग सामग्री की प्राति के लिए लालयित रहता है। उपभोक्ता संस्कृति उसकी इस वासना को अधिक उद्दीप्त बनाती रहती है। भोगेच्छु व्यक्ति इष्ट वस्तु, व्यक्ति आदि के संयोग में अपने को सुखी एवं वियोग में दुःखी अनुभव करता है। भोगपूर्ति में बाधक तत्त्वों का वह निराकरण चाहता है, उसके लिए सतत चिन्ताकुल रहता है। अनिच्छित वेदना आदि के उपस्थित होने पर अपनी सहनशक्ति को न्यून समझकर शोकाकुल हो उठता है। इस प्रकार अनुकूल को बनाये रखने एवं प्रतिकूल के वियोग की अभिलाषा ही आर्त्तध्यान का मूल है। ध्यानशतक में कहा है–

तस्सऽक्कंदणसोयणपरिदेवणताडणाइं लिंगाइं।
इट्ठाणिट्ठवियोगयवियणा - निमित्ताइं।।

इष्टवियोग, अनिष्ट संयोग एवं वेदना के निमित्त से होने वाले आर्त्तध्यान के चार लक्षण बताए हैं– 1. आक्रन्दन 2. शोचन 3. परिदेवन और 4. ताड़न। ये चारों स्थूल लक्षण हैं। आर्त्तध्यानी इष्ट का वियोग होने पर चिल्लाता है, आक्रन्दन करता है, शोकमग्न हो जाता है (शोचन), विलाप (परिदेवन) करता है अथवा अपने ही छाती आदि अंगों को पीटने लगता है(ताड़न)। अपने प्रियजनों की मृत्यु पर ये सभी लक्षण देखे जा सकते हैं। किन्तु सांसारिक घटनाओं में सूक्ष्म स्तर पर आर्त्तध्यान चलता रहता है।

घर से बालक बाहर जाता है, माता-पिता का चिन्तन चलता है– कहीं कोई दुर्घटना न हो जाय, कोई अनिष्ट न हो जाय–ऐसी शंका भी आर्त्तध्यान ही है।इसी प्रकार व्यापारी के घाटा लग जाने पर उसे जो शोक होता है,भीतर से हृदय कचोटता

है एवं हानि विषयक-चिन्तन चलता रहता है वह भी आर्त्तध्यान ही है। इस प्रकार जीवन में जो व्यर्थ की चिन्ता होती है, वह हमारी शक्ति का ह्रास ही करती है, उसका कोई लाभ नहीं है।

आर्त्तध्यान की अवस्था में समस्या का समाधान नहीं खोजा जाता, मात्र दुःख से संतप्त हुआ जाता है। इसलिए आर्त्तध्यान त्याज्य है। आर्त्तध्यान ही कभी रौद्रध्यान में परिणत हो जाता है। रौद्रध्यान क्रूरता का परिचायक है। जिसका चित्त क्रूर एवं कठोर होता है वह रुद्र कहलाता है।रुद्र व्यक्ति की एकाग्र चित्तावस्था ही रौद्रध्यान है। यह रौद्रध्यान हिंसा, झूठ, चोरी एवं विषयरक्षण के भेद से चार प्रकार का है। रौद्रध्यानी हिंसा, झूठ, चोरी एवं विषयरक्षण के संबंध में ही सतत चिन्तन करता है तथा उसी के अनुरूप आचरण में प्रवृत्त होता है।

आर्त्तध्यान की भांति रौद्रध्यान भी व्यक्ति को पतन के मार्ग पर ले जाता है। विवेकशील इन दोनों प्रकार के ध्यानों से बचकर धर्मध्यान को अपनाता है। धर्मध्यान ही मनुष्य के लिए कल्याणकारी है, जो आगे चलकर व्यक्ति को शुक्लध्यान में ले जाता है। धर्मध्यान सम्यग्दृष्टियों को ही हो सकता है। श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार धर्मध्यान सातवें से बारहवें गुणस्थान तक माना गया है, जबकि दिगम्बर परम्परा में चौथे से सातवें गुणस्थान तक मान्य है। हम इस मान्यता भेद में नहीं जाते, किन्तु धर्मध्यान की ओर जाने के लिए सम्यग्दर्शन एक आवश्यक तत्त्व है, इसे स्वीकार करना पड़ेगा।

स्वाध्याय, सत्संग या स्वतः स्फूर्त प्रेरणा से यदि दृष्टि सम्यक् बनती है, तो आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान में स्वतः कमी आती जाएगी और एक दिन ऐसा भी आ सकता है जब आर्त्त एवं रौद्रध्यान से पूर्ण मुक्त होकर व्यक्ति धर्मध्यान से होकर शुक्लध्यान तक पहुंच सकता है।

इस प्रक्रिया के लिए सर्वप्रथम हमें आर्त्तध्यान में हमारी चेतना एवं हमारे मन की क्या अवस्था बनती है, उसका अवलोकन करना प्रारम्भ करना चाहिए। जिस दिन हम दुःख की अवस्था में हों, निराशा, चिन्ता, भय, आशंका की अवस्था में हों, तब सोचना चाहिए कि मेरी यह अवस्थाएँ आर्त्तध्यान की तो सूचक नहीं? क्या निराशा, चिन्ता आदि से समस्या का समाधान संभव है? क्या इनसे मेरे सामर्थ्य एवं मनोबल का ह्रास नहीं हो रहा है? यदि इस प्रकार चिन्तन को मोड़ दिया जाए एवं यह सोचा जाय कि जो घटनाएँ मेरे हाथ में नहीं,उनके कारण मेरा दुःखी होना, आर्त्त होना क्या उचित है? अविवेकी व्यक्ति ही इस प्रकार दुःख को आमन्त्रण देता है। विवेकी व्यक्ति अपने को वस्तु, व्यक्ति एवं परिस्थितियों से ऊपर समझता है। इनके बदलने के स्वभाव से वह परिचित रहता है तथा क्षण-क्षण में क्रोध, असंतोष, तनाव, निराशा आदि की स्थितियों में नहीं जाता। वह दुःख की परिस्थितियों में भी शान्त, धीर एवं सुखी ही नजर आता है। ★

तप हो सम्यक् और निष्काम

मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा.

संचित कर्मों को निर्जरित करने के लिए 'तप' एक सबल साधन है। तप मानव को पतित से पावन बना सकता है। तप की महिमा अगाध है, किन्तु जब तपश्चरण के समय दृष्टि दूषित हो, आडम्बर, प्रदर्शन आदि का भाव जुड़ जाय तो तपस्या का गारा हो जाता है। तप के साथ संयम एवं समत्व आवश्यक हैं। मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. ने अपने प्रवचन में तप के सम्यक् आचरण पर बल दिया है तथा आडम्बर, प्रदर्शन आदि को त्यागने की प्रेरणा की है। इसके साथ ही क्षमा, सहिष्णुता, संयम आदि को जीवन में स्थान देने का संकेत किया है। मुनि श्री के प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है।–सम्पादक

धर्मानुरागी बन्धुओं!

श्रमण भगवान महावीर स्वामी ने अपनी मंगलमयी देशना के माध्यम से प्राणिमात्र को आत्म-जागृति का संदेश दिया है। आप-हम देखते हैं संसार के अंदर अनेकानेक प्राणी अलग-अलग गति में, अलग-अलग जाति में जन्म लिए हुए समय व्यतीत कर रहे हैं। कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनके मन नहीं, तो कुछ ऐसे प्राणी हैं जिनके पास मन उपलब्ध है। एकेन्द्रिय से असन्नी पंचेन्द्रिय तक प्राणियों के मन नहीं है। नारकी, तिर्यंच, मनुष्य और देवताओं में जब तक अपर्याप्त अवस्था है, तब तक मन नहीं रहता।

संज्ञी पंचेन्द्रिय प्राणी को मन का साधन उपलब्ध होता है। मन का कांम होता है– मनन करना, सोचना और विचार करना। मन किसी न किसी कार्य में निरत रहता है। मन की हुकूमत के आगे इन्द्रियाँ उसके अनुसार चलती हैं। मन को सारथी बताया है और इन्द्रियों को घोड़े की संज्ञा दी गई है। इन्द्रियाँ मन के अनुसार गतिशील रहती हैं।

विचार यह करना है कि जिसका मन वीतराग वाणी में रमण करता है, संतों के सद्वचनों पर चलता है, ऐसे मन वाले आदमी त्याग के मार्ग में आगे बढ़ते हैं। कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो मोहदशा के कारण और भोगों की आसक्ति के कारण भोग वासना में आगे बढ़ जाते हैं। वे खाने-पीने और मौज-मजा करने में, इन्द्रियों के वशीभूत हो वासना में रमण करने में और आसक्ति-ममत्व के झूले झूलने में मस्त रहते हैं। ऐसी दशा में जीवन गुमराह हो जाता है और भविष्य अंधकारमय बन जाता है। दूसरी ओर जिनको गुरु की सन्निधि, स्वाध्याय का संबल और धर्माचरण में रुचि है वे भोग को रोग समझकर, राग को अंधकार समझ कर त्याग को प्रधानता देते हैं और वीतरागता में रमण करते हैं। वे भविष्य को सुखद और जीवन को मंगलमय बना देते हैं।

मन एक ऐसा सशक्त साधन है जिससे व्यक्ति पतित भी बन सकता है तो

सदुपयोग कर पावन भी बन सकता है। सुखविपाक सूत्र के माध्यम से चर्चा चल रही है कि सुदत्त अणगार मासखमण की तपस्या में तन, मन, इन्द्रियों को अर्पित कर उत्तम ध्येय की प्राप्ति में संलग्न थे।

साधु का धर्म है–तप में, त्याग में और संयम में रमण करना। साधु के लिए तप-संयम जरूरी कहा तो श्रावक के लिए आस्रव के त्याग को जरूरी बताया गया है। संत आने वाले कर्मों को रोकने के लिए संयम की साधना करता है। उसमें संवर क्रिया समाहित है ही, लेकिन जो संचित कर्म हैं उन्हें नष्ट करने का सबल उपाय है तपश्चर्या।

भगवान ने मोक्ष के चार मार्ग बतलाये हैं, जिनमें एक मार्ग है– तप। संचित कर्मों को नष्ट करने का सबसे सबल उपाय है– तप। तप कषाय उपशान्त करने का साधन है, आत्म-विशुद्धि का अमोघ उपाय है, तो इसी तप से अनेक लब्धियाँ और शक्तियाँ ही नहीं, केवलज्ञान तक प्राप्त होता है।

संत के लिए तप और संयम जरूरी है। स्वयं भगवान के साधनामय जीवन पर दृष्टि डालें तो पता चलेगा कि साढ़े बारह वर्ष के साधनाकाल में मात्र 349 दिन ही उन्होंने आहार किया, शेषकाल चौविहार तप में रहे। केवलज्ञान के समय भी बेले की तपस्या थी और निर्वाण हुआ तब भी बेले की तपस्या रही। तप से ही सिद्धि मिलती है। बिना तप के आत्मा संवरती नहीं।

आप द्रव्य दृष्टांत देखें। ईंट पहले-पहल जब भट्टी में जाती है उसका रंग काला होता है। पक जाने के बाद वहीं ईंट लाल होकर निकलती है। कोयला रंग से काला है, पर जब वह अग्नि की भेंट चढ़ जाता है तो काला कोयला जलकर काला नहीं रहता। इसी तरह अनादि काल से कर्मों के कारण कलुषित बनी आत्मा को विशुद्ध, निर्मल और पवित्र बनाने का सर्वोत्तम उपाय है– तपस्या। संत दीक्षा के साथ तपस्या स्वीकार करके चलता है। तपस्या में तेज होता है। तपस्वी के आगे अच्छे.अच्छे आदमी नतमस्तक हो जाते हैं। तप को नंगी तलवार की उपमा भी दी गई है। तलवार और वह भी नंगी, जिस किसी के हाथ में है, सामने वाला उसे देखकर स्थिर हो जाता है। ऐसे ही तपस्वी के सामने कैसा भी आदमी होगा, वह भी सहज तपोबल के आगे नतमस्तक हो जाता है।

धन्ना अणगार को चौदह हजार श्रमणों में श्रेष्ठता का खिताब किस कारण मिला? श्रेणिक ने भगवान महावीर स्वामी से पूछा– भगवन्! आपके साधुओं में श्रेष्ठ कौन है? भगवान ने फरमाया–'यों तो सभी साधु एक-दूसरे से श्रेष्ठ हैं, पर धन्ना अणगार की बात अलग है। अणुत्तरोववाई सूत्र में चर्चा चलती है, वे बेले-बेले तप करते हैं और पारणक आयंबिल से। पारणक में ऐसा आहार लेते है, जिसकी भिखारी तक वांछा नहीं करता। कभी आहार मिलता तो पानी नहीं, कभी पानी मिलता, पर आहार नहीं। तप करते–करते धन्ना अणगार की एक-एक नस दिखने

लग गई। कौए की जांघ की तरह उनका शरीर तप से सूख गया, पर भीतर का आत्मतेज अपूर्व था।

"कर-कर तपस्या खंखर कर दी काया" कितनी घनघोर तपस्या की और अपने जीवन को श्रेष्ठ व धन्य बनाया, जिसके लिए प्रभु ने कहा– धन्ना अणगार की बात कुछ और है। संत का लक्ष्य होता है– संचित कर्मों को क्षय करना। आप धन्ना अणगार की बात करें या और-और तपस्वी संतों की, तप करने वाला साधक शरीर के सूखने की परवाह नहीं करता और न ममत्व भाव से शरीर का पोषण करता है। वह तो आत्मा को पावन बनाने के लक्ष्य से तपाराधन करता है।

सुनते हैं पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में तपस्या का वातावरण अधिक देखने को मिल रहा है– अठाइयां, मासखमण, वर्षीतप आदि विभिन्न प्रकार की तपस्याएँ जगह–जगह बहुत अधिक संख्या में लोग कर रहे हैं। यदि शक्ति है तो करनी भी चाहिए– क्योंकि कहा है

"तप करता बल गयो, द्रव्य गयो दे दान।
प्राण गया सत्संग में, तीन गया मत जाण।।"

मगर देखना यह है कि तप क्यों? कैसा? और उद्देश्य क्या? यदि लक्ष्य ही गलत होगा तो यात्रा का औचित्य ही क्या? यदि उद्देश्य ही गलत है तो पुरुषार्थ फलदायी एवं लाभकारी नहीं होगा। भगवान ने तप का बहुत सुन्दर उद्देश्य बताया है–

१."नो इहलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा, २. नो परलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ३.नो कित्तिवण्ण-सद्द सिलोगट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा ४. नन्नत्थ निज्जरट्ठयाए तवमहिट्ठेज्जा।।"

हम तप का उद्देश्य समझें। तप न इस लोक में प्रशंसा पाने के लिए हो, न कोई कामना से हो। लोग मुझे तपस्वी कहेंगे और तप करने से मेरी इज्जत बढ़ेगी, इस उद्देश्य से तप नहीं करे। तप के साथ कोई कामना भी जुड़ी हुई नहीं होनी चाहिए। जहाँ कामना है वह तप, तप नहीं। यह तो सौदेबाजी है। आप इस वणिक-वृत्ति को तप के साथ न जोड़ें। तप मात्र कर्म की निर्जरा के लिए हो और कर्म-निर्जरा के निमित्त किया गया तप ही फलदायी होता है।

आज तप के साथ आडम्बर और प्रदर्शन बढ़ता जा रहा है। लोगों की मानसिकता देखिए, तप करें और पड़ौसी को मालूम नहीं, तो वह क्या तप? और उसकी यादगार रखने के लिए फोटोग्राफर एवं वीडियो रील भी जरूरी है। पति-पत्नी तेले की तपस्या करते हैं जिसे आप हरक तेला कहते हैं। हरक तेले में कितना आडम्बर? प्रभावना का लेन-देन धड़ल्ले से चलता है।

आज चाहे युवा हो या प्रौढ़, तप में परिवार एकत्रित करने, भोज देने, उपहार लेने और देने में तप का सार समझते हैं। ऐसे लोगों की बहुतायत है। अगर अस्सी प्रतिशत भी कह दूँ तो उसमें अतिशयोक्ति नहींहै। तप किया है तो घर में फंक्शन तो होना ही चाहिए। कई तो तप के फंक्शन के साथ गृह-प्रवेश और बेटे-पोते के जन्म-

दिन का खाना भी रख देते हैं। खाना एक और नाम तीन। प्रायः अधिकांश लोगों का लक्ष्य मेला भरवाने का रह गया है। तप किया तो आयोजन तो करना ही है।

पूज्य गुरुदेव फरमाते थे– आपने शादी और मायरों को महंगा बना दिया, तप को तो महंगा मत करो। कई-कई हैं जो छः या सात की तपस्या करके पारणक कर लेते हैं। मेरे प्रत्यक्ष देखने में आया– एक बहिन की भावना अठाई करने की थी। उसने सात करके पारणक कर लिया। पूछा तो जवाब मिला– ''काई करां बाबजी! थांरे श्रावक जी कहे कि अबार जोगवाही बराबर कोनी। पहले सूं खरचो बहुत होयोड़ो है, अब और खर्चा करूँ, ऐसी स्थिति नहीं। मैं अठाई कर, लोगों ने नहीं बुलाऊँ तो लोग व्यंग्य करता देर नीं करे।'' किसी की भावना हो, न हो, पर समाज को देखकर भावना करनी पड़ती है। आज समाज की यह विडम्बना है कि टोसा-मोसा मारते देर नहीं करते। किसी ने ठीक ही कहा है–

''छिलका कहाँ तक उतारोगे यह प्याज है।
दोष कहाँ तक निकालोगे यह समाज है।।''

बहुत कम लोग ऐसे हैं जो तप का सही स्वरूप समझते हैं और समाज की परवाह नहीं करते और एक आडम्बर रहित आदर्श तप की झलक प्रस्तुत करते हैं।

तप कैसा हो? तप कामना के साथ नहीं हो। तप आडम्बर और प्रदर्शन से युक्त न हो। तप कषायों के शमन, आत्मा के दमन के लिए हो। देखिये उपवास का क्या अर्थ? तत्त्वदर्शियों ने कहा–

कषायविषयाहाराणां, त्यागो यत्र विधीयते।
उपवासः स विज्ञेयः, शेषं लंघनकं विदुः।।

उपवास में दो शब्द हैं। एक 'उप' और दूसरा 'वास'। उप यानी नजदीक। वास यानी रहना। नगर के नजदीक कोई उपनगर होता है तो उप का अर्थ आप पास से लेते हैं। पास में वास करना। यदि उपवास करके विषय-कषाय का त्याग नहीं किया, विषय-विकार नहीं मिटाये तो वह लंघन है। जिसे पुराने संत ढोर लंघन की संज्ञा देते थे। जैसे खूंटे से बंधा पशु आहार नहीं कर पाता।

आज कई लोग हैं जो उपवास तो करते हैं, पौषध नहीं करते। आस्रव का त्याग नहीं तो उस उपवास का क्या मतलब? शास्त्र में कहीं उपवास का वर्णन नहीं मिलता। श्रावक जी ने पौषध किया, इसका उल्लेख मिलता है, उपवास का नहीं। उपवास के पीछे आस्रव त्याग का लक्ष्य होना चाहिए। आस्रव का त्याग करके पौषध करे तो ही उपवास लाभ का कारण कहा गया है।

भगवान ने आहार करने में पाप नहीं बताया, आस्रव-सेवन पाप का कारण है। आहार में पाप होता तो केवली कैसे आहार करते? आहार करना पाप नहीं है। पाप है–आस्रव का सेवन। हाँ, आहार करते हुए आसक्ति है तो उसमें पाप है, पर निर्मल भाव से अनासक्त बनकर आहार करे, उसमें पाप नहीं है। उपवास करके विषय-विकार से दूर रहे, आस्रव से हटे, प्रमाद का त्याग करे और सच्चा पुरुषार्थ

करे वही उपवास है, अन्यथा भोजन त्याग तो मात्र लंघन है।

तपस्या के साथ एक दोष कई बार देखने-सुनने को मिलता है, जो तप की कीमत कम कर देता है, जिसमें तप का स्वरूप तक विकृत हो जाता है और जिसमें तप बदनाम हो जाता है तथा प्रेरणादायी नहीं बन पाता। वह विकृति है– क्रोध। कभी-कभी लोग पूछते हैं– म.सा.! तपस्वी को गुस्सा क्यों आता है? इस संदर्भ में मैं क्या समाधान दूँ, पर ज्ञानियों ने चार प्रकार के अजीर्ण बताये हैं। ज्ञान का अजीर्ण–अहं, क्रिया का अजीर्ण– परनिंदा, तप का क्रोध और भोजन का अजीर्ण–विसूचिका। कभी-कभी देखा जाता है कि थोड़ा सा ज्ञान क्या बढ़ जाता है, थोकड़े, तत्त्व और शास्त्र की जानकारी क्या हो जाती है कि अहं झलकने लग जाता है अर्थात् ज्ञान को पचाना, गाम्भीर्य गुण में परिवर्तित करना हर एक के बस की बात नहीं। कुछ विरले ही होते हैं जो ज्ञान को अहं में झलकने नहीं देते। क्रिया का दृढ़ता से पालन कर आत्म-भाव में रमने वाले विरले होते हैं, वरना क्रिया का कठोरता से पालन करता हुआ बात–बात में अपनी श्रेष्ठता जताता हुआ परनिंदा पर उतर आता है। यह परनिंदा क्रिया पालन का अजीर्ण है तो तप का अजीर्ण क्रोध माना गया है। देखा जाता है कि भूखे आदमी को कुछ गुस्सा आ ही जाता है।

महापुरुषों ने क्रोध को हेय और त्याज्य बताया है। क्रोध आत्मा के लिए खतरनाक है। जीवन व्यवहार में क्रोध क्लेष उत्पन्न करने वाला है। तपस्या करके क्रोध तप के महत्त्व को खत्म कर देता है, कभी-कभी तप को बदनाम करने का निमित्त भी बन जाता है। कहा भी है–

"करोड़ वर्ष कोई तप तपे, एक सहे कोई गाल।
उण में नफो है घणो, मेटो मन री झाल।।"

एक व्यक्ति करोड़ वर्ष तप करे और एक समभाव के साथ गाली सहन करे तो दोनों में समभाव के साथ गाली सहन करने वाले को श्रेष्ठ कहा है। यदि गुस्सा साल भर रहे, गुस्से की गांठ भीतर में मौजूद रहे तो तत्त्वज्ञों की दृष्टि में उसका सम्यक्त्व तक खतरे में पड़ जाता है। क्रोध की गांठ बांधना हितकर नहीं है। संतों के लिए तो यहाँ तक बताया है कि किसी के साथ कभी खटपट भी हो जाय तो वे पहले क्षमायाचना कर आत्म-शुद्धि करें। गोचरी, स्वाध्याय, प्रवचन करें, पर उसके पहले क्षमायाचना करें।

आप क्या करते हैं? घर में कभी आग लग जाय तो पहले घर की आग बुझाते हैं या पहले भोजन करते हैं? आप अपने घर की आग बुझाने का प्रयत्न करते हैं, खाना खाया है या नहीं, इसका विचार नहीं करते। इसी तरह क्रोध की आग भीतर लगी हुई है, किसी से खटपट हो रखी है, ऐसी स्थिति में पहले क्षमायाचना, फिर अन्य कार्य। संत गोचरी, स्वाध्याय, प्रवचनादि सारे काम छोड़कर पहले क्षमायाचना नहीं करे तो उसका साधुपना चला जाता है। वेश की दृष्टि से तो वह

साधु रहता है, पर गुणों की दृष्टि से वह साधुत्व का ह्रास कर लेता है और चार माह तक क्षमायाचना नहीं करे तो श्रावकपना नहीं रहता और एक वर्ष तक क्षमायाचना नहीं करे तो अनन्तानुबंधी कषाय के कारण मिथ्यात्व का सेवन करता है।

जैन कुल में जन्म लेने वाले कई घरों में अहिंसा के प्रति जितनी सजगता है उतनी कषायों के शमन के लिए नहीं है। कभी-कभी श्रावक-श्राविकाएँ अपनी मनोभावना को व्यक्त करते हुए कातर स्वर में निवेदन करते हैं–''महाराज! गजब हो गया, म्हने रोटी नहीं भाई, म्हारे हाथ सूं चूहा रो बच्चो मर गयो अथवा अमुक जीव मर गया, प्रायश्चित्त दीजिए।'' देखिए अहिंसा के प्रति कितनी सजगता? क्या यही सजगता कषायों के शमन के प्रति है? क्या कभी कषाय के बढ़ जाने पर इसी तरह ग्लानि का अनुभव करते हुए गुरु भगवंतों से प्रायश्चित्त लेते हैं?

आज सहिष्णुता की कमी इस कदर महसूस की जा रही है कि जरा सी बात पर कब बवाल मच जाय, कब आवेश आ जाय, कह नहीं सकते। समता, सहजता, सहिष्णुता जैसे मौलिक गुण तो जैसे दूज के चाँद बन गये। छोटी सी बात पर आदमी बहुत जल्दी बिखर जाता है। कभी देखता हूँ–घर पर गोचरी जाते, यदि किसी के हाथ से घर असूझता हो जाय,फिर देखो उसका नंबर कैसे आता है–सासू, बहू को भजन सुनाते देर नहीं करती। हमें अनुभव है इस बात का, इसलिए घर पर सौगन्ध कराकर आते हैं कि जिससे घर असूझता हुआ उस पर गुस्सा न करें। अन्यथा जिससे घर असूझता हुआ परिवार का हर सदस्य उस पर बरस पड़ता है। प्रेम से सैद्धान्तिक बात समझाना कहीं रहा, और उबल पड़ते हैं। यहीं नहीं, कभी आवश्यक वस्तु की याचना हेतु किसी के घर पर गये और पड़ोस के घर में नहीं गये तो महाराज के आना तक छोड़ देते हैं, बात की गहराई में जाना तो दूर, क्षणिक में आवेश में आ जाता है। यद्यपि संत ऐसी नौबत नहीं आने देते, पर आपके सामने सहिष्णुता की कमी के कुछ नजारे प्रस्तुत किये। जरा सोचें, जब संतों के निमित्त सहिष्णुता के अभाव में इस तरह क्रोध के प्रसंग बन जाते हैं, तो घर-परिवार में अन्य प्रसंगों पर रामायण- महाभारत घटित हो जाय तो कोई आश्चर्य नहीं। ये सब क्रोध के परिणाम हैं। गलती किसी से भी हो सकती है, मगर वहाँ यदि प्रेम, सौहार्द, आत्मीयता का परिचय देकर बात समझाएँ तो वातावरण में मधुरता बनी रहेगी। गुस्सा करने वाला जरा सोचे, गलती मुझसे भी हो सकती थी। मुझे बताएं ऐसे समय में गुस्सा किस पर करोगे?

एक कमरे में बाप-बेटे बैठे थे। रसोई में कांच का गिलास फूटा। पिता ने कहा– तुम्हारी माँ के हाथ से गिलास गिर गया। रसोई दूर थी इसलिए पूछ लिया–आपको कैसे पता लगा? पिताजी ने कहा– मेरी बात पर विश्वास नहीं हो तो जाकर देख लो। बेटे को लगा पिताजी जादूगर हैं या फिर इनको कोई ज्ञान हो गया? पिता ने कहा– बेटे! नौकर या बहू के हाथ से फूटता तो वह घर ऊपर–नीचे ले लेती। मगर खुद के हाथ से फूटा तो किसे कहे?

मैं कह रहा था– अहिंसा के प्रति आपकी सजगता है, यह अच्छी बात है। आप से चीटीं मर जाय तो करुणा की भावना उमड़ पड़ती है। क्या कषायों के शमन में भी ऐसी सजगता है?

क्रोध से कषाय बढ़ते हैं। अकषायी अवस्था में कर्म की 148 प्रकृतियों में से मात्र एक प्रकृति का ही बंध होता है। जरूरत है कषायों के शमन की। जब तक कषाय शमन की भावना जागृत नहीं होगी, वातावरण शांत नहीं रहेगा। तपस्या करने वालों का मूल लक्ष्य कषाय-मुक्ति होना चाहिए।

श्रद्धेय उपाध्याय (श्री मानचन्द्र जी महाराज) ने प्रवचन में फरमाया कि एक बाई तपस्विनी थी। पहले वर्ष एकान्तर की तपस्या की, तो दूसरे वर्ष बेले-बेले पारणा। तीसरे वर्ष तेले-तेले पारणा तो चौथे वर्ष चौले-चौले पारणा। संत ने कहा बाई! धन्य है आपका तपाराधन में पुरुषार्थ। पास में बैठा पुत्र बोला– बाबजी! कैसा धन्य, लंका री लाय है। नहीं बोले तब तक ठीक, अन्यथा सुबह बोलनी शुरु होवे तो शाम तक रुकवा रो नाम ही नहीं। इतनी तपस्या करते हुए भी कहाँ से शक्ति आती है, भगवान जाने। वह तपस्विनी बाई तप करके भी घर-परिवार के लिए श्रद्धा की पात्र नहीं बन सकी।

तपस्या करके आडम्बर करे, कामना करे, क्रोध करे तो ऐसे तप को हाथी के स्नान की तरह बताया है। हाथी स्नान करता है। पानी से बाहर निकल कर धूल शरीर पर डाल देता है तो उसका स्नान किस काम का? जैसे हाथी का स्नान किया न किया बराबर है, ऐसे ही किसी ने मासखमण किया, अठाई की या वर्षीतप किया और तप करके आडम्बर प्रदर्शन किया, कामना की या गुस्सा किया तो वह तप हाथी के स्नान की तरह माना जाता है अर्थात् वह तप लक्ष्यहीन माना जायेगा, फलदायी नहीं।

रसनेन्द्रिय को नियंत्रित करना तप की श्रेणी में आता है और जिसने रसना को नियंत्रित किया तो अन्य चार इन्द्रियाँ स्वतः नियन्त्रित रहती हैं। एक रसनेन्द्रिय धाप जाय तो चारों इन्द्रियाँ भूखी रहती हैं। आदमी खाया हुआ है तो वह अच्छा देखना चाहेगा, मधुर सुनने की इच्छा होगी। रसना भूखी हो तो न देखना अच्छा लगता है, न सुनना।

संत अपने संयम-जीवन की निर्मलता के लिए रसना को नियंत्रित रखते हैं। तप में रहने वाला साधक निर्विकार रहता है। विषय-वासना से दूर रहता है। तभी वह क्षमा का आचरण कर सकता है और कषायों की निर्मलता के लिए चेष्टा करता है। सुदत्त अणगार मासखमण तप में विचरण कर रहे थे। पारणक का दिन आया। पारणक के लिए कैसे निकलते हैं, शास्त्रकार उसका वर्णन करते हैं। सुदत्त अणगार कर्म-निर्जरा के लिए तप का लक्ष्य समझकर उस ओर प्रवृत्त हुए। जो भी तप की ओर प्रवृत्त होंगे, जीवन को धन्य और पावन बना सकेंगे। ●

परिवर्तन का हेतु : सामायिक

श्री एस.सी. मोहनोत

सामायिक हमारे आन्तरिक परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण साधन है, किन्तु जब तक मन को नहीं साधा जायेगा, सामायिक का आनन्द अनुभव में नहीं आयेगा। मन को साधने में तप एवं अनुप्रेक्षाएँ सहयोगी हैं। इस लेख में आभ्यन्तर तप एवं अनुप्रेक्षाओं को सामायिक में एवं जीवन में स्थान देने की प्रेरणा मिलती है।—सम्पादक

एक शिष्य ने गुरु से पूछा– प्रवचन सुनने के लिए, दर्शन लाभ लेने हेतु श्रद्धालु श्रावक हमारे पास आते हैं फिर भी सामान्यतया उनमें परिवर्तन नहीं पाया जाता। कृपया कारण बतावें?

गुरु ने प्रत्युत्तर को स्थगित रखकर शिष्य को एक घड़ा शराब लाने को कहा। बार-बार आदेश मिलने के कारण शिष्य एक घड़ा शराब ले आया। गुरु ने शराब पीने का कहा। शिष्य आज्ञाकारी था, उसने शराब का ज्योंही कुल्ला भरा, गुरु ने उसे थूक देने को कहा। इस प्रकार बार-बार शराब के कुल्ले भर-भर कर थूक देने से घड़ा खाली हो गया, पर शिष्य को नशा नहीं आया। गुरु ने शिष्य को समझाते हुए कहा कि इतनी अधिक मात्रा में शराब पीने के बावजूद भी तुम्हें नशा नहीं आया, कारण तुमने शराब को हलक के नीचे नहीं उतारा। सिर्फ इसी तरह हमारे श्रावक भी हमारे उपदेश को हलक के नीचे नहीं उतारते अतः उन पर हमारे उपदेशों का असर नहीं आता। अन्यथा आप्त वाणी को जीवन में उतारने से परिवर्तन नहीं आता, यह हो ही नहीं सकता। सिर्फ स्थूल तक रहने से काम नहीं बन सकता। परिवर्तन के लिए सूक्ष्म तक की यात्रा करनी ही पड़ती है।

हम प्रत्यक्ष रूप में अनेक श्रद्धालुओं को सामायिक करते देखते हैं, लेकिन सामान्यतया उनमें परिवर्तन नहीं आता अथवा कम दिखाई देता है। उपदेशकों का कोई दोष नहीं। आप्त वाणी पर प्रश्न चिह्न खड़ा नहीं किया जा सकता। दोष है, कमी है सिर्फ हमारी। चूंकि हम हार्द को नहीं पकड़ रहे हैं। अन्यथा एक सामायिक में इतनी शक्ति है कि वह आपकी जीवनधारा को मोड़ सकती है। आपकी चेतना को पौरुषमय बना सकती है– कार्मण शरीर का अंधकार क्षीण कर सकती है।

इस प्रसंग में पूर्णिया श्रावक की सामायिक का महत्त्व सामने रखकर हम उस मार्ग की ओर बढ़ते का प्रयास करें। सामायिक सम स्थिति प्राप्त करने की योजना है। प्रश्न फिर खड़ा होता है कि हम सम स्थिति को प्राप्त कैसे करें? मन भटकता रहता है उसे एकाग्र कैसे करें?

मन की एकाग्रता के लिए मन को साधना पड़ता है। उस पर नियन्त्रण करना सीखें। इसमें तप एवं अनुप्रेक्षाएँ अतीव सहायक हैं। यहाँ आभ्यन्तर तप एवं अनुप्रेक्षाओं के आधार पर सामायिक–साधना को सशक्त बनाने पर विचार किया

जा रहा है।

सामायिक-साधना में तप का उपयोग- तप दो प्रकार के हैं- आभ्यन्तर और बाह्य। आभ्यन्तर तप में बाह्य तप भी सहयोगी बनते हैं। सामायिक में आंतरिक तप विशेष महत्त्व के हैं- उन पर गंभीरता से चिन्तन करें।

(अ) प्रायश्चित्त जैन विचारधारा का एक प्रमुख सूत्र है। इसके साथ क्षमा का भी गहरा संबंध है।

खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भुएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।

खामेमि सव्वे जीवा- सब जीवों को मैं क्षमा करता हूँ। अतः सर्वप्रथम मैं द्वेष भावना को छोड़ रहा हूँ। अन्य व्यक्तियों की क्रिया अथवा प्रतिक्रियावश मेरा अहं जागृत हुआ- फलित हुई द्वेष भावना। मैं उस भावना का विसर्जन करता हूँ। अहं का विलय कर सभी जीवों को क्षमा देता हूँ। कल के दिन मेरा द्वेष किस- किस पर बढ़ा- चिन्तन करें और उन सबको हृदय से क्षमा करें। गत वर्ष में मैंने इस द्वेष भावना को कितना बढ़ाया है, चिंतन करें। अपेक्षा की पूर्ति न होना, अहं ममकार को प्रश्रय देता है। अपेक्षा अपने व्यक्ति से अधिक होता है। पिता-पुत्र,स्त्री-बन्धु एवं उनके संबंधी आदि पहली श्रेणी में आते हैं। व्यवसाय एवं समाज के व्यक्ति दूसरी श्रेणी में। तीसरी श्रेणी बनती है- अपने अन्य जान पहिचार के व्यक्ति की, राष्ट्र से संबंधित व्यक्ति की। चौथी श्रेणी सभी प्राणियों की मानी जा सकती है। क्रमशः इन सभी श्रेणियों पर भावनात्मक विचार कर उनको क्षमा प्रदान करें। द्वेष की भावना के विसर्जन से अहं की भावना पर अपने आप चोट होगी, ऋजुता आने लगेगी।

सव्वे जीवा खमंतु मे- सभी जीव मुझे क्षमा करें। अपने ममकार का विसर्जन करते हुए- उपर्युक्त रीति से ही सभी प्राणियों को श्रेणियों में बाटंकर चिन्तन करते हुए क्षमायाचना करें, व्यक्तिशः क्षमायाचना एवं क्षमा देना, करना चाहिए।

मित्ती मे सव्व भुएसु- सभी जीव मेरे मित्र हैं। मैत्री भावना को बढ़ावें। मैत्री भावना- अहिंसा का पोषण करती है। दया के भाव को उजागर करती है।

वेरं मज्झं न केणई- मेरा कोई शत्रु नहीं है। यह अभय की भावना को पुष्ट करती है।

प्रायश्चित्त- तीन भागों में विभक्त होता है-1.आलोचना 2.निन्दा 3. गर्हा।

आलोचना से ऋजुता आती है। निंदा से अकृत्य के प्रति पश्चात्ताप और गर्हा से अहंकार का विलय होता है।

खामेमि के इस सूत्र पर उपर्युक्त तरीके से 5 मिनट का चिन्तन किया जावे तो हमारा ऋजुता का मार्ग निश्चित प्रशस्त होगा।

प्रायश्चित्त का संबंध (बाह्य तप) शारीरिक तप अनशन से भी है। अतः भाव शुद्धि के साथ-साथ स्थूल शरीर की क्रिया को अनशन के व्यावहारिक रूप से जोड़ें- प्रायश्चित्त में पूर्णता आ जायेगी।

(आ) *विनय तप-* यह दूसरा आन्तरिक तप है। विनय के भाव पर चिन्तन करें। विनय से क्रोध उपशम होता है। ममकार नष्ट होता है। श्रद्धा की उपलब्धि होती है और श्रद्धा-भक्ति की ओर बढाती है। विनय के मर्म पर 2 मिनट चिन्तन करें।

किसी भी प्रकार से विनय में खण्डना हुई हो तो बाह्य तप-अवमौदर्य पर चिन्तन करें एवं उसे व्यवहार में लाने का निश्चय करें। अवमौदर्य से शरीर स्वस्थ रहता है। शरीर की स्वस्थता-मन को स्वस्थ रखती है। मन के शुद्ध विचार विनय की भावना को पुष्ट करते हैं। विनय की भावना में आए हुए दोष के परिष्कार के लिये खाद्य संयम का सहारा लेते हुए अवमौदर्य तप को क्रियान्वित करने का संकल्प करें। विनय की भावना पुष्ट होती नजर आयेगी। श्रद्धा और भक्ति का मार्ग प्रशस्त होगा।

(इ) *वैयावृत्त्य-* सेवा का भाव-करुणा का भाव-अनुकम्पा का भाव इस श्रेणी में आते हैं। कृपा भाव, मैत्री भाव, माध्यस्थ भाव और शल्य रहित वृत्ति अनुकम्पा है, जो अहिंसा की जननी कही जा सकती है। धर्मानुकम्पा- धर्म के आराधक साधु-संतों की सेवा करना, सेवा की भावना रखना-उनकी धार्मिक आराधना में सहयोग करना इस श्रेणी में आता है। यह धर्म अनुराग को बढ़ाता है।

इस तप-निर्जरा का संबंध-भिक्षा चर्या अथवा वृत्ति संक्षेप से है। वृत्ति संक्षेप के महत्त्व पर विचार कर वैयावृत्त्य भावना को पुष्ट करें जागृत करें।

(ई) *स्वाध्याय-* चौथा आंतरिक तप 'स्वाध्याय' है। स्वाध्याय पर अथवा स्वाध्याय के बिन्दुओं पर पुनः पुनः विचार करें। स्वाध्याय से-ज्ञान पुष्ट होता है, दर्शन सम्यक् होने लगता है, मिथ्यात्व नष्ट होता है। कर्म के पहलुओं का अध्ययन करें। उसके मर्म को समझें। चिन्तन करें- मैं अपने कर्मों का कर्त्ता हूँ, हर्ता हूँ और भोक्ता भी हूँ। सम्यक् दर्शन के विभिन्न पहलुओं पर चिन्तन करें।

बाह्य तप- रस परित्याग का संबंध स्वाध्याय से है, अतः स्वाध्याय की पुष्टि रस परित्याग के निश्चय से करें। मार्ग अपने आप प्रशस्त होगा।

(उ) *ध्यान-* पाँचवाँ आंतरिक तप 'ध्यान' है। एकनिष्ठ होकर अपने विचारों को विराम देते हुए कुछ समय के लिये ध्यान करें। कायोत्सर्ग की मुद्रा में किया जाने वाला ध्यान मन को बांधकर रख सकता है, भटकने से रोक सकता है।

ध्यान का संबंध कायक्लेश नामक बाह्यतप से है। शरीर का पुष्ट रहना, संवेदना का कम होना, ध्यान के लिए आवश्यक है। कायक्लेश को शरीर को कष्ट देना न समझें बल्कि शारीरिक शक्ति, सहन शक्ति बढ़ाने का साधन समझें जो ध्यान के लिए जरूरी है। 'सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु' पर चिन्तन करते हुए ध्यान किया जा सकता है।

(ऊ) व्युत्सर्ग (कायोत्सर्ग)–शरीर को शिथिल करना है। व्युत्सर्ग में शरीर के साथ-साथ मन को उपशान्त रखना होता है। मन को नियन्त्रित रखना कठिन है– असंभव नहीं। मन के इधर–उधर भागते ही उसे वापिस केन्द्रित करें। वर्तमान में आप क्या कर रहे है, इस पर विचार कर मन को वर्तमान में केन्द्रित करें।

व्युत्सर्ग का संबंध प्रतिसंलीनता से है, जो एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। अतः इन्द्रियों को अन्तर्मुखी करें। व्युत्सर्ग सधने लग जायेगा। प्रतिसंलीनता बढ़ने लगेगी।

इस प्रकार 6 बाह्य तप– एवं 6 आंतरिक तपों का विश्लेषण करते हुए अपने मन को केन्द्रित करें। उपर्युक्त विचार का मन्थन निश्चित रूप से विचारों में परिवर्तन लायेगा।

सूक्ष्म शरीर तक पहुंचने के उपर्युक्त मार्ग का आलम्बन नित्य प्रति सामायिक में किया जावे तो सम भावना अवश्य पुष्ट होगी।

सामायिक में अनुप्रेक्षा का उपयोग- तप के साथ–साथ कुछ समय के लिए अनुप्रेक्षा करें। अनुप्रेक्षा 12 प्रकार की बताई गई हैं।उन पर अवश्य विचार करें–

(अ) अनित्यानुप्रेक्षा- शरीर, धन, स्त्री, पुत्र, पौत्र आदि सभी अनित्य हैं। कोई भी पदार्थ नित्य नहीं हो सकता। ये सब पौद्गलिक हैं, जो निश्चित ही परिवर्तनशील हैं। आत्मा अविनाशी है, अनन्त सुख-स्वभाव वाली है। आत्मा के ज्ञानोपयोग और दर्शनोपयोग के सिवाय इस संसार में कोई भी पदार्थ ध्रुव नहीं हैं। अतः अनित्य पदार्थों को अधिक महत्त्व नहीं दिया जा सकता। आत्मा के पौरुष को जगाना है। अनित्य की भावना पर कुछ समय के लिये तल्लीनता से विचार करें।

(आ) अन्यत्वानुप्रेक्षा- आत्मा और शरीर भिन्न हैं। शरीर पौद्गलिक है, जबकि चैतन्य अमूर्त है। बंध रूप से शरीर एवं आत्मा एक होते हुए भी लक्षण रूप में ये भिन्न हैं।

आत्मा भिन्न है, शरीर भिन्न है। अतः शरीर भी जब अपना नहीं तो पुत्र, पत्नी, धन, यौवन–यह अपना कैसे हो सकता है। यह विचार वैराग्य भावना को बढाते हैं। लौकिक आकर्षण कम करते हैं। परिणाम स्वरूप राग-द्वेष की भावना नियन्त्रित होती है।

(इ) अशरणानुप्रेक्षा– आत्मा के अलावा मेरी रक्षा कोई नहीं कर सकता। मंत्र, औषध, परिवारजन, अर्थ कोई भी मुझे मरने से नहीं रोक सकते। वे कष्ट को कुछ समय के लिए कम करने में निमित्त बन सकते हैं। उन्हें पूर्णतया नष्ट नहीं कर सकते।

इसी प्रकार अन्य अनुप्रेक्षायें–अशुचि, आस्रव, संवर, निर्जरा, एकत्व, धर्म, बोधि दुर्लभ, लोक एवं संसार पर भी चिंतन-मनन करना चाहिए।

इस प्रकार 12 प्रकार की निर्जरा एवं 12 ही प्रकार की अनुप्रेक्षाओं पर गंभीर चिन्तन किया जावे तो निश्चित रूप से वैराग्य भावना पुष्ट होगी। उद्वेग उपशांत होंगे। जीवन में ऋजुता आयेगी। आत्मिक-सुख का अनुभव होगा। अहिंसा का चिन्तन भी बहुत महत्त्व रखता है। सिर्फ मारना हिंसा नहीं हैं। किसी भी प्रकार से, किसी भी जीव को कष्ट पहुंचाना हिंसा है।

सत्य को भी ऐकान्तिक दृष्टि से न देखें। वह सत्य जो दूसरे को कष्टप्रद हो– असत्य बन जाता है, कर्म बंधन का हेतु बन जाता है।

ज्ञान, दर्शन और चारित्र अनन्त है। अनन्त को व्याख्यायित नहीं किया जा सकता, सिर्फ अनुभव किया जा सकता है। दृष्टि के सम्यक् बनने पर सम्यग्ज्ञान एवं चारित्र की सम्यक्ता का अनुभव हो जाएगा।

सामायिक में यदि उपर्युक्त बिन्दुओं पर विचार किया जावे, चिन्तन किया जावे तो सामायिक–सम की उपासना हो जायेगी, हम मंजिल तक पहुंच पायेंगे। नित्य प्रतिदिन की जाने वाली सामायिक, वृत्तियों का शोधन करते हुए हमें नैतिकता को जीन में उतारने में उपयोगी होगी। सूक्ष्म तक पहुंचने का माध्यम बन जायेगी हमारी सामायिक।

-5, Charles Campbell Road, Cox town
Bangalore-560005 (Karnataka)

शांति की खोज

भंडारी सरदारचन्द जैन

धर्म क्या है? एक जिज्ञासु ने पूछा, तो उत्तर मिला– स्वभाव में रहना यानी आत्म स्वभाव में रहना धर्म है।

तत्त्व जिज्ञासु ने फिर दूसरा प्रश्न पूछा कि शांति कैसे प्राप्त हो तो उत्तर में समाधान देते हुए ज्ञानी भगवंतों ने फरमाया कि शांति की खोज, व्यक्ति को स्वयं के भीतर करनी चाहिए। ऐसा करने से वह क्रोध, मान, माया, लोभ इन चार कषायों पर धीरे–धीरे आत्म चिन्तन करते-करते विजय प्राप्त कर सकता हे।

जिस मार्ग से जीवन में असंगति–विषमता का वातावरण निर्मित होता है, उस मार्ग को त्याग कर, व्यक्ति को आग्रह मुक्त होकर शांतिमय जीवन जीना चाहिए, सदैव प्रसन्नचित्त रहना चाहिए।

व्यक्ति को यदि जीवन में निश्चित रूप से शांति प्राप्त करनी हो तो उसे आतुरता अवश्य छोड़ देनी चाहिए, क्योंकि आकुलता एवं आतुरता से ही तो व्याकुलता बढ़ती है। कहने का आशय यह है कि किसी भी तरह की आतुरता ही तो अशांति की जड़ है और इससे बचना, दूर रहना तथा छोड़ना ही तो अक्षय शांति प्राप्त करना है। धर्म और शांति की खोज कहीं बाहर नहीं स्वयं के भीतर से ही प्राप्त करना है, प्रकट करना है।

–त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर (राज.)

उपयोग या उपभोग

श्रीमती विमला जोटा

उपभोक्ता संस्कृति में सभी भोगोपभोग की सामग्री जुटाने एवं आवश्यकता से अधिक उसका संग्रह करने में लगे हैं। वस्तु का उपयोग बुरा नहीं, किन्तु उसका आसक्तिपूर्ण भोग या उपभोग बुरा है। उसका अनावश्यक आकर्षण, संग्रह-परिग्रह भी त्याज्य है। यही इस लेख का प्रतिपाद्य है।—सम्पादक

साधनों या वस्तुओं का उपयोग बुरा नहीं, भोग-उपभोग बुरा है। संसार में प्रत्येक वस्तु का या तो विवेकपूर्ण उपयोग हो सकता है या फिर भोग-उपभोग। जिस वस्तु की हमें बिल्कुल आवश्यकता नहीं है या जिसके बिना भी हमारा निर्वाह हो सकता है, फिर भी हम उन वस्तुओं के पीछे भागते रहते हैं, यह हमारी भोग की प्रवृत्ति है। कितना अमूल्य समय इन आकर्षण युक्त और चमचमाहट भरी वस्तुओं के पीछे गवाँ देते है। इस तरह हम अपनी आंतरिक और बाहरी शक्तियों का अपव्यय करते रहते हैं।

आज जहाँ देखो वहीं अधिकांश स्त्री-पुरुष भौतिक साधनों के पीछे दौड़ रहे है। कई घरों में अनावश्यक वस्तुओं और फर्नीचरों का अम्बार लगा हुआ है। चारों तरफ बिखराव ही बिखराव छाया रहता है तो कई घरों में बैठने की चटाई भी नसीब नहीं होती है। इतनी असंतुलित व्यवस्था है हमारे समाज में, जो बिल्कुल असहनीय लगती है। कहीं पेट भर भोजन भी नसीब नहीं और कहीं भोजन का इतना बिगाड़ है कि देखा नहीं जाता है। यह उपयोग नहीं उपभोग है।

संसार के साधन इतने बढ़ गये हैं कि कुछ कहते नहीं बनता है। अपने चेहरे को सजाने के लिये कितने ही गंदे प्रसाधनों का प्रयोग हो रहा है। लगता है कि मानव का भीतरी सौन्दर्य एकदम फीका पड़ गया है। भीतरी लालिमा लुप्त हो गई है, इसीलिये बाहरी प्रदर्शन के लिये कृत्रिम साधनों का सहारा लेना पड़ता है।

आत्मा के सौन्दर्य को गौण करके शारीरिक सौदर्य द्वारा व्यक्ति अपना व्यक्तित्व निखारने की होड़ में लगा हुआ है। लेकिन आत्मा के सौन्दर्य की जो आभा और कान्ति हमारे चेहरे को जितना पुलकित और तेजोमय रख सकती है वह लाख बाहरी साधनों से कभी भी प्राप्त नहीं की जा सकती है। आज पूरे भारत में इतने ब्यूटी पार्लर खुल गये हैं कि जिनकी गिनती ही नहीं है। ऐसा लगता है कि आज मनुष्य के जीने का लक्ष्य मुख्यतः शरीर तक रह गया है। केवलमात्र शरीर को सजाना, खिलाना, पिलाना, भोगी बनाना, होटलबाजी करना या नाटक, सिनेमा द्वारा कामुक वृत्तियों को पोषण देना ही उसका लक्ष्य रह गया है। इससे आत्मा पर निरन्तर पाप का आवरण जमता जा रहा है।

इस भोग, उपभोग और अति परिग्रह से हमारा आत्मा का बल एवं ज्ञान शून्य होते जा रहे हैं। समझ में नहीं आता है कि कहां खो गया है हमारा उपयोग और

विवेक। कहां खो गया है संयम और तपोमय चरित्र और कहां खो गई है हमारी सम्यक् श्रद्धा। आज सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र एवं सम्यक् तप के स्थान पर अन्धविश्वास, आडम्बर, दम्भ, छल, कपट, लोभ तथा वासना तीव्रता से बढ़ रहे है। यह हमारे अद्यःपतन का कारण है।

जिस सात्त्विक और शुद्ध भोजन से हमारा शारीरिक और मानसिक विकास होता है तथा प्रज्ञा जागृत होती है, वह भोजन आज केवल मात्र रसास्वाद के लिये खाया जा रहा है। इसलिये तो फास्ट फूड का प्रचलन बड़ी तीव्रता से बढ़ रहा है।

आज बड़े घरों की महिलाएँ तो पैसे के बल पर ही जी रही हैं। वे इतनी आलसी और बहिर्मुखी हो गई हैं कि कोई भी गृहकार्य करने को तैयार नहीं है। भोजन बनाना स्त्री जाति की सबसे सुन्दर कला है, वह उसे भूलकर बाहर के होटल के तैयार भोजन नौकरों द्वारा परोसवाकर, अपने कर्त्तव्य की पूर्ति करना चाहती है। कितनी लज्जास्पद स्थिति हो गई है नारी जीवन की। यह है हमारी शारीरिक और मानसिक प्रभुता जो हमारे जीवन को बर्बादी की राह पर ले जा रही है। हमारा जीवन उपयोगी न बन कर उपभोगी बनता जा रहा है।

जो जीवन हमें अमृत पिला सकता है, वहीं जीवन अब जहर उगल रहा है। जो जीवन गंगा की तरह पावन बन सकता है, वही अब गटर की तरह मैला होता जा रहा है और जो जीवन मोक्षगामी बन सकता है वही नरकगामी बन रहा है। इन सबके पीछे उपभोगी वृत्तियाँ ही काम कर रही हैं। उपभोग से रिक्तता बनी ही रहती है और संतोष की डकार कभी नहीं आ सकती है। भौतिक पदार्थों की लालसा ने हमें प्यासा का प्यासा ही बना रखा है यह प्यास कभी नहीं बुझती है।

अपने भोगों को तृप्त करने के लिये मानव निदंनीय और घृणित कार्य करने लगता है। जिससे हमारे देश में अनैतिकता और अराजकता फैल रही है। पैसे के लिये मानव मानव के खून का प्यासा होता जा रहा है। खून के संबंध ही खूनी बनते जा रहे हैं। प्रेम के संबंध घृणा में बदलते जा रहे हैं। वीतराग वाणी की बजाय राग-द्वेष की जड़ें गहरी होती जा रही हैं। मानसिक और शारीरिक रोग बढ़ते जा रहे हैं। जहाँ देखो वहीं मनुष्य अशांति से घिरा हुआ है और परस्पर शिकायत करता हुआ अपना समय व्यतीत कर रहा है। इस भोगवृत्ति के कारण मनुष्य अपरिग्रह के सिद्धान्त को भूल कर परिग्रह के मोह में फंसता जा रहा है।

हम यह अच्छी तरह से जानते हैं कि आवश्यकता से अधिक संग्रह करना हिंसा है, समाज विरोधी तत्त्व है, फिर भी हम अपनी तृष्णा, लालसा और कामनाओं को काबू में नहीं रख पा रहे है। लेकिन जीवन को मधुरिम, शान्त, तनाव रहित बनाने के लिये हमें भोग की नहीं उपयोग की रीति को समझना होगा तथा उपभोगी नहीं उपयोगी बनना होगा।

आइए हम सब मिलकर यह प्रतिज्ञा करें कि हमें जितनी आवश्यकता हो,

उतने सीमित साधनों से जीवनयापन करेंगे, दूसरों की नकल नहीं करेंगे। यदि इस प्रकार अपना जीवन उपयोगी बनायेंगे तो निःसंदेह यह अमूल्य मानव जीवन दूसरों को जिलाने में मददगार बनेगा, परोपकारी बनेगा। हम इहलोक और परलोक में पूर्ण शान्ति को प्राप्त कर सकेंगे।

–जे–1, पामस्प्रिंग, कफ परेड़, मुम्बई–5

अहिंसा का विस्तार : शान्ति का हेतु

श्रीमती सुधा भंसाली

हिंसा का प्रारम्भिक बिन्दु है– दूसरे जीवों के अस्तित्व को न स्वीकारना। पदार्थ के अस्तित्व को न स्वीकारना। छोटे से छोटे जीव व छोटे से छोटे पदार्थ. परमाणु तक के अस्तित्व को स्वीकारना चाहिये। अपने अस्तित्व की भांति दूसरों के अस्तित्व का भी सम्मान करना चाहिये। भगवान महावीर का सिद्धान्त है कि जितना स्वार्थ बढ़ेगा उतनी ही क्रूरता बढ़ेगी। स्वार्थ जितना सीमित होगा, उतनी ही करुणा बढ़ेगी। स्वार्थ से ऊपर उठकर ही हम करुणा का विस्तार कर सकते हैं। स्वार्थ की भावना भी हिंसा को बढ़ाने का कारण है। आदमी अपने स्वार्थ के लिये अपने ही लोगों को ठग लेता है, अनैतिक आचरण कर लेता है। आज लोगों की इच्छाएँ बढ़ती जा रही हैं जिनका कभी अन्त नहीं आता। जिसको भी देखो टेन्शन में जी रहा है। मनुष्य पदार्थों में ही सुख को खोजता है, पर उसको सुख.चैन कहाँ मिलता है। उसको यह पता नहीं कि हमारे अन्दर सुख का भण्डार भरा पड़ा है।

जिस दिन व्यक्ति अपने आपको गहराई से देखने लग जायेगा चारों तरफ सुख ही सुख नजर आयेगा। सुख पाने के लिये इच्छाओं की सीमा करके आध्यात्मिकता से जुड़ना होगा। जीवनवृत्ति में अनासक्ति, विचारों में अनाग्रह और आचरण में अहिंसा यही साधना का वास्तविक स्वरूप है। अहिंसा विश्वव्यापी सिद्धान्त है। इसमें किसी एक जाति,धर्म व देश के प्राणियों के हित की बात नहीं कही गयी, सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों को जीने का अधिकार प्रदान किया गया है।

मानवीय सम्बन्धों में उदार दृष्टिकोण का विकास होना चाहिये। अहिंसा वास्तव में नारा ही नहीं, यह जीवन जीने की शैली है। हम सबसे पहले स्वयं से ही अहिंसा की शुरुआत करें। हम प्रामाणिक बनें,नैतिक बनें, सबको अपने समान समझें, अनेकान्त दृष्टि से सोचें, दूसरों के गुणों को खोजने की प्रवृत्ति रखें। व्यक्ति अगर नैतिक बन गया तो समाज में स्वतः ही प्रामाणिकता आ जायेगी। नैतिकता व प्रामाणिकता दोनों ही गुण होंगे तो विश्व स्तर पर अपने आप ही शांति आ जायेगी। कभी भी हिंसा का जवाब हिंसा से नहीं देना चाहिये, इससे समस्या और बढ़ेगी। आर्थिक क्षेत्र, धार्मिक क्षेत्र व राजनैतिक क्षेत्र तीनों में नैतिकता व प्रामाणिकता के गुणों का विकास हो जाये तो धरती पर स्वतः ही स्वर्ग उतर आयेगा।

309-अक्षरदीप काम्पलेक्स, पांचवी बी-रोड सरदारपुरा जोधपुर-342003

जिनशासन

श्री प्रकाशचन्द जैन 'दास'

अरिहंत प्रभु ने अर्थ रूप उपदेश जो जग को दिया।
सम्यक् विधि से गणधरों ने उसको था ग्रथित किया।।
तत्त्व से परिपूर्ण जिसका सिन्धु सम विस्तार है।
भक्ति सहित श्रुत ज्ञान को वन्दन मेरा बहुबार है।।
अरिहन्त मुख निकसित वचन जो शुद्ध सर्व प्रकार से।
सर्व दोषों से रहित वे ज्ञात तथ्य विचार से।।
वे वचन आगम कहे जाते हैं जग व्यवहार में।
करते प्रकट वे हीं वचन तत्त्वार्थ को संसार में।।
लीन जिसमें जगत् के प्राणी हैं हो जाते जभी।
पार इस संसार सागर को हैं कर पाते तभी।।
सर्व जीवों का शरण आधार जो निशदिन रहे।
भण्डार वह समृद्धि का चिरकाल जिनशासन रहे।।
यह विषय सुख का विरेचन नित्य करता जिनवचन।
जन्म एवं जरा मरण व्याधि का कर लेता हरण।।
सब दुःखों का नाश करता सौख्यप्रद है सर्वदा।
दिव्य औषध विश्व में कल्याणकर जीवन सुधा।।
अनुरक्त रहते जिनवचन में जो हैं मानव सर्वदा।
सद्भाव से आचरण भी उन पर रहें करते सदा।।
निर्मल हो उनकी भावना दुःख-क्लेष भी उनके टरें।
वे अल्प संसारी बनें आवागमन सीमित करें।।
हे वीतराग! जगत् गुरु! प्रभु! आप के प्रभाव से।
वैराग्य जग से हो मुझे निष्पक्ष समता भाव से।।
मुक्ति पथ का अनुसरण भी हो तुम्हारी शरण से।
इष्ट फल मुझ को मिलें भगवन्! तेरे अनुकरण से।।
मत मतान्तर कथित बहु दर्शन का जिसको ज्ञान है।
गम्भीर है कल्याणकारी सौम्य दीप्ति मान है।।
शत-शत गुणों से युक्त निर्गन्थ अविकारी वही।
तत्त्व के प्रवचन का केवल है अधिकारी वही।।
पर के लिये व्यवहार इच्छा वह ही केवल कीजिये।
चाह रहे हैं अन्य जन से आप जो अपने लिये।।
व्यवहार जो निज के प्रति नहीं आपको स्वीकार है।
पर के लिये चाहो न जिनशासन का यह ही सार है।।

—12 सी.डी., आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ (उ.प्र.)

जणगणमन अधिनायक.....

राष्ट्रगान का यह मूलपाठ सन् 1911 ई. में नोबल पुरस्कार विजेता महाकवि गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कलकत्ता में स्वयं गाया था। इस गान में जैनों का भारतवर्ष के स्वतन्त्र समुदाय के रूप में स्पष्ट उल्लेख है। इसे अभी उच्चतम न्यायालय में 11 सदस्यीय फुलबेंच के समक्ष भी जैनों के अल्पसंख्यक होने के प्रमाणस्वरूप गाकर प्रस्तुत किया गया है। माननीय न्यायाधीशों ने दत्तचित्त होकर इसे सुना और माना है। –सम्पादक

जनगणमन–अधिनायक जय हे भारत- भाग्य- विधाता!
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा-द्राविड- उत्कल- बंग।
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा उच्छल-जलधितरंग।।
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगणमंगलदायक जय हे भारत भाग्य विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।।1।।,

अहरह तव आह्वान प्रचारित, सुनि तव उदार वाणी
हिन्दू बौद्ध सिख ***जैन*** पारसिक मुसलमान खृष्टानी
पूरब पश्चिम आसे, तव सिंहासन पासे,
प्रेमहार हय गाथा।।
जन गण ऐक्य विधायक जय हे भारत- भाग्य- विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय-जय-जय-जय हे।।2।।

पतन अभ्युदय बंधुर पंथा, युग युग धावित यात्री।
हे चिर सारथि! तव रथचक्रे मुखरित पथ दिन रात्रि।।
दारुण विप्लव माझे तव शंख ध्वनि बाजे,
संकट दुःख त्राता।।
जन गण पथ परिचायक जय हे भारत भाग्य विधाता!
जन गण मंगलदायक जय हे भारत भाग्य विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।।3।।

घोर-तिमिर-घन-निविड-निशीथे पीड़ित मूर्छित देशे।
जाग्रत छिल तव अविचल मंगल नतनयने अनिमेषे।।
दुःस्वप्ने आतंके रक्षा करिले अंके,
स्नेहमयी तुमि माता।।
जनगण दुःख-त्रायक जय हे भारत भाग्य विधाता!

जन-गण-मंगलदायक जय हे भारत-भाग्य-विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।।4।।

रात्रि प्रभातिल, उदिल रविच्छवि पूर्व उदयगिरिभाले।
गाहे विहंगम, पुण्य समीरण नव-जीवनरस ढाले।
तव करुणारुण-रागे निद्रित भारत जागे
तव चरणे तन माथा।।
जय जय जय हे, जय राजेश्वर भारत-भाग्य-विधाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे।।5।।

—(रवीन्द्र रचनावली, पृष्ठ 194, प्रकाशन—पश्चिम बंगाल सरकार, प्रकाशन तिथि 25 वैशाख 1368 बंगला वर्ष) सन् 1911 कलकत्ता में प्रथम बार स्वयं कवीन्द्र रवीन्द्र ने गाया था।

—प्रेषक : डॉ. सुदीप जैन, दिल्ली

बोध कथा

मूल्यवान कौन?

प्रकाश गुन्देचा

रत्न राशि एक कोनें में बैठी थी तथा पीसने की चक्की दूसरे कोने में।

चूंकि रत्न राशि कीमती होती है और पीसने की चक्की का रत्न राशि के सामने कोई विशेष मूल्य नहीं होता है, अतः रत्न राशि को घमण्ड सा आ गया, वह पीसने की चक्की से बोली—

''मैं रानियों के कण्ठ और जौहरियों की तिजोरियों में सजधज के रहती हूँ और तुम दिन रात पिसती रहती हो।''

चक्की ने कहा—''नसीब अपना अपना! पर यह तो बताएँ कि आप कितनों की आजीविका का साधन बनती हो और कितनों का पेट भरती हो? मेरा तो काम ही लोगों की आजीविका का साधन बनना व लोगों का पेट भरना है।''

रत्न राशि निरुत्तर हो गई।

वास्तव में उपयोगिता उसी की है जो लोगों के काम आये न कि उसकी जो मात्र दिखावटी रूप में पड़ें रहें, फिर वे चाहे कितने ही मूल्यवान क्यों न हो। व्यक्ति यदि अमीर होकर भी समाज के काम नहीं आता तो उसका अमीरपन किस काम का? जबकि गरीब व्यक्ति भी यदि समाज के लोगों के काम आता है तो सही मायने में वह उपयोगी है। वही मूल्यवान है।

—श्याम भवन, जालोरी गेट के अन्दर, जोधपुर

मम्मी! तुम डायन हो

श्री नवलसिंह जैन 'नवीन'

लड़के की चाह में माता-पिता में अपनी ही लड़की.संतति का गर्भपात कराने की प्रवृत्ति आज बहुत साधारण बात हो गई है। समाज में आज अधिक सन्तान होना अच्छा नहीं माना जाता। इसलिए सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पुत्र की अभिलाषा के कारण स्त्रीभ्रूण की हत्या करने के लिए भी माता-पिता तैयार रहते हैं। इसी पर प्रस्तुत एकांकी में तीखा कटाक्ष किया गया है। –सम्पादक

पात्र परिचय

विक्रम –चालीस वर्षीय नौकरीपेशा।
चंद्रा – विक्रम की पत्नी।
विजया – विक्रम की बड़ी बहन।
रूपा – विक्रम की षोडशी पुत्री।
दीपा – विक्रम की बारह वर्षीया पुत्री।
नेहा – विक्रम की छः वर्षीया पुत्री।

(बैठक कक्ष, सामने की दीवार पर भगवान महावीर की बड़ी तस्वीर टंगी है। आधुनिक साज.सज्जा, लम्बे सोफे पर चन्द्रा औंधा मुँह किये लेटी है। विक्रम छोटे सोफे पर लिफाफा हाथ में लिए उदासी की मुद्रा में बैठा है।)

विक्रम– (लिफाफा टेबल पर पटकते हुए) शिट् यार..........फिर लड़की... शायद हमारे भाग्य में लड़का है ही नहीं....(गहरी श्वास लेते हुए) चंद्रा! ओ चन्द्रा! तुम रो रही हो? (झंझोड़ते हुए) तुम पागल तो नहीं हो गई हो? (सोफे के हत्थे पर बैठ जाता है)

चन्द्रा– (करुण स्वर में) विक्रम! आई डोंट वांट गर्ल अगेन.....मैं चौथी लड़की नहीं चाहती....(जोर-जोर से रोने लगती है)

विक्रम– (चन्द्रा के बालों में हाथ फिराते हुए) बी नार्मल...डोंट वीप....प्लीज.. चन्द्रा..

चन्द्रा– (विक्रम का हाथ माथे से हटाते हुए, गुस्से में चीखते हुए) तुम नहीं समझोगे विक्रम मेरी पीड़ा को....पहले ही तीन.तीन लड़कियाँ होने की जिल्लत को सहन कर रही हूँ मैं....चौथी भी हो गई तो सोसायटी में मेरी नाक ही कट जाएगी....मेरा जीना हराम हो जाएगा....मैं घर से बाहर भी नहीं निकल पाऊँगी।

विक्रम– चन्द्रा! इस बार ऐसा कुछ नहीं होगा। चौथी लड़की की नौबत नहीं आने दूँगा। मैंने पिछली बार भी तो कहा था निकाल फेंको इस कचरे को बाहर..

चन्द्रा– (झल्लाते हुए) मैं क्या कर सकती थी? तुम्हीं को तो माँ की इजाजत की पड़ी थी। मानवता, धर्म, अहिंसा, मातृत्व न जाने किन-किन बातों का

वास्ता दे-देकर माँ ने हमें रोक लिया था और फिर तुमने आज्ञाकारी पुत्र की तरह माँ का जरा भी प्रतिकार नहीं किया था।

विक्रम— प्रतिकार किया होता तो तुम्हारे गले में ये सोने का हार नहीं होता, हाथों में चूड़िया नहीं होतीं, समझी।

चन्द्रा— तो फिर क्यों कह रहे हो कि मैंने तुम्हें......

विक्रम— ओ.के., ओ.के. चन्द्रा, बस अब किस बात का झगड़ा है? अब तो माँ भी नहीं है हमें रोकने वाली। कल ही चलते हैं क्लीनिक और...

चन्द्रा— ओ विक्रम, तुम कितने अच्छे हो सचमुच...काश तुमने पहले भी ऐसा किया होता।

विक्रम— अब भूल भी जाओ पुरानी बातों को। चलो उठो! जल्दी से एक कप चाय बनाकर लाओ, सिर में जोर का दर्द हो रहा है।

चन्द्रा— (सोफे से उठते हुए) अभी लाती हूँ तुम्हारे लिये गरमागरम चाय।

(दरवाजे की घण्टी बजती है, विक्रम दरवाजा खोलता है। रूपा, दीपा, नेहा का बेग उठाये प्रवेश। तीनों एक साथ चिल्लाती हैं– डैडी!....नेहा विक्रम की टांगों से लिपट जाती है, विक्रम उसे दूर हटाने का प्रयास करता है। रूपा और दीपा सोफे पर बैठ जाती हैं, रूपा टेबल पर पड़े लिफाफे को गौर से पढ़ती है, विक्रम इससे अनभिज्ञ रहता है।)

दीपा— डैडी, आज आप ऑफिस नहीं गए? आज फिर आपका ब्लड प्रेशर हाई हो गया क्या?

विक्रम— अरे तुम तीन-तीन लड़कियों के होते हुए मेरा बी.पी. हाई नहीं होगा तो क्या होगा?

रूपा— (लिफाफे को टेबल पर रखते हुए) अब तो डैडी का बी.पी. और भी हाई हो जाएगा...हमारी चौथी बहन जो आने वाली है...

विक्रम— (गोद में बैठी नेहा को झटके से हटाते हुए)....त...त..तुम क्या बकवास कर रही हो, तुम्हें किसने बताया यह सब?

रूपा— (लिफाफा बताते हुए) इस अल्ट्रासोनिक रिपोर्ट ने! पर....डैडी, आप हमसे यह सब छुपाना क्यों चाहते हैं?

(विक्रम उठकर रूपा के चांटा लगा देता है। दीपा और नेहा भौंचक्की होकर देखती रह जाती हैं)

विक्रम— गेट आउट....बदतमीज कहीं की! डेमफुल! रबिश!

(तीनों लड़कियाँ उठकर अंदर चली जाती हैं। तभी चन्द्रा चाय लिए प्रविष्ट होती है)

चन्द्रा— क्या हुआ विक्रम? इतना शोर क्यों मचा रखा है?

विक्रम— तुमने तीनों की आदत बिगाड़ रखी है। स्कूल से आते ही अपने कमरे में नहीं जाकर दौड़ी चली आती हैं यहां पर...

चन्द्रा— बस इतनी.सी बात थी! और तुमने....

विक्रम— तुम्हारी लाडली ने यह रिपोर्ट पढ़ ली है और खुशी के मारे चिल्ला रही है कि हमारी चौथी बहन आने वाली है।

चन्द्रा— ओ गॉड! तुम्हें किसने कहा था इसे बाहर रखने के लिए, स्टुपिड कहीं के। तुम्हें मालूम है अब क्या होगा? आज दीदी आने वाली है। रूपा, दीदी को सारी बात बता देगी और फिर...

विक्रम— और फिर क्या? दीदी के रोकने से मैं रुक जाऊँगा?

(घंटी बजती है, दोनों चौंक पड़ते हैं, विक्रम उठकर दरवाजा खोलता है। विजया हाथ में बैग लेकर प्रवेश करती है। विक्रम और चन्द्रा विजया को प्रणाम करते हैं)

विजया— खुश रहो..(सोफे पर बैठते हुए) आज घर में सन्नाटा क्यों छा रहा है? कहां गई वे तीनों? अभी तक स्कूल से नहीं आई क्या?

चन्द्रा— नहीं, यहीं हैं तीनों, आवाज लगाती हूँ। रूपा, ओ रूपा, तुम्हारी बुआजी आई हैं।

(दीपा और नेहा भागकर आती हैं और बुआ से लिपट जाती हैं। रूपा मुँह लटकाए दूर ही खड़ी रहती है)

नेहा— बुआ यू आर जस्ट लाइक दादी जी।

विजया— तुम वहाँ मुँह लटकाये क्यों खड़ी हो रूपा? (आँखों में आंसू बहाते हुए बुआ से लिपट जाती है) क्या हो गया है तुम्हें, रो क्यों रही हो, कुछ तो बोलो?

दीपा— बुआ जी दीदी ने पापा का लिफाफा पढ़ लिया तो पापा ने इसे चांटा मारा। दीदी कहती है कि हमारे एक बहन और आने वाली है।

चन्द्रा— दीदी, आप भी क्या इनको लेकर बैठ गई हो।चलो तुम तीनों!चलो यहाँ से।

विजया— तुम मुझसे कुछ छुपाने का प्रयास क्यों कर रही हो? क्या तुम सचमुच माँ बनने वाली हो?

चन्द्रा— हां, यह सच है कि मेरी कोख में लड़की है, पर मैं इस बार...

विजया— क्या होगा इस बार, तुम चुप क्यों हो गई?

विक्रम— दीदी, हमें अब और लड़की नहीं चाहिये।

विजया— नहीं चाहिये का मतलब?

विक्रम— दीदी, आप समझती क्यों नहीं हो? चन्द्रा चाहती है कि अबोर्शन करवा लें।

(विजया और रूपा के मुंह से निकलता है ''अबोर्शन''। दीपा और नेहा उनका मुँह देखती हैं)

विजया— (क्रोधित स्वर में) तुम्हारा दिमाग तो खराब नहीं हो गया है? इस घर में ऐसी घृणित बात करते तुम्हें शर्म नहीं आई?

चन्द्रा— इस घर में रहने की ही तो सजा है कि हम तीन-तीन लड़कियों का बोझ ढो रहे हैं।

रूपा— मम्मी, व्हाट डू यू मीन, बोझा ढो रहे हैं? क्या माँ.बाप अपने बच्चों का पालन नहीं करते हैं? लड़कियाँ होने का मतलब यह नहीं है कि आप हमें बोझ समझें।

विक्रम— तुम्हारी जबान बहुत चलने लगी है आजकल। तुम तीनों अन्दर जाओ। सुना नहीं तुमने!

(तीनों लड़कियाँ अन्दर चली जाती हैं)

विजया— वाह! विक्रम वाह! माँ और पिताजी ने तुम्हें यही संस्कार दिये थे। अच्छा हुआ जो भगवान ने उन्हें उठा लिया, वरना....

चन्द्रा— वरना, हम बरबाद हो गए होते।

विजया— (क्रोधित स्वर में) भाभी, अपनी जबान को लगाम दो। अपने देवता समान सास-श्वसुर के बारे में ऐसी बात कहते तुम्हें शर्म नहीं आती है। आज पिताजी का ही पुण्य प्रताप है जो तुम.....

चन्द्रा— हाँ, बोलो, क्या किया तुम्हारे पिताजी ने, हमें टूटा-फूटा मकान और अनुकम्पा-नियुक्ति। मेरे पिताजी ने इनको बिजनस लाइन नहीं दी होती तो आप आज इस बंगले में नहीं बैठी होतीं।

विजया— तुम्हारे इस बंगले से तो वह टूटा-फूटा मकान लाख गुना अच्छा था। घर नहीं, भगवान का मन्दिर था। वहां असीम शान्ति थी, माँ की ममता थी, पिताजी का प्यार था। यह तुम्हारा बंगला तो जेलखाना है, पूरा जेलखाना, जहाँ न हँस सकते हैं, न बोल सकते हैं। बच्चों के लिए न तो यहाँ माँ की ममता है, न ही पिता का प्यार है। बच्चों के मस्तिष्क में चिन्ता है, डर है, तनाव है, और तो और, अपने ही गर्भ की हत्या करके तुम इस घर को बूचड़खाना बना रहे हो, बूचड़खाना।

विक्रम— दीदी तुम कुछ भी कहलो, हम इस बार अबोर्शन करवाने से नहीं रुक सकते। यह हमारा अन्तिम फैसला है।

विजया— मुझे लगता है कि पिताजी ने जो संस्कार तुम्हें दिये थे, वो तुम खो चुके हो। तुम्हारी संवेदनाएँ मर चुकी हैं।

विक्रम— दीदी, संस्कार और धर्म की बातें किताबों में ही अच्छी लगती हैं वास्तविकता के धरातल पर ये सब बिल्कुल व्यर्थ हैं। दीदी, यह मॉडर्न जमाना है। आज व्यक्ति को सैद्धान्तिक नहीं, अपितु प्रेक्टिकल होना पड़ता है। तभी आदमी जमाने की दौड़ में आगे निकल सकता है।

विजया— आगे बढ़कर तुम्हें कहाँ जाना है? इस तरह तो तुम विकास की ओर नहीं अपितु विनाश की ओर बढ़ रहे हो, समझे। तुम्हें मॉडर्न ही बनना है तो विचारों से बनो, अपने विचारों में उदारता लाओ, होठों पर लिपिस्टिक और गले में टाई बाँध लेने से कोई मॉडर्न नहीं बन जाता है। 21वीं सदी में

लड़के की लालसा में अपनी संतान की हत्या करके तुम खुद को मॉडर्न बता रहे हो। जिस घर में अपनी ही संतान की हत्या हो उस घर में मैं एक मिनट भी नहीं ठहर सकती (बाहर जाने का उपक्रम करती है)।

रूपा— बुआ, आप हमें छोड़कर कहाँ जा रही हो? ये लोग हमारी अजन्मी बहन को मारने की योजना बना रहे हैं। अपने सिर का बोझ कम करने के लिए ये हमें भी मार सकते हैं। बुआ, अब हमें इस घर में डर लगने लगा है, प्लीज! आप हमें भी साथ ले चलो।

(तीनों दरवाजे तक पहुँच जाती हैं)

चन्द्रा— तुम तीनों कहीं नहीं जाओगी। विक्रम इन्हें रोको।

विक्रम— कहाँ जा रही हो तुम! सुना नहीं, तुम्हारी मम्मी क्या कह रही है?

रूपा— डैडी, आज माँ हमें माँ नहीं डायन लग रही है। जो अपने ही बच्चों को मार डालने की बात सोच ले, वह माँ कैसे हो सकती है? माँ भक्षण नहीं, रक्षण करती है रक्षण।

चन्द्रा— क्या कहा, मैं डायन हूँ?

रूपा— हाँ हाँ मम्मी, तुम डायन हो। तुम डायन हो।

चन्द्रा— (जोर-जोर से चीखती है) गेट आउट।

(तीनों लड़कियाँ और विजया दरवाजे से बाहर हो जाती है। चन्द्रा जोर से दरवाजा बन्द कर देती है। चन्द्रा पागलों की तरह चीखती है। विक्रम मूक होकर उसे देखता है।)

चन्द्रा— विक्रम! सुना तुमने, रूपा ने मुझे डायन कहा। क्या मैं सचमुच डायन हूँ? (लड़खड़ाती हुई आवाज में) ये आवाज कहाँ से आ रही है? विक्रम तुम्हें कुछ सुनाई दे रहा है? अरे....अरे.....यह आवाज तो मेरे पेट से आ रही है। सुनो विक्रम, हमारी बच्ची क्या कह रही है– ''मम्मी तुम डायन हो'', पर यह.. कैसे हो सकता है....जन्म के पहले कोई कैसे बोल सकता है?

(कानों पर हाथ रखकर चिल्लाती है)

हाँ.हाँ मैं डायन हूँ, क्योंकि म..म..मैंने इस समाज में इज्जत से जीने के लिए अपनी ही बेटी को मारना चाहा है? क्या यह समाज डायन नहीं है जो पुत्रविहीन माता को हेय समझता है? पुत्र को महत्त्व देकर कितनी माँओं को डायन बनने के लिए प्रेरित करता है?

म..भ..मैं डायन नहीं बनना चाहती। अब मुझे समाज की चिन्ता नहीं है। अपनी प्रेस्टिज की चिन्ता नहीं हैं। मुझे चिन्ता है अपने मातृत्व की.. मैं अपनी कोख में पल रही बच्ची को जन्म दूँगी.. हाँ, मैं जन्म दूंगी.. .फिर मेरी बेटी मुझे नहीं कह सकेगी कि–''मम्मी तुम डायन हो''(पर्दा गिरता है)

-अधीक्षक, श्री जयमल्ल जैन छात्रावास,
मेड़ता शहर, जिला- नागौर (राज.)

महामन्त्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्म्य

श्री जशकरण डागा

नवकार मंत्र से नव पद- परमेष्ठी के पांच पदों के साथ अन्त में चार पद जोड़ने से नवपद होते हैं। ये चार पद एवं उनके गुण इस प्रकार हैं– 1. णमो दंसणस्स (67 गुण), 2. णमो णाणस्स (51 गुण) 3. णमो चारित्तस्स (70गुण) 4. णमो तवस्स (50 गुण)। इस प्रकार से इन चार पदों के 238 गुण व 26 अक्षर कहे हैं तथा परमेष्ठी के 108 गुण व 68 अक्षर हैं। दोनों के मिलाने से नव पद के कुल 346 गुण व 94 अक्षर होते हैं। इस नवपद के प्रथम पाँच पद साधक व सिद्धि की भूमिका के तथा अंतिम चार पद साधना के सूचक हैं तथा ज्ञानादि को नमस्कार कर गुण पूजा के महत्त्व को दर्शाते हैं। इस नव पद की बड़ी महिमा गरिमा है। जिस प्रकार समस्त सिद्धियां, आत्मा में रही हुई हैं, उसी प्रकार नव पद की ऋद्धियां भी, आत्मा में रही हुई हैं, जो सभी इस नव पद के आराधन से उद्भूत होती हैं। (श्रीमद् राजचन्द्र) जीवन में आध्यात्म धर्म विकसित करने के लिए नवपद की आराधना श्रेष्ठतम है।

णमोकार महामंत्र पाप रूपी पर्वत को भेदने के लिए वज्र के समान, कर्म रूपी वन को भस्म करने के लिए दावानल, दुःखरूपी बादलों को बिखेरने के लिए, प्रचण्ड पवन, मोह रूपी दावानल को शान्त करने के लिए महामेघ के समान है तथा कल्याण रूपी बेल का उत्कृष्ट बीज और सम्यक्त्व रूपी रत्न के उत्पन्न होने के लिए रोहणाचल धरती के समान है।

नवकार में चौदह नकार (न) हैं। ये 'नकार' चौदह पूर्व रूपी श्रुत के सार की प्रतीति कराते हैं। इस नमस्कार मंत्र में बारह अकार (अ) हैं, वे बारह अंगवाणी को इंगित करते हैं। नमस्कार मंत्र में नौ ण कार (ण) हैं, वे नवनिधियों को बताते हैं। नमस्कार के पाँच 'नकार' (न) पाँच ज्ञान को, तीन 'सकार' (स) तीन लोक को, तीन 'हकार' (ह) आदि, मध्य एवं अंत मंगल को, दो 'चकार' (च) देश चारित्र व सर्व चारित्र को, दो 'ककार' (क) दो प्रकार के घाती–अघाती कर्मों को, पाँच 'पकार' (प) पाँच परमेष्ठी को, तीन 'रकार' (र) रत्नत्रय को, तीन 'मकार' (म) तीन योगों एवं उनके निग्रह को, दो 'गकार' (ग) गुरु एवं परम गुरु को, दो 'एकार' (ए), सप्तम स्वर होने से सात राजू ऊर्ध्व एवं सात राजू अधो, अर्थात चौदह राजू लोक को सूचित करते हैं।

मूल मंत्र के चौबीस गुरु अक्षर, चौबीस तीर्थंकर रूपी परम गुरुओं एवं ग्यारह लघु अक्षर, वर्तमान तीर्थपति भगवान महावीर के ग्यारह गणधर एवं परम श्रुत के धारक रूप महान् गुरुओं को भी परिलक्षित करते हैं। (पंन्यासप्रवर श्री भद्रंकरविजय जी गणिवर्य, जिनवाणी, जनवरी 2000)

–डागा सदन, संघपुरा मोहल्ला, टोंक (राज.)

उत्तराध्ययन सूत्र : छत्तीसवाँ अध्ययन

प्रो. चाँदमल कर्णावट

उत्तराध्ययन सूत्र के 36वें जीवाजीव-विभक्ति अध्ययन की 268 गाथाओं में जीव-अजीव का पृथक्करण करके दोनों तत्त्वों का सांगोपांग वर्णन किया गया है। जीव-अजीव का संयोग संसार है और इनका पृथक्करण या भेद विज्ञान ही मोक्ष है। इस भेदविज्ञान का प्रतिपादन करना ही इस अध्ययन का उद्देश्य है। साधक जीव-अजीव के सम्यक् ज्ञान से ही संयम.साधना में प्रवृत्त हो सकता है।

इसी दृष्टि से अध्ययन के आरम्भ में अजीव का निरूपण किया गया है और तदनन्तर जीव का। इसमें भी पहले सिद्ध स्वरूप का पश्चात् संसारी जीव का। अन्त में आराधक दशा पाने हेतु समाधिमरण के बाधक.साधक तत्त्वों का प्रतिपादन किया गया है।

अध्ययन की गाथा 1 में बताया गया है कि जीवाजीव के विभाग को जानकर ही श्रमण सम्यक् प्रकार से संयम में यत्नवान होता है।

लोकालोक का स्वरूप (गाथा2.3)– जीव-अजीव द्रव्यों की अपेक्षा से यह लोक जीव-अजीव-रूप कहा गया है। जहाँ अधर्मास्तिकाय आदि अजीव द्रव्यों के 5 भेदों में से केवल आकाश ही है, वह अलोक है। जीव-अजीव दोनों का द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव से भी निरूपण किया गया है।

अजीव निरूपण- अध्ययन की गाथा 4 से 9 पर्यंत अजीव के रूपी अरूपी भेद बताकर फिर अरूपी.रूपी अजीव का विस्तृत वर्णन प्राप्त है। *अरूपी अजीव* के धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय एवं आकाशास्तिकाय के स्कन्ध, देश व प्रदेश और दसवां काल इस प्रकार 10 भेद किए गए। निर्विभाग होने से काल के स्कंधादि भेद नहीं होते। धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय तथा आकाशास्तिकाय के द्रव्य, क्षेत्र, काल एवं भाव का भी वर्णन यहाँ उपलब्ध है। यह सर्वज्ञों के पूर्ण ज्ञान का द्योतक है। इस दृष्टि से सर्वज्ञ या केवलज्ञानी विश्व के सबसे बड़े वैज्ञानिक कहे जा सकते हैं। *रूपी अजीव* के (गाथा 10 से 47) स्कंध, देश, प्रदेश एवं परमाणु के रूप में भेद हैं। परमाणु अविभाज्य होता है। ये सभी पुद्गल हैं, रूपी हैं, इनमें वर्ण, गंध, रस और स्पर्श पाये जाते हैं। जो बनते, बिखरते, नष्ट होते हैं, जिन्हें शरीर, आहार, इन्द्रिय, उपकरण रूप में ग्रहण करता है, वे पुद्गल हैं। ये रूपी अजीव पुद्गल प्रवाह की अपेक्षा अनादि काल और स्थिति विशेष से सादि सान्त हैं। इनमें वर्ण, गंध, रस व स्पर्श पाए जाते है तथा संस्थान को जोड़ने से व परस्पर गुणित करने से रूपी अजीव के 530 और अरूपी अजीव के उपर्युक्त 10, और धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय एवं काल के द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव एवं गुण (4x 5)ये 20 भेद, कुल 30 भेद हुए। ये सभी मिलाकर 560 भेद होते हैं।*(क्रमशः)*

चतुर्थ पुण्यतिथि (ज्येष्ठ कृष्णा 9) पर श्रद्धांजलि

सरलमना महासती राजमती जी

श्रीमती आनन्दकंवर मेहता

सरलमना महासती श्री राजमती जी म.सा. का जोधपुर में ज्येष्ठ कृष्णा नवमी संवत् 2055 दिनांक 20 मई 2002 को स्वर्गवास हो गया था। उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप उनकी सांसारिक ननद श्रीमती आनन्दकंवर जी मेहता ने यह लेख प्रेषित किया है। *–सम्पादक*

मेरे पिताजी स्व. श्री गणेशमल सा कुम्भट (जोधपुर निवासी) के ज्येष्ठ पुत्र स्व. श्री विजयमल जी कुम्भट की धर्मपत्नी राजुल कंवर कुंभट गृहस्थ जीवन में भी बहुत धार्मिक प्रवृत्ति की थी। उनके पीहर एवं ससुराल पक्ष में सभी सदस्य पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमल जी म.सा. के पक्के भक्त थे। भाई साहब विजयमल जी कुंभट ने ही 'जिनवाणी' पत्रिका का जोधपुर नगर से प्रकाशन प्रारम्भ किया था। वे एक सच्चे समाज सेवक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

मेरी भाभीजी श्रीमती राजुल कुंभट ने 37 वर्ष की आयु में ही आजीवन शीलव्रत धारण कर लिया था। वैवाहिक जीवन के दौरान ही उन्होंने बहुत तपस्या की थी। दो वर्षीतप, 24 तीर्थंकरों के कल्याणक पर उपवास, पक्षवासा के उपवास, मौन एकादशी के उपवास, पूरे वर्ष पंचमी, अष्टमी, चतुर्दशी के उपवास, तेला, अठाई, आयंबिल, ओली एवं प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण करती थीं। नंदीसूत्र, दशवैकालिक सूत्र, अंतगड़ सूत्र, कल्पसूत्र का नियमित अध्ययन करती थे। दीक्षा ग्रहण करने से पहले चार-पाँच वर्षों तक नंगे पांव चलते थीं। जहाँ-जहाँ आचार्य भगवन्त चौमासा करते वहाँ-वहाँ वे भी साथ-साथ रहकर धर्म आराधना करतीथीं। इस सबके बावजूद वे घर में मेरे माता-पिता(उनके सास-ससुर) की सेवा में भी कभी पीछे नहीं रहती थीं। दैनिक गृहकार्यों व बच्चों की जिम्मेदारी से कभी मुँह नहीं मोड़ा।

मेरे भाई साहब के देवलोक होने के बाद उनके मन में वैराग्य जागृत हो गया। अपने तीन सुपुत्रों का मोह भी त्याग कर उन्होंने महासती बदनकंवर जी म.सा. के सम्मुख दीक्षा के भाव प्रकट कर दिये। अपनी दृढ़ इच्छा शक्ति एवं पूज्य गुरुदेव के प्रति अटूट श्रद्धा के आगे तीनों पुत्रों श्री अर्जुनमल कुम्भट, श्री राजेन्द्रमल कुम्भट एवं श्री सुरेन्द्रमल कुंभट को झुकना पड़ा एवं फाल्गुन शुक्ला 12 संवत् 2033, बुधवार 2 मार्च 1977 को साध्वी प्रमुखा प्रवर्तिनी श्री बदनकंवर जी म.सा. की शिष्या बनी।

राजमती जी म.सा. की दीक्षा जोधपुर के सरदार स्कूल प्रांगण में आचार्य भगवन्त की उपस्थिति में सम्पन्न हुई। दीक्षा के उपरान्त कुछ वर्ष तक तो स्वास्थ्य ठीक रहा, जिससे उन्होंने संवत् 2034 का चौमासा अजीत में तथा संवत् 2035 का चातुर्मास इन्दौर में किया। उसके उपरान्त उनका स्वास्थ्य निरन्तर गिरता गया। अतः वे लगभग स्थायी रूप से घोड़ों का चौक, जोधपुर में प्रवास करने लगी एवं अंतिम समय में पावटा,जोधपुर के उपाश्रय में ज्येष्ठ कृष्णा 9 संवत्2055 को दिनांक

20 मई 1998 सागारी संथारा ग्रहण किया और उसी दिन सायं 5 बजे उनका इस संसार सागर से महाप्रयाण हो गया।

मैंने राजमती जी म.सा. से सन् 1985 में शीलव्रत व बारह व्रत अंगीकार किये। उनका सरल स्वभाव व सादगीपूर्ण जीवन मेरे लिए सदैव प्रेरणा का स्रोत रहा। उनको भुला पाना असंभव सा ही है। मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि!

-प्लाट नं. 33, छायादीप कॉलोनी (प्रथम), महेशनगर, जयपुर

क्रमशः (3)

अहिंसाणुव्रत : वध अतिचार

श्री लालचन्द्र जैन

कुणाल देश के संवर गांव में वरुण नामक ब्राह्मण रहता था। दिवाकर गुरु से प्रतिबोधित होकर वह दीक्षा लेने को तत्पर हुआ, किन्तु क्रोधी स्वभाव का होने से गुरु ने उसे दीक्षा न देकर श्रावक के पाँच अणुव्रत ग्रहण करवा कर श्रावक बना लिया। एक दिन पिता के श्राद्ध के लिए घाइल नामक वणिक ने उसे अपने घर भोजन के लिए बुलाया। अन्य ब्राह्मणों के साथ वरुण भी बनिये के घर पहुँच गया और सबके साथ भोजन की पंगत में बैठ गया।

ब्राह्मणों ने वरुण को अपनी पंगत में बैठने से रोका और कहा- ''यह विधर्मी है, क्योंकि इसने श्रावक धर्म स्वीकार किया है।''

वरुण बोला, ''आप से तो श्रावक अधिक गुण वाले होते हैं। जो किसी को नहीं मारते, झूठ नहीं बोलते, चोरी नहीं करते, परस्त्री की मन से भी इच्छा नहीं करते और भयंकर आरम्भ-परिग्रह से नित्य दूर रहते हैं, यदि ऐसे लोगों को निंदनीय समझेंगे तो किसे धर्म वाला समझा जाय?''

'''वायव्य दिशा में गाय को मारो', 'श्रोत्रिय ब्राह्मण के आतिथ्य के लिये मोटे बैल या बकरे को मारो' इत्यादि कल्पित वेद वाक्यों से गाय या बैल को मारने से भी नहीं हिचकिचाते, ऐसे तुम तो चांडालों से भी गये बीते हो। तुम्हारी पंगत से बाहर भोजन करने से मेरा क्या बिगड़ने वाला है?'' इत्यादि कटूक्तियों से वरुण ने ब्राह्मणों की बहुत भर्त्सना की। सामने से ब्राह्मण भी अनाप.शनाप बकने लगे। वरुण को गुस्सा आ गया, वह लकड़ी लेकर एक ठिंगणे ब्राह्मण को जो बहुत बक.बक कर रहा था, मारने लगा। मारते.मारते जब उस ब्राह्मण के प्राण कंठ तक आ गये तब लोगों ने बड़ी मुश्किल से उसे छुड़ाया।

यद्यपि वह ब्राह्मण मरा तो नहीं, पर अधमरा अवश्य हो गया और उस वरुण श्रावक को अपने पहले अणुव्रत का वध नामक दूसरा अतिचार लग गया।

—10/595, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर

जिनवाणी के 'जैनागम-साहित्य विशेषांक पर प्राप्त पत्र'

जिनवाणी का आगम विशेषांक मिला। आपने भगीरथ प्रयास से यह विशेषांक प्रकाशित किया है, जो बेजोड़ है। मैं नहीं समझता कि ऐसा और कोई विशेषांक अथवा ग्रंथ है, मेरी दृष्टि में तो नहीं। यह आपकी मेधा, कुशलता, कार्यक्षमता, विद्वत्ता के साथ-साथ धर्मनिष्ठा, गुरुभक्ति और लगन का सुफल है। यों भी मैं आपका सदैव साधुवाद करता हूँ।

आगम विशेषांक एक ऐतिहासिक दस्तावेज है। मुझे दुःख है कि मैं इस अनुष्ठान में अपना योगदान नहीं दे सका। कारण अस्वस्थता, पैर की हड्डी का टूटना, उदर विकार और फिर निःसंगता और एकाकीपन का अभिशप्त जीवन। आगम विशेषांक को पढ़ा, पढ़ रहा हूँ। यत्र-तत्र उसके आलेखों ने आकृष्ट किया। स्थानांग (4.3) में कहा है-

अट्ठकरे णामं एगे णो माणकरे
माणकरे णामं एगे णो अट्ठकरे
एगे अट्ठकरे वि माणकरे वि
एगे णो अट्ठे णो माण करे

आपके लिए तो यही प्रमाण है कि आप धर्मसेवा का महत्त्वपूर्ण कार्य करके भी गर्व नहीं करते, यही तो प्रज्ञा है भाई!

दिनांक-10.5.2002 *-प्रो. कल्याणमल लोढ़ा, कोलकाता*

जिनवाणी कार्यालय द्वारा प्रेषित जिनवाणी का आगम विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक जिज्ञासु पाठकों के लिये पठनीय है। जैनागमों की सम्पूर्ण जानकारी को सारगर्भित रूप से आपने संजोया है। आपकी सम्पादन-कला के उच्च स्तर एवं सुज्ञ लेखकों के आलेखों के संकलन से यह विशेषांक अत्यन्त उपयोगी बन गया है। जैन समाज के लिये यह विशेषांक एक अमूल्य निधि एवं अक्षुण्ण धरोहर है। आपने कड़ी मेहनत, लगन व परिश्रम से विशेषांक को बहुउपयोगी बनाकर जिज्ञासु पाठकों के लिये जो सामग्री प्रस्तुत की, उसके लिये पाठक गण सदैव आपके आभारी रहेंगे। भविष्य में भी इसी प्रकार की सामग्री आप समाज को देते रहेंगे।

दिनांक-20.5.2002 *- सुमेरनाथ मोदी, जोधपुर*

जैनागम-साहित्य विशेषांक महत्त्वपूर्ण अति उपयोगी प्रकाशन है। सिर्फ हिन्दी जानने वाले प्रत्येक जैन व जैनेतर भाई-बहनों के लिये नियमित पढ़ने योग्य ग्रन्थ है। किस-किस सूत्र में क्या-क्या विषय है, इस पर संक्षेप में बहुत ढंग से लेखकों ने विवेचन किया है। एक बार पढ़ लिया है, पर यह तो प्रतिदिन पढ़ते रहने पर मेरे जैसे अल्पबुद्धि वाले के कुछ-कुछ समझ आ सकेगा। पर स्मरण-शक्ति इतनी कमजोर है कि पढ़ने पर समझ तो आता है, पर याद नहीं रहता। इस भागीरथ

प्रयत्न के लिए संस्थापक व मण्डल धन्यवाद के पात्र हैं।

दिनांक-२३.५.२००२ *-राजमल ओस्तवाल, जोधपुर*

जिनवाणी का 'जैनागम विशेषांक' देखने में आया। आपने डॉ. श्री नरेन्द्र भानावत जी के जिनवाणी के संपादन के स्तर को बनाये ही नहीं रखा, अपितु ऊँचा उठाया, यह प्रसन्नता की बात है। अन्य जैन पत्र-पत्रिकाओं के विशेषांकों की विशिष्टताओं-विशेषताओं से कम नहीं है।

दिनांक-१८.४.२००२ *-कन्हैयालाल लोढ़ा, जयपुर*

हिन्दी मासिक 'जिनवाणी' का जैनागम विशेषांक प्राप्त कर, पढ़ कर अत्यन्त हर्ष हुआ। यह विशेषांक शास्त्रों का निचोड़, सारगर्भित, साहित्यिक तथा ऐतिहासिक दस्तावेज है। यह विशेषांक अनेकानेक जिज्ञासुओं की प्यास बुझाने में सक्षम है। सीधी, सरल, आत्मसात् करने योग्य भाषा, अर्थ, व्याख्या ने यह भावना प्रकट करने को विवश कर दिया है कि इस विशेषांक की कुछ प्रतियां राज्य के सूचना केन्द्रों, सार्वजनिक पुस्तकालयों, ग्रन्थालयों को भी उपलब्ध करायी जाय तो प्रकाशन का मन्तव्य सफल होगा। मैं इसका उपयोग 'तपोधन' मासिक पत्रिका में तथा अन्यत्र भी करना चाहूँगा जिससे जैनागमों के उद्देश्य, उपदेश, जीवन जीने की कला पर तीर्थंकरों आदि के मार्ग-दर्शन का अधिक से अधिक प्रचार-प्रसार किया जा सके। इस विषय पर आपकी अनुमति अपेक्षित है।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल से संबद्ध सभी सदस्यगणों सहित प्रकाशक श्री प्रकाशचन्द जी डागा, सम्पादक डॉ0 धर्मचन्द जी जैन इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं। मेरी भावभीनी बधाई स्वीकार करावें।

दिनांक-६.५.२००२ *- उमरावसिंह मारू, भीलवाड़ा*

मैं प्रतिदिन उड़ीक रहा था 'जिनवाणी' के लिये बड़ी बेसब्री से। परन्तु आज जैसे ही मेरे हाथ में जनवरी-फरवरी-मार्च और अप्रेल का संयुक्तांक विशेषांक 'जैनागम साहित्य' पर मिला, दिल बाग-बाग हो उठा, इसे देख कर। आपने जिस परिश्रम, लगन और सद्भावना से इतना पुरुषार्थ किया, वास्तव में यह एक कठिन कार्य था। अतः आपको जितना धन्यवाद दिया जावे उतना ही कम है। इस अंक में प्रकाशित सामग्री विशेषता को प्रदर्शित करती है और Reference purpose को सार्थक करती है। आगम पर जितना खुलासा करने का प्रयास किया वह प्रशंसनीय है और नई जानकारी को उजागर करता है।

दिनांक-१७.४.२००२ *- घेवरचन्द गोदीका, जयपुर*

कई दिनों से सोच रहा था कि नियमित रूप से प्रकाशित होने वाला पत्र 'जिनवाणी' 3-4 माह से प्रकाशित क्यों नहीं हो रहा है और इस संबंध में मैं आपको लिखने ही वाला था कि मेरे हाथ में जिनवाणी 'जैनागम विशेषांक' आया तो मेरी शंका का समाधान स्वतः ही हो गया।

चार अंकों का एक अंक प्रकाशित कर जिज्ञासु पाठकों को आगमों के

संबंध में जो जानकारी दी है वह बहुत ही प्रशंसनीय है। सरसरी तौर पर मैंने यह विशेषांक पढ़ा तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई कि आपने सभी आगमों की जानकारी देकर 'गागर में सागर' भर दिया है।

इस अंक के प्रकाशन में प्रबुद्ध लेखकों का योगदान तो बहुत बड़ा है, लेकिन प्राप्त लेखों को संकलित कर उनको व्यवस्थित रूप से प्रकाशित करने का काम सम्पादक का ही होता है और यह काम आप जैसे सम्पादक ने जिस निपुणता से किया है, उसके लिये आपको हार्दिक बधाई।

इस विशेषांक में आपने सभी मान्यता वालों की विचारधारा को महत्त्व दिया है और जिज्ञासु पाठकों को एक ही स्थान पर आगमों की सम्पूर्ण जानकारी एक साथ उपलब्ध कराने का जो प्रयास किया है वह प्रशंसनीय है।

अभी तक मेरी जानकारी में 11 अंग और 12 उपांग ही थे, परन्तु पहली बार मैं यह जान पाया हूँ कि 12 वां अंग 'दृष्टिवाद' भी था, जो विलुप्त हो गया है। स्थानकवासी जैन समाज के कई आचार्यों, उपाध्यायों एवं संत-मुनियों के सम्पर्क में कई वर्षों से रहा हूँ और आचार्य पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब स्वयं ने मुझे 10 वर्ष की उम्र में ही सामायिक सिखाई थी, परन्तु 'दृष्टिवाद 12 वां अंग है' यह आपके इस विशेषांक से ही जान पाया हूँ, जबकि मैंने अपने जीवन के 81 बसंत पूरे कर लिये है।

यह अंक संग्रहणीय पठनीय एवं मननीय है। आपके प्रयास की जितनी प्रशंसा की जावे उतनी कम होगी। पुनः आपको इस अंक के प्रकाशन के लिए बहुत बहुत हार्दिक बधाई।

दिनांक-५.५.२००२ *-माणकचन्द मारू, इन्दौर*

चार माह की लम्बी प्रतीक्षा के बाद जिनवाणी का जैनागम-साहित्य विशेषांक प्राप्त कर ऐसा आनंद मिला जैसे ग्रीष्म की भीषण तपन के पश्चात् वर्षा के आगमन का आनंद।

जिनवाणी जैन समाज की एक साठ वर्षीय पुरानी तत्त्वज्ञान परोसने वाली निरन्तर पठनीय पत्रिका रही है। इसके लेख सुधी स्वाध्यायियों को समय-समय पर अमृत बिन्दुओं से सिंचित करते रहे हैं।

इस विशेषांक ने एक ऐसा कार्य करके दिखाया है जो अभी तक अन्य कोई पत्रिका नहीं कर पाई है। शास्त्रों को पढ़ना सामान्य पाठक के लिए दुरुह कार्य है। आपने शास्त्रों पर सारगर्भित उपयोगिता प्रतिपादित करते हुए पाठक के मन में अनुराग उपजाया है। इतने अच्छे विशेषांक के संयोजन के लिए धन्यवाद, बधाई एवं आभार प्रदर्शन। सचमुच आप पाठकों के मनोनुकूल सामग्री प्रदान करने में सिद्धहस्त हैं।

दिनांक ७.५.२००२ *- लक्ष्मीचन्द जैन, छोटी कसरावद*

साहित्य समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन एवं बौद्ध योग: एक तुलनात्मक अध्ययन– *डॉ. सुधा जैन,* ***प्रकाशक***–*पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी. आई. रोड़, वाराणसी 221005, पृष्ठ 12+327, मूल्य 300 रुपये, प्रथम संस्करण 2001 ई.*

जैन एवं बौद्ध दोनों श्रमण-परम्परा के धर्म–दर्शन हैं। इनमें साधना एवं आचार पक्ष को लेकर कई बिन्दुओं पर समानता एवं कई बिन्दुओं पर मतभेद भी हैं। सुधा जैन ने अपने इस शोध ग्रन्थ को आठ अध्यायों में पूर्ण करते हुए बौद्ध एवं जैन धर्म की साधना-पद्धति एवं ध्यानविषयक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रथम अध्याय में भारतीय योग-परम्परा का परिचय देते हुए कहा गया है कि मोहनजोदड़ो में प्राप्त मुद्राएँ भारतीय योग–साधना की परम्परा की प्राचीनता की प्रमाण हैं। उन्होंने वेद, उपनिषद्, महाभारत, गीता, स्मृतिग्रन्थ, पुराण, योगवासिष्ठ, पातंजल योग में प्राप्त योगविद्या का संक्षिप्त परिचय दिया है। द्वितीय अध्याय में जैन एवं बौद्ध दर्शन के अनुसार योग-साधना का परिचय उपलब्ध है। तृतीय अध्याय में इन दोनों दर्शनों के योग-साहित्य की चर्चा है। चतुर्थ अध्याय में तत्त्वमीमांसीय आधार एवं पाँचवें अध्याय में योग-साधना के आचार पक्ष का निरूपण है। षष्ठ अध्याय में ध्यान की विशेष चर्चा की गई है। दोनों दर्शनों के प्रतिपादित ध्यान एवं उसके भेदों की चर्चा के अनन्तर विपश्यना एवं प्रेक्षाध्यान पर भी प्रकाश डाला गया है। सप्तम अध्याय में आध्यात्मिक विकास की भूमि गुणस्थान आदि का वर्णन है तथा अष्टम अध्याय में दोनों धर्मों के अनुसार बन्धन एवं मोक्ष की अवधारणा एवं प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है। फिर उपसंहार में दोनों दर्शनों की योग-साधना की संक्षिप्त चर्चा है तथा अन्त में विस्तृत संदर्भ ग्रन्थ सूची दी गई है।

ग्रन्थ का सम्पादन डॉ. विजयकुमार ने किया है। इस ग्रन्थ में न केवल बौद्ध एवं जैन धर्मों की योग परम्परा का परिचय है, अपितु दोनों की साधना-पद्धति का भी इसमें समावेश हो गया है। ग्रन्थ की अक्षर सज्जा एवं मुद्रण स्तरीय हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र : एक परिशीलन– *डॉ. सुदर्शनलाल जैन,* ***प्रकाशक***– *पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, करौंदी, वाराणसी–221005, पृष्ठ 20+504, मूल्य 300 रुपये, सन् 2001*

सन् 1970 में यह शोध प्रबंध हिन्दी में पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी से ही प्रकाशित हुआ था। इसकी उपयोगिता को देखते हुए प्रो. अरुण शान्तिलाल जोशी ने इसका गुजराती अनुवाद किया जो इसी संस्था से प्रकाश में आया है। ग्रन्थ में सर्वप्रथम जैन आगमों में उत्तराध्ययन सूत्र की चर्चा की गई है। फिर आठ प्रकरणों में

विषयवस्तु का प्रतिपादन है। प्रथम प्रकरण में लोक, जीव, द्रव्य, गुण एवं पर्याय की चर्चा है। द्वितीय अध्याय में संसार की दुःखरूपता, चार गति, कर्मबंध, कर्मभेद आदि का प्रतिपादन है। तृतीय अध्याय में रत्नत्रय एवं नव तत्त्व का निरूपण है। चतुर्थ प्रकरण में सामान्य साध्वाचार का तथा पंचम प्रकरण में विशेष साध्वाचार का वर्णन है। सामान्य साध्वाचार का तथा पंचम प्रकरण में विशेष साध्वाचार का वर्णन है। सामान्य साध्वाचार में पंच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ति, दश समाचारी का निरूपण है तथा विशेष साध्वाचार में तपश्चर्या, प्रतिमा, समाधिमरण का प्रतिपादन है। षष्ठ प्रकरण में मुक्ति की चर्चा है। सप्तम अध्याय समाज एवं संस्कृति से संबद्ध है। आठवें प्रकरण में उपसंहार है। ग्रन्थ के चार परिशिष्ट भी हैं– 1. कथा संवाद 2. विशिष्ट व्यक्ति 3. साध्वाचार संबंधी अन्य तथ्य 4. देश एवं नगर।

उत्तराध्ययन सूत्र के समग्र अनुशीलन हेतु ग्रन्थ की उपादेयता है। मुद्रण एवं अक्षर सज्जा सुन्दर है।

हीरा-प्रवचन पीयूष (प्रथम भाग)

प्रकाशक–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार जयपुर

प्रवचन प्रभाकर, आगमज्ञ, आचारनिष्ठ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. रत्नवंश के अष्टम पट्टधर हैं। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर द्वारा आपके 30 प्रवचनों का संकलन हीरा प्रवचन पीयूष भाग–1 में प्रकाशित किया गया है। आचार्यश्री की प्रवचन शैली ओजस्विता, स्पष्टता, निर्भीकता, हृदयस्पर्शिता आदि अनेक गुणों से सम्पन्न है। अपने प्रभावशाली प्रवचनों के लिए आपको वाणी का जादूगर कहा जाता है।

आपके प्रवचनों में असंस्कारित और असंयमी जीवन के प्रति पीड़ा प्रकट हुई है तथा निर्व्यसनता, सामायिक, स्वाध्याय, संयम, रात्रि भोजन त्याग और सत्संस्कारों के रक्षण की प्रेरणा की गई है। आचार्यप्रवर का इस बात पर बल है कि हमें शरीर, संपत्ति एवं सत्ता से अधिक मूल्यवान आत्मा को समझ कर उसके सम्यक् पोषण के लिए समुचित उपाय करना चाहिए।

आचार्यप्रवर के इन प्रवचनों में सम्यग्दर्शन, ज्ञान, आचरण, तप, संयम, दान, शील, भावना, क्षमा, अहिंसा, रात्रि-भोजन त्याग, संस्कार, विनय, आत्मानुशासन आदि अनेक तत्त्वों पर प्रकाश मिलता है।

पुस्तक श्री एस. प्यारेलाल जी कोठारी (खिंवसरा), चेन्नई के अर्थ सहयोग से प्रकाशित होने के कारण मात्र 15/– रुपये में उपलब्ध है। पुस्तक लगभग 300 पृष्ठों की है एवं प्लास्टिक कवर के साथ जिल्दबंध है।

यह पुस्तक पाठकों के चित्त को अध्यात्ममुखी बनाने के साथ उन्हें शान्ति, समता, सहिष्णुता और संयम के पथ पर बढ़ने में सहायक सिद्ध होगी। ■

मुक्त होना : सरलतम व कठिनतम

श्री कन्हैयालाल लोढा

उत्तराध्ययन सूत्र के बत्तीसवें अध्ययन 'प्रमाद-स्थान' के चिंतन से ऐसा ज्ञात होता है कि संसार में सबसे कठिनतम एवं सरलतम एक ही बात है और वह है– मुक्त होना। कठिनतम तो इसलिए है कि जो संसार से अर्थात् शरीर, इन्द्रिय, मन, वस्तु, व्यक्ति, परिस्थिति आदि से लेश मात्र भी सुख की आशा व अपेक्षा रखता है, वह मुक्त या बंधन रहित नहीं हो सकता। क्योंकि जिससे सुख की आशा की जाती है वह उससे जुड़ जाता है, बंध जाता है। अतः विषय सुख की लेश मात्र भी आशा रखते हुए मुक्त होना कदापि संभव नहीं है। मुक्त होना सरलतम इसलिए है कि यदि साधक विषय-भोगों की यथार्थता का अर्थात् उनकी क्षणभंगुरता, नश्वरता, असाता का अनुभव कर इनका सर्वांश में त्याग कर दे तो उसके स्वयं के लिए शरीर, इन्द्रिय, मन, धन-संपत्ति आदि संसार की, पौद्गलिक पदार्थों की आवश्यकता व उपयोगिता ही नहीं रहेगी। उसके लिए इन सबका होना या न होना समान हो जाता है, व्यर्थ हो जाता है। उसके लिए संसार में मनोज्ञ-अमनोज्ञ कुछ भी नहीं होता, जिससे राग-द्वेष, मोह, कामना, ममता, तादात्म्य, कषाय, क्रोध, मान, माया, लोभ, तृष्णा आदि किसी भी दोष-विकार की उत्पत्ति ही नहीं होती है। दोषों की उत्पत्ति नहीं होने से अभाव, चिन्ता, भय, पराधीनता, जड़ता, नीरसता, खिन्नता आदि समस्त दुःखों से मुक्ति हो जाती है। राग-द्वेष रहित होना ही वीतराग होना है। यही मुक्त होना है।

गुण तो जीव का स्वभाव होने से सभी को सदैव प्राप्त ही हैं। इनकी उत्पत्ति नहीं होती है, मात्र प्रकटीकरण होता है। गुण स्वभाव रूप होने से कभी नष्ट नहीं होते हैं। यदि स्वभाव व गुण नष्ट हो जाय तो वस्तु का ही अभाव हो जाय। दोष स्वतः पैदा नहीं होते हैं। दोषों को प्राणी विषय-सुखों की दासता में आबद्ध होकर स्वयं पैदा करता है। दोषों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है। यह नियम है कि जो पैदा होता है वह नष्ट होता है। राग, द्वेष, मोह, विषय-कषाय आदि दोष प्राणी के स्वयं के पैदा किए होने से उन दोषों को त्यागने का दायित्व स्वयं पर है। किसी भी दोष का त्याग करने के लिए किसी भी द्रव्य-वस्तु, क्षेत्र, देश, काल, नियति, प्रकृति आदि की अपेक्षा नहीं होती है। अतः दोषों का त्याग करने में मानव मात्र स्वाधीन व समर्थ है। मानव मात्र जिस क्षण चाहे उसी क्षण विषय.भोगों के सुख की निरर्थकता, नश्वरता के निजज्ञान का आदर करते हुए विषय-सुखों का त्याग कर राग-द्वेष रहित वीतराग एवं सब दुःखों से सदा के लिए मुक्त हो सकता है। दोषों को त्याग कर निर्दोष होना स्वभाव में स्थित होना है, मुक्त होना है।

यह नियम है कि जिसने विषय-भोगों के सुख का त्याग कर दिया, उसे

शरीर, इन्द्रिय, संसार की आवश्यकता व अपेक्षा नहीं रहती है। अतः वह इन सबसे परे-पार या पार हो जाता है अर्थात् वह देहातीत, इन्द्रियातीत, लोकातीत हो जाता है। जिसे जिस वस्तु की आवश्यकता नहीं है जिससे लेना-देना नहीं है, उसके लिए वह वस्तु अर्थहीन हो जाती है। फिर उससे संबंधित ज्ञान की आवश्यकता नहीं रहती है। जैसे जिस मकान की हमें आवश्यकता नहीं है, उस मकान का आकार-प्रकार कैसा है, किसने बनाया, कब बनाया, क्यों बनाया, कैसे बनाया, इसमें स्नान घर, रसोई घर आदि हैं या नहीं; सुंदर है या असुंदर है आदि कुछ भी जानने की आवश्यकता नहीं रहती है। इसी प्रकार मुक्तिगामी जीव को लोकातीत, देहातीत होना है। उसे लोकातीत होने से लोक का आकार-प्रकार कैसा है, इसे ईश्वर ने बनाया या प्रकृति ने बनाया या अन्य किसी ने बनाया, यह मिथ्या है या सत्य है, इसे कब बनाया, क्यों बनाया, कैसे बनाया, इसमें नरक, स्वर्ग है या नहीं है अथवा कितने हैं आदि के ज्ञान की किंचित् भी आवश्यकता नहीं रहती है। देहातीत होने से, देह की उत्पत्ति माता-पिता के रज-वीर्य के 46 गुणसूत्रों से हुई, देह के आकार-प्रकार, रंग-रूप, ध्वनि आदि का सर्जन इन गुणसूत्रों में विद्यमान आनुवंशिक गुणों से हुआ, अथवा किसी के शरीर से लिए गए ऊतकों से क्लोन की प्रक्रिया से हुई अथवा प्राकृतिक प्रक्रिया से हुई अथवा पूर्व जन्म के कर्मोदय से हुई। इन सब को जानने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है। इन सबको जानने की आवश्यकता तो जो शरीर और संसार से सुख चाहता है अर्थात् जुड़ा है, बंधा है, बंधा रहना चाहता है उसके लिए भले ही हो, साधकों के लिए नहीं है। इन्द्रिय, मन व बुद्धि से होने वाला ज्ञान सांसारिक वस्तुओं का ही होता है। अतः इस ज्ञान की आवश्यकता संसार से भोगों को, सुख के चाहने वाले भोगी जीव को होती है; वीतराग को, विरक्त को मतिज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है। निज स्वभाव का स्वतः प्राप्त स्वाभाविक ज्ञान श्रुतज्ञान है और वीतराग का श्रुतज्ञान अनुभव युक्त हाने से केवलज्ञान रूप हो जाता है, भरत चक्रवर्ती आदि महापुरुषों ने अनित्य आदि किसी एक भावना से संसार के सुखों को असार जानकर उनका त्याग कर वीतरागता व मुक्ति की प्राप्ति की है।

आशय यह है कि विषय-भोगों का सुखों का सर्वांश में त्यागी जीव इन्द्रियातीत, देहातीत, लोकातीत, वीतरागी हो जाता है। फिर उसे कुछ भी पाना शेष नहीं रहता है। वह आप्त-काम (आत्म संतुष्ट) हो जाता है। पाना शेष न रहने से करना व जानना शेष नहीं रहता है। करना शेष न रहने से वह कृत-कृत्य हो जाता है। जानना शेष नहीं रहने से उसे अशेष ज्ञान हो जाता है। अर्थात् वह सर्वज्ञ हो जाता है।

अभिप्राय यह है कि सर्व दुःखों से सदा के लिए आत्यन्तिक मुक्ति पाने के लिए राग, द्वेष, मोह, कषाय आदि दोषों से मुक्त होना होगा। दोषों से मुक्त होने के लिए विषय-भोगों के सुख का त्याग करना होगा जिसके जीवन में दोषों से मुक्ति का महत्त्व भोगों के साधनों–शरीर, इन्द्रिय तथा भोगों की सामग्री संसार की वस्तुओं से

अधिक हो जाता है, फिर उसे कुछ भी पाना, करना व जानना शेष नहीं रहता है। वह आत्मस्थ, कृतकृत्य व सर्वज्ञ हो जाता है। मानव मात्र विषय-भोगों के सुख को त्यागने में समर्थ व स्वाधीन है।

त्याग ही धर्म है। त्याग का फल ही मुक्ति है। मुक्त होने में ही मानव भव की सार्थकता तथा सफलता है। मानव भव पाकर भी मुक्ति से वंचित रहना भयंकर भूल है। अपना सर्वस्व नाश करना है। क्योंकि पुनः मानव भव पाना अत्यंत दुर्लभ है। अतः प्राप्त मानव भव में मुक्ति पाने के इस सुअवसर को खोने से बढ़कर अन्य कोई अज्ञान व प्रमाद नहीं है। यही इस अध्ययन का सार है। तात्पर्य यह है कि इस अत्यंत दुर्लभ मानव जीवन में विषय-भोग, राग, द्वेष, मोह से रहित न होना घोर प्रमाद, भूल व हानि है।

- ८२/१४१, मानसरोवर, जयपुर-३०२०२०

मनहूस चेहरा

आनन्दीराज धीसूलाल तलेसरा

एक व्यक्ति के बारे में मशहूर हो गया कि उसका चेहरा बहुत मनहूस है। लोगों ने उसके मनहूस होने की शिकायत राजा से की। राजा ने अपने लोगों की इस धारणा पर विश्वास नहीं किया, लेकिन इस बात की जाँच खुद करने का फैसला किया। राजा ने उस व्यक्ति को बुला कर अपने महल में रखा और एक सुबह स्वयं उसका मुख देखने पहुँचा। संयोग से व्यस्तता के कारण उस दिन राजा भोजन नहीं कर सका। वह इस नतीजे पर पहुँचा कि उस व्यक्ति का चेहरा सचमुच मनहूस है। उसने जल्लाद को बुलाकर उस व्यक्ति को मृत्युदण्ड देने का हुक्म सुना दिया। जब मंत्री ने राजा का यह हुक्म सुना तो उसने पूछा, 'महाराज इस निर्दोष को क्यों मृत्युदण्ड दे रहे हैं? राजा ने कहा, 'हे मंत्री! यह व्यक्ति वास्तव में मनहूस है। आज सर्वप्रथम मैंने इसका मुख देखा तो मुझे दिन भर भोजन भी नसीब नहीं हुआ।' इस पर मंत्री ने कहा, 'महाराज क्षमा करें, प्रातः इस व्यक्ति ने भी सर्वप्रथम आपका मुख देखा। आपको तो भोजन नहीं मिला, लेकिन आपके मुख दर्शन से तो इसे मृत्युदण्ड मिल रहा है। अब आप स्वयं निर्णय करें कि कौन अधिक मनहूस है।' राजा भौंचक्का रह गया। उसने इस दृष्टि से तो सोचा ही नहीं था। राजा को किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखकर मंत्री ने कहा, ''राजन्! किसी भी व्यक्ति का चेहरा मनहूस नहीं होता। मनहूसियत हमारे देखने या सोचने के ढंग में होती है। आप कृपा कर इस व्यक्ति को मुक्त कर दें। राजा ने उसे मुक्त कर दिया। उसे सही सलाह मिली।

-ई-२/१३, जलनिधि हाउसिंग सोसायटी
तीसरा माला, बांगुर नगर, गोरेगांव(पं.), मुम्बई-४०००९०

समाचार-संकलन

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं उनके आज्ञानुवर्ती सन्त-सतियों का विचरण विहार एवं संभावित विहार दिशाएँ

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 8 नासिक जिलान्तर्गत विभिन्न ग्राम–नगरों में ज्ञान–गंगा प्रवाहित करते हुए 10 मई को ठाणे जिलान्तर्गत भायन्दर पधारे। भायन्दर मुम्बई महानगर का प्रवेश द्वार है, श्रद्धालु श्रावक–श्राविकाओं ने भक्ति भावना से एवं उमंग-उल्लास के साथ रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का अपने आज्ञानुवर्ती संत–मुनिराजों के साथ प्रथम बार मुम्बई महानगर चातुर्मासार्थ पधारने पर हृदय की असीम आस्था के साथ सामायिक स्वाध्याय रूप धर्मसाधना के माध्यम से संकल्पित हो स्वागत–अभिनन्दन किया। भायन्दर (पश्चिम) में आचार्यप्रवर का छः दिन विराजना हुआ। तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया के पावन पुनीत प्रसंग पर देश के विभिन्न क्षेत्रों से आए तप–साधक आचार्यप्रवर एवं संत मुनिराजों की सन्निधि में प्रवचन श्रवण एवं मांगलिक श्रवण का लाभ लेकर भायन्दर (मुम्बई) श्री संघ के तत्त्वावधान में आयोजित तप पूर्णाहुति कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। निम्नांकित 34 तप–साधकों ने अपने पारिवारिक–परिजनों एवं इष्ट मित्रों के साथ भायन्दर (मुम्बई) श्री संघ के विशिष्ट श्रावकों एवं अखिल भारतीय श्री जैन रत्नहितैषी श्रावक संघ के पदाधिकारियों की सन्निधि में एकान्तर तप-साधना की पूर्णाहुति की–

1. श्रीमती जयश्रीबाई पारसमल जी सिंघवी, पाली-मारवाड़, 2. श्रीमती पारसकुंवरजी नेमीचन्द जी मूथा, पीपाड़ सिटी, 3. श्रीमती शांतिदेवी निहालचन्द जी भंडारी, पाली- मारवाड़, 4. श्रीमती कंचनदेवी सुमेरचन्द जी कांकरिया, भोपालगढ़, 5. श्रीमती पुष्पादेवी संपतराज जी रांका, भोपालगढ़, 6. श्रीमती उगमबाई रतनलाल जी बोथरा, जोधपुर, 7. श्रीमती खमाबाई मूलचन्द जी बांठिया, जोधपुर, 8. श्रीमती उगमकुंवर रतनलाल जी सिंघवी, जोधपुर 9. श्रीमती प्रेमकुंवर दिवानरूपचन्द जी भंडारी, जोधपुर, 10. श्री मूलचन्द जी सुगनचन्द जी लुणावत, जोधपुर, 11. श्रीमती मैनादेवी मूलचन्द जी लुणावत, जोधपुर, 12. श्रीमती बदामी देवी प्रेमचन्द जी जैन, जोधपुर, 13. श्रीमती शांतिदेवी शांतिलाल जी जैन, चौरू, 14. श्रीमती हरकी देवी महावीर प्रसाद जी जैन, सवाईमाधोपुर, 15. श्रीमती कैलाशदेवी शांतिलाल जी जैन, बजरिया, 16. श्रीमती उगमदेवी सौभागसिंह जी जैन, जयपुर, 17. श्रीमती प्रेमबाई नेमीचन्द जी सुराणा, धुलिया, 18. श्रीमती कमलाबाई चांदमल जी बंब, धुलिया, 19. श्रीमती चंचलबाई मोतीलाल जी लोढ़ा, धुलिया, 20. कु. राखी बरदीचन्द जी छाजेड़,

धुलिया, 21. श्रीमती नर्मदा भंवरलाल जी छाजेड़, धुलिया 22. श्रीमती माडीबाई जवरीलाल जी कांकरिया, सूरत, 23. श्रीमती बसंती देवी हस्तीमल जी सुराणा, कलकत्ता, 24. श्रीमती जयकुंवरबाई उत्तमचन्द जी पींचा, घोटी, 25. श्रीमती प्रसन्नबाई पन्नालाल जी चोरड़िया, घोटी, 26. श्रीमती लीलाबाई मोहनलाल जी धारीवाल, लासलगांव, 27. श्रीमती निर्मलाबाई मोहनलाल जी मूथा, लासूर स्टेशन 28. श्रीमती रूपकुंवर हरकचन्द जी बागरेचा, जलगांव, 29. श्रीमती नेविदीता गौतमचन्द जी सुराणा, नासिक, 30. श्रीमती ललिताबाई महावीरचन्द जी ललवाणी, चेन्नई, 31. श्री महावीरचन्द गुलाबचन्द जी ललवाणी, चेन्नई 32. श्रीमती विजया रामलाल जी देवड़ा, औरंगाबाद, 33. श्रीमती इचरजबाई कांतीलाल जी कोटेचा, औरंगाबाद, 34. श्री राजमल जी जैन(बेला- बेला पारणा), अलीगढ़ (टोंक)

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के प्रेरक प्रवचनामृत का पान कर अनेक श्रद्धालुओं ने कर्म काटने की रामबाण औषधि तप के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए नवीन व्रत प्रत्याख्यानों के नियम अंगीकार किए। भायन्दर (प.) क्षेत्र की आवास, भोजन, पारणक एवं मुम्बई महानगर के स्टेशनों से आगत बन्धुओं को लाने-ले जाने की व्यवस्था अत्यन्त सुन्दर रही।

मुम्बई महानगर के शीर्ष श्रावकों ने समय का भोग देकर स्वधर्मी वात्सल्य सेवा का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया, जिसकी सर्वत्र प्रशंसा सुनी जा रही है। सेवाभावी सुश्रावक श्री रतनराज जी भण्डारी की सेवाएं भुलाईनहीं जा सकतीं।

आचार्यप्रवर मुम्बई महानगर चातुर्मासार्थ पधारे हैं, विभिन्न उपनगरों की विनतियों को ध्यान में रखकर आचार्यप्रवर ने अधिक से अधिक क्षेत्रों को लाभ मिले इस भावना से विहार का क्रम चला रखा है। मीरा रोड़, दहीसर, बोरीवली, कांदिवली, मलाड़ आदि क्षेत्रों में विचरण से आबाल-वृद्ध सबमें गुरु हस्ती के सामायिक-स्वाध्याय संदेश के प्रति विशेष रूप से उत्साह जागृत हुआ। प्रतिदिन प्रवचन सभा में विशाल उपस्थिति और अधिकांश श्रावक-श्राविकाओं द्वारा सामायिक करके प्रवचन श्रवण करने का सुन्दर रूप देखकर सहज अनुमान होता है कि मुम्बई महानगर में ज्ञान-ध्यान, त्याग-तप, साधना-आराधना के क्षेत्र में नए आयाम उजागर होंगे।

आचार्यप्रवर का विचरण-विहार उपनगरों में सुख शांतिपूर्वक चल रहा है। सम्पर्क सूत्र- श्री विरेन्द्र जी जैन, 1301, पंचरत्न बिल्डिंग, ओपेरा हाउस, मुम्बई-400004, फोन नं. 3630320, मोबाइल-98206 31366

● परमश्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 3 की इगतपुरी में बड़ी दीक्षा के पश्चात् विहार से नासिक जिलान्तर्गत विभिन्न ग्राम-नगरों में आत्मार्थी, प्रबल पुरुषार्थी, शान्त-दान्त-गंभीर परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि

संत-मुनिराजों के प्रति सहज अनुराग से क्षेत्र फरसने की निरन्तर विनतियां चल रही हैं। निफाड़ क्षेत्र में संत समागम और सत्संग सेवा का सुयोग पाकर पूरे क्षेत्र में अपूर्व उत्साह है।

उपाध्यायप्रवर की प्रेरणा से धर्म स्थान में सामायिक-स्वाध्याय की प्रवृत्ति पुष्ट हुई है। बुजुर्ग श्रावक-श्राविकाएँ धर्म-ध्यान में अधिक सक्रिय हों इस भावना से दया-संवर की प्रेरणा से कई श्रावक-श्राविकाएँ संकल्पित हुए हैं।

परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर का चातुर्मास होलनांथा स्वीकार हो चुका है अतः मध्यान्तर के ग्राम-नगर पावन करते हुए उपाध्याय प्रवर के होलनांथा की ओर विहार की संभावना है।

● मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. ठाणा 2 पालासनी से ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए 21 अप्रेल को सुराणा मार्केट स्थित सामायिक-स्वाध्याय भवन, पाली पधारे। पाली के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने महावीर जयन्ती, अक्षय तृतीया और आचार्य भगवन्त की पुण्य तिथि जैसे विशिष्ट प्रसंगों को ध्यान में रखकर दया-संवर की पंचरंगियों के कार्यक्रम सुनिश्चित कर एवं प्रार्थना-प्रवचन-प्रतिक्रमण आदि दैनिक कार्यक्रमों में अच्छी उपस्थित प्रदर्शित कर वैशाख शुक्ला अष्टमी तक विराजने की विनती रखी। भक्ति में शक्ति होती है, श्रद्धेय श्री गौतममुनि जी म.सा. ने सामायिक-स्वाध्याय और दया-संवर के कार्यक्रमों के साथ नवीन ज्ञानाभ्यास बढ़ाने की प्रेरणा करते हुए फरमाया कि ज्ञान की जितनी-जितनी निर्मलता होगी क्रिया में उतना-उतना आनन्द आयेगा। स्थानीय संघाध्यक्ष श्री सोहनलाल जी नाहर, संघमंत्री श्री ताराचन्द जी सिंघवी आदि श्रावकों ने शादी विवाहों की व्यस्तता होते हुए भी मध्याह्न में बहिनों की ज्ञान-साधना में भाग लेने की व्यवस्था सुनिश्चित कर वैशाख शुक्ला अष्टमी तक विराजने की स्वीकृति प्राप्त की। महावीर जयन्ती पर लगभग 750 भाई-बहिनों द्वारा सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा। आचार्य भगवन्त की पुण्यतिथि पर भी सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम रखा गया जो शादी-विवाहों के प्रसंग के चलते भी सार्थक रहा।

सुराना मार्केट का कल्पकाल पूर्ण होने पर पाली नगर के उपनगरों को लाभान्वित करते हुए मुनि मण्डल अभी हाउसिंग बोर्ड पाली में धर्मोद्योत कर रहा है। पालासनी चातुर्मास की घोषणा के कारण पाली से निकट भविष्य में विहार की संभावना है।

● सूर्यनगरी जोधपुर में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 5 वर्द्धमान भवन, पावटा में, सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., महासती श्री विमलावती जी म.सा. आदि ठाणा 3 घोड़ों का चौक में तथा शासनप्रभाविका महासती श्री

मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. आदि ठाणा 4 नेहरू पार्क स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में विराज रहे हैं, जिससे जोधपुरवासियों को सत्संग-सेवा और संत-समागम का निरन्तर लाभ प्राप्त हो रहा है। पावटा, घोड़ों का चौक और नेहरू पार्क में सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर के कार्यक्रमों के साथ विशिष्ट आयोजनों पर वृहद् कार्यक्रम रखे जाते हैं। भगवान महावीर जन्म-कल्याणक चैत्र शुक्ला त्रयोदशी पर आयोजित सामूहिक सामायिक-साधना का कार्यक्रम गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी सफल रहा। सरदार चिल्ड्रन स्कूल के विशाल प्रांगण में प्रातः 7 से 8 बजे सामूहिक सामायिक-साधना में करीब 3 हजार श्रावक-श्राविकाओं ने स्व-प्रेरित अनुशासन के साथ नियत निर्धारित समयावधि में सामायिक की। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. का प्रवचन सुना और मंगलपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। महासती मण्डलों की प्रेरणा से एवं श्राविका संघ की सक्रियता से कई स्थानों पर ज्ञानाराधन की व्यवस्थाएँ सुचारू चल रही हैं। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष बालक-बालिकाओं में नैतिक एवं धार्मिक संस्कार पुष्ट हों, एतदर्थ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के तत्त्वावधान में पावटा, घोड़ों का चौक, नेहरू पार्क, सिंहपोल, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड और लक्ष्मीनगर में प्रातः 7.30 से 9.30 बजे तक धार्मिक पाठशालाओं के माध्यम से ज्ञानाभ्यास करवाया जा रहा है। मई 17 से जून 16 तक धार्मिक पाठशाला कार्यक्रम के अन्तर्गत करीब 700 बालक-बालिकाएँ लाभान्वित हो रहे हैं।

● सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा., महासती श्री मनोहरकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 4 का दिनांक 18 अप्रेल को सामायिक स्वाध्याय भवन, नागौर में पदार्पण हुआ। आचार्य भगवन्त की पुण्य तिथि तक नागौर में महासती मण्डल के विराजने से अच्छा धर्म-ध्यान हुआ। आचार्य भगवन्त की पुण्य तिथि पश्चात् इन्दिरा कॉलोनी आदि क्षेत्र फरसकर महासती मण्डल का गोगेलाव पदार्पण हुआ। अलाय आदि क्षेत्र फरसकर महासती मण्डल के चातुर्मासार्थ धनारी कलां की ओर विहार की संभावना है।

● शान्त स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 13 का विचरण विहार प्रायः भोपालगढ़ क्षेत्र रहा। शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4 ने दिनांक 4 मई को भोपालगढ़ से विहार किया। दो किलोमीटर दूर भादवों की ढाणी पहुंचते समय शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. को विहार में श्वास की तीव्रता से काफी कठिनाई रहीं। शान्तस्वभावी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. ने अरटिया तक विहार करके स्थिति को देखने की बात फरमाई, साथ ही उन्होंने आचार्यप्रवर की

भावनानुसार पाली, मेड़ता और भोपालगढ़ क्षेत्रों की चातुर्मास पूर्ति के लिए अपनी सहमति व्यक्त की। आचार्यप्रवर ने शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा. का चातुर्मास भोपालगढ़, व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. का चातुर्मास मेड़तासिटी और व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा. का चातुर्मास पाली स्वीकार किया है। अतः तीन संघाड़ों के विहार की संभावित दिशाएं इस प्रकार होंगी–

1. शान्त स्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 4 अरटिया से भोपालगढ़ पधारें, ऐसी संभावना है।

2. व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा., महासती श्री विवेकप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 5 जो अभी गोटन विराजित हैं, गोटन से हरसोलाव–खजवाना–नागौर आदि क्षेत्र फरसते हुए चातुर्मासार्थ मेड़ता सिटी पधारने की संभावना है।

3. व्याख्यात्री महासती श्री सुमतिप्रभा जी म.सा., महासती श्री रुचिता जी म.सा. आदि ठाणा 4 अरटिया से बिलाड़ा–सोजत क्षेत्र फरसते हुए पाली चातुर्मासार्थ पधारें, ऐसी संभावना है।

● व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा., महासती श्री सुमनलता जी म.सा. आदि ठाणा 7 जलगांव विराजित हैं। महासती मण्डल का चातुर्मास तोंडापुर घोषित हुआ है, अतः' जलगांव से चातुर्मास स्थल तोंडापुर की ओर विहार की संभावना है।

● तत्त्वचिंतिका महासती श्री रतनकंवर जी म.सा., महासती श्री शशिकला जी म.सा. आदि ठाणा 5 का चातुर्मास आचार्यप्रवर ने अहमदाबाद घोषित किया है। महासती मण्डल का जोधपुर से पाली, शिवगंज, सिरोही, माउण्ट आबू अम्बाजी आदि क्षेत्रों को पावन करते अहमदाबाद की ओर विहार में हैं।

● विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 6 का चातुर्मास ताहाराबाद और मुकटी स्वीकार किया गया है अतः तीन–तीन ठाणों से दोनों स्थानों पर चातुर्मास की दृष्टि से महाराष्ट्र के जनपदों में विहार चल रहा है।

● व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री चारित्रलता जी म.सा. आदि ठाणा 3 पल्लीवाल–पोरवाल क्षेत्र में गुरु हस्ती के सामायिक–स्वाध्याय और गुरु हीरा के व्यसन-त्याग की प्रेरणा कर रहे हैं। महासती मण्डल का चातुर्मास गंगापुर सिटी स्वीकृत हुआ है, अतः यथासमय गंगापुर की ओर विहार संभावित है।

● व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा., महासती श्री श्रुतिप्रभा

जी म.सा. आदि ठाणा 3 कोटा-बून्दी क्षेत्र सिंचित करके नैनवां-उणियारा क्षेत्र पावन कर रहे हैं। महासती मण्डल का चातुर्मास जरखोदा स्वीकार किया है। अतः यथासमय जरखोदा की ओर विहार की संभावना है।

● व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेश प्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 मारवाड़ से मेवाड़ होते मध्यप्रदेश महाराष्ट्र सीमा क्षेत्र सेंधवा पहुंचने वाले हैं। महासती मण्डल व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा. की सेवा में पहुंचकर चातुर्मासार्थ लासूर स्टेशन पधारें, ऐसी संभावना है।

-अरूण मेहता, महामन्त्री, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

पाचोरा में महिला स्वाध्यायी-प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

श्री महाराष्ट्र जैन स्वाध्याय संघ एवं श्री वर्द्धमान स्था. जैन श्रावक संघ पाचोरा के संयुक्त तत्त्वावधान में 15 से 20 अप्रेल 2002 तक महिला स्वाध्यायी प्रशिक्षण शिविर का आयोजन महासती श्री दर्शनप्रभा जी म.सा. के सान्निध्य में किया गया, जिसमें नागद, फागणा, मुकटी, भडगांव, शिरपुर, चिंचाला, बोदवड़, पाचोरा आदि गांवों से 161 शिविरार्थी महिलाओं ने भाग लिया। शिविर में धार्मिक विषयों वक्तृत्व, गायन, निबंध तथा सुसंस्कारों का सुव्यवस्थित ढंग से अभ्यास कराया गया।

सतीमण्डल एवं श्री प्रकाशचन्द जी जैन, हीरालाल जी मंडलेचा, श्री माणकचन्द जी गादिया, मनोज जी संचेती, सौ. किरणबाई कोठारी एवं सुश्री सपना धाडीवाल द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर में उपस्थित रहने वाले सभी अध्यापकों व शिविरार्थियों को सम्मान पुरस्कार प्रदान किया गया। शिविर की व्यवस्था में पाचोरा श्री संघ एवं श्री रतनलाल सी. बाफना का विशेष सहयोग रहा तथा श्री दलीचन्द जी चोरड़िया का विशेष मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा जयपुर में धार्मिक शिविर

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में 16 मई से 15 जून 2002 तक धार्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन दो स्थानों पर श्री एस.एस. जैन सुबोध बालिका विद्यालय, जौहरी बाजार एवं महावीर जैन साधना मंदिर, महावीर नगर में किया गया है। शिविर का समय प्रातः 7 से 9 बजे तक है। सुबोध स्कूल में शिविर संयोजक श्री अनन्त जी सेठ एवं संजीव जी कोठारी हैं तथा महावीर नगर में श्री अशोक जी जैन एवं श्री प्रमोद जी लोढ़ा है। *-प्रमोद हीरावत,प्रमुख, अखिल बम्ब-सचिव*

कोलकाता में आचार्य भगवन्त की पुण्यतिथि पर डॉ. महेन्द्र सागर प्रचण्डिया का विशेष व्याख्यान

कोलकाता में 19 मई 2002 रविवार को चारित्र चूड़ामणि बाल ब्रह्मचारी आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी महाराज सा. की 11वीं पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में पंजाब जैन सभा भवन में समायोजित श्रद्धांजलि सभा में जैन धर्म दर्शन के विद्वान

डॉ. महेन्द्र सागर जी प्रचण्डिया ने 'वर्तमान अपसंस्कृति में जैन धर्म और दर्शन, ज्ञान व चारित्र की अहिंसक समाज की संरचना में विशिष्टता' विषय पर व्याख्यान दिया। सभा की अध्यक्षता प्रोफेसर कल्याणमल जी लोढ़ा ने की। डॉ. राजीव जी प्रचण्डिया, श्री जयकल्याण जी आदि ने आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के योगदान के संबंध में अपने विचार रखे।- *मदनरूपचन्द भण्डारी*

जैन धर्म की सर्वोत्तम पुस्तकों पर एक लाख रुपये के दो पुरस्कार

भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई द्वारा भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में जो हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में लिखित प्रत्येक सर्वोत्तम पुस्तक पर एक-एक लाख रुपये का पुरस्कार प्रदान करने की योजना प्रकाशित(जिनवाणी,मई 2002)हुई है,उसमें कुछ संशोधन किए गए हैं,यथा-

1. पुस्तक का सारांश जो 10 पृष्ठों से अधिक नहीं होना चाहिए, फाउण्डेशन को 30 जुलाई 2002 तक प्राप्त हो जाना चाहिए।
2. सम्पूर्ण पुस्तक की चार प्रतियां 29 मार्च 2003 तक प्राप्त हो जानी चाहिए, क्योंकि फाउण्डेशन 30 जुलाई 2003 को पुरस्कार विजेताओं के नामों की घोषणा करना चाहेगा।
3. संकलित निबन्धों, पठित शोध लेखों एवं शोध ग्रन्थों का चयन कदापि नहीं किया जायेगा। अतः लेखकों से नम्र निवेदन है कि वे प्रेषणीय पुस्तक की सामग्री को सरल से सरल एवं जन-जन के लिए हृदयग्राही बनाने का लक्ष्य रखें।

शेष नियम यथावत् हैं। यह सूचना वेबसाइट www. jainsindia.org एवं www.sugaldamani.orgपर भी उपलब्ध है।-*दुलीचन्द जैन, संयोजक, पोस्ट बॉक्स नं. २९८३,११, पोन्नप्पा लेन, ट्रिप्लिकेन हाई रोड़, चेन्नई-६०000५*

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी की स्थापना

नई दिल्ली- भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक महोत्सव की एक रचनात्मक उपलब्धि अहिंसा के शिक्षण एवं प्रशिक्षण के लिए 'अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा अकादमी' की स्थापना है। इसकी स्थापना का कार्यक्रम 24 अप्रेल 2002 को नई दिल्ली में तीन मूर्ति भवन के सभागार में सम्पन्न हुआ। इस अकादमी की स्थापना से अहिंसा के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों और संस्थाओं के कार्यों के बीच प्रभावी समन्वय होगा और इस संयुक्त प्रयास से निष्ठावान और समर्पित कार्यकर्ताओं का विकास होगा, जो अहिंसा की तेजस्विता को व्यावहारिक जीवन में प्रतिष्ठित कर सकेंगे। समारोह को राज्यसभा के सदस्य डॉ. कर्णसिंह एवं सांसद डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, गांधीवादी नेता सुश्री निर्मला देशपाण्डे एवं प्रो. समदोंग रिनपोंचे ने संबोधित किया। डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने कहा कि अहिंसा आज एक विकल्प के रूप में नहीं, अपितु जीवन जीने की मूलभूत आवश्यकता के रूप में हमारे सामने है।

भगवान महावीर 2600वाँ जन्मकल्याणक महोत्सव समिति दिल्ली के अध्यक्ष श्री रिखबचन्द जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह एक विसंगति है कि उग्रवाद, आतंकवाद तथा हिंसा का शिक्षण प्रशिक्षण देने के लिए अनेक संस्थान पूरे विश्व में हैं, लेकिन अहिंसा के शिक्षण और प्रशिक्षण की यथोचित व्यवस्था नहीं है। आज पूरा विश्व आण्विक अस्त्रों के विकास और निर्माण पर प्रतिवर्ष 740 मिलियन डॉलर खर्च कर रहा है। यदि उसका 0.1 प्रतिशत भी अहिंसा के प्रशिक्षण पर खर्च किया जाए तो पूरे विश्व में शांति का वातावरण बन सकता है।

अहिंसा अकादमी के माध्यम से विश्व शांति के प्रयासों, अहिंसक जीवन शैली, पर्यावरण रक्षा, साम्प्रदायिक सद्भाव आदि को प्रोत्साहन मिलेगा।

इस अहिंसा सम्मेलन में सभी धर्मों एवं मतों के प्रतिनिधियों ने उद्गार व्यक्त करते हुए अहिंसा अकादमी की प्रासंगिकता सिद्ध की।- *प्रो. रतन जैन, महासचिव*

बीसवीं शताब्दी के जैन शलाका पुरुष
(ई. सन् १९००-२०००)

भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक महोत्सव के पावन अवसर पर बीसवीं शताब्दी के समूचे विश्व में फैले जैन समाज के 108 दिवंगत (1900-2000) एवं 108 जीवन्त शलाका पुरुषों, जिनका तपोनिष्ठ जीवन जैनधर्म, राष्ट्रसेवा, समाजोत्थान, कला, साहित्य, इतिहास, न्याय, पत्रकारिता एवं उद्योग व्यापार के लिए समर्पित रहा है, के जीवन-वृत्त संग्रह कर इसके प्रकाशन, सम्पादन एवं लेखन का दायित्व ''इतिहास की अमर बेल- ओसवाल जाति का इतिहास'' के यशस्वी लेखक श्री मांगीलाल जी भूतोडिया, अधिवक्ता उच्च न्यायालय को सौंपा है। इसका प्रकाशन 'प्रियदर्शी प्रकाशन 7 ओल्ड पोस्ट ऑफिस स्ट्रीट, कोलकाता-700001' के द्वारा होगा, ताकि भावी पीढ़िया इन शलाका पुरुषों के जीवन और कार्यों से प्रेरणा प्राप्त कर सकें।

सम्पर्क सूत्र-

1. श्री हजारीमल बांठिया, संयोजक, बांठिया हाउस, 52/16, शक्कर पट्टी, कानपुर-208001 फोन नं. 0512-362901,364622
2. श्री ललित नाहटा, सह संयोजक, 21-आनन्द लोक, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली- 110049, फोन नं. 011-6257653, 6251065

शाजापुर में जैन विद्या (जैनालॉजी) में बी.ए./एम.ए./पी-एच.डी. डिग्री पाठ्यक्रमों के अध्ययन की सुविधा का सुअवसर

पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी के भूतपूर्व निदेशक, अन्तर्राष्टीय ख्याति प्राप्त जैन विद्वान डॉ. सागरमल जी ने जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म एवं दर्शन के क्षेत्र में अध्ययन-अध्यापन, शोध कार्य व ज्ञान-ध्यान साधना करने के लिये शाजापुर नगर की प्रदूषण रहित प्राकृतिक सुरम्य वातावरण वाली दुपाड़ा रोड पर प्राच्य विद्यापीठ

की स्थापना की है, जिसका विशाल एवं सुन्दर भवन तैयार हो गया है। इस विद्यापीठ को वर्ष 2002 में विक्रम विश्वविद्यालय,उज्जैन से भी मान्यता प्राप्त हो गई है। फलतः इस विद्यापीठ से शोधार्थी जैन, बौद्ध और हिन्दू धर्म एवं दर्शन से संबंधित किसी भी विषय पर शोध प्रबंध तैयार कर उसे विक्रम विश्वविद्यालय में प्रस्तुत कर पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त कर सकते हैं। इस भवन में 7 सुसज्जित अध्ययन-अध्यापन हॉल, किचन व स्टोर तथा प्रसाधन की समुचित व्यवस्था है। इस भवन में एक सुसज्जित पुस्तकालय है जिसमें लगभग 7000 के करीब पुस्तकें, पत्रिकाएँ एवं पुरानी पाण्डुलिपियां हैं, जिन पर शोध कार्य अपेक्षित है।

इस विद्यापीठ की स्थापना के फलस्वरूप जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं (राज.) मान्य विश्वविद्यालय ने अपने द्वारा संचालित पत्राचार पाठ्यक्रमों के लिये अध्ययन एवं परीक्षा केन्द्र के रूप में प्राच्य विद्यापीठ को मान्यता प्रदान की है। जैनविद्या में बी.ए./एम.ए./पी-एच.डी. डिग्री पाठ्यक्रमों के आवेदन पत्र जुलाई 2002 में भरे जा सकते हैं। इस संबंध में यदि आप कोई भी जानकारी प्राप्त करना चाहें तो डॉ. सागरमल जी (फोन नं. 07364-27425) या डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन (फोन नं. 07364-26153) शाजापुर से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। वर्तमान समय में विद्यापीठ के पुस्तकालय का लाभ लेकर डाक्टर सा. के मार्गदर्शन में शाजापुर नगर के 3 छात्र/छात्राएँ जैन विद्या में एम.ए. पूर्वार्द्ध, 9 छात्र-छात्राएँ एम.ए. उत्तरार्द्ध में अध्यनरत है। इसके अतिरिक्त तीन जैन साध्वियाँ जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूँ से पी-एच.डी. की उपाधि के लिये अपना शोध प्रबंध तैयार कर रही हैं तथा 2 छात्रों ने विक्रम विश्वविद्यालय से पी-एच.डी. डिग्री हेतु पंजीयन कराने के लिये आवेदन किया है।

कोलकाता में जैन सभा एवं विद्यालय का समारोह

कोलकाता- श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता की 75 वर्षीय सेवा यात्रा और श्री जैन विद्यालय, हावड़ा की 10 वर्षीय शैक्षणिक यात्रा की सम्पूर्ति के उपलक्ष्य में क्रमशः 'कौस्तुभ जयन्ती' एवं 'शिक्षा : एक यशस्वी दशक' समारोह का 12 मई 2002 को आयोजन किया गया। समारोह में पश्चिम बंगाल राज्य वाममोर्चा के चेयरमेन श्री विमान बोस एवं सांसद श्रीमती सरला माहेश्वरी ने विचार व्यक्त किए। श्री जैन विद्यालय के मंत्री श्री सरदारमल जी कांकरिया ने जैन सभा द्वारा संचालित जैन विद्यालय, कोलकाता, जैन विद्यालय-जगत दल, जैन विद्यालय-हावड़ा और जैन हॉस्पिटल हावड़ा की प्रगति से अवगत कराया। विशिष्ट अतिथि श्री श्रीचन्द नाहटा, श्री श्यामसुन्दर केजरीवाल एवं श्री हरखचन्द जी कांकरिया ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए जैन सभा द्वारा किये जा रहे कार्यों की प्रशंसा की। समारोह में 'शिक्षाः एक यशस्वी दशक' स्मारिका का भी विमोचन किया गया। स्मारिका का सम्पादन श्री भूपराज जैन ने किया।

समारोह की विशिष्ट उपलब्धि में दानवीर श्री हरखचन्द जी कांकरिया ने जैन कॉलेज हेतु एक करोड़ रुपये और एक गुप्तदानी महानुभाव ने जैन डेण्टस कॉलेज हेतु एक करोड़ रुपये के अनुदान की घोषणा की। बहुआयामी सेवाओं के लिए श्री रिखबदास जी भंसाली, श्री जयचन्दलाल जी मिन्नी, श्री सुन्दरलाल जी दुगड, श्री हरखचन्द जी कांकरिया को शाल एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया गया। स्व. श्री भंवरलाल जी कर्णावट को दिया गया सम्मान उनके पुत्रों ने स्वीकार किया। *-भूपराज जैन*

पं. श्री रमेशमुनिजी, डॉ. राजेन्द्रमुनि जी पंजाब में

गत वर्ष दिल्ली का चातुर्मास सानन्द सम्पन्न कर पण्डित श्री रमेशमुनि जी म.सा., उपप्रवर्तक डॉ. राजेद्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा 4 पानीपत, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, पंचकूला, चण्डीगढ, खरड़, बनूड़, राजपुरा होते हुए महावीर जयन्ती पर पटियाला पधारे। यहां से लुधियाना नवांशहर होते हुए 21 जुलाई 2002 को चातुर्मासार्थ जालन्धर पधारेंगे। *-विजय जैन, लुधियाना ०१६१-४११९८७, ७४४४६८*

आचार्य कुन्दकुन्द एवं आचार्य उमास्वामी पुरस्कार समर्पित

नई दिल्ली- आचार्य श्री विद्यानन्द मुनिराज के सान्निध्य में 28 अप्रेल 2002 को अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के जवाहरलाल नेहरू सभागार में आयोजित समारोह में प्रसिद्ध भाषाविद् एवं साहित्य समीक्षक डॉ. नामवरसिंह जी को आचार्य कुन्दकुन्द पुरस्कार से तथा श्री लाल बहादुरशास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. वाचस्पति जी उपाध्याय को 'आचार्य उमास्वामी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आचार्य कुन्दकुन्द पुरस्कार प्राकृत भाषा और उसके साहित्य के क्षेत्र में योगदान हेतु तथा आचार्य उमास्वामी पुरस्कार संस्कृत भाषा एवं साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया। *-डॉ. सुदीप जैन*

सैंकड़ो गायो को बचाया अहिंसा प्रेमियों ने

हैदराबाद- बकरीद से पूर्व गांवों से लारियों में ठसाठस भरकर लायी जा रही गायों में से सैंकड़ों गायों को अहिंसा प्रेमियों ने उनसे छुड़ाकर गौशालाओं में स्थानान्तरित किया। अहिंसाप्रेमी रात-रात भर जागकर टैंट लगाकर इन गायों को बचाते हैं। *- श्रीपाल देशलहरा*

संक्षिप्त-समाचार

शाजापुर- प्राच्य विद्यापीठ शाजापुर में 28 से 30 मार्च 2002 तक श्री भानुविजय जी महाराज (पाटण-गुजरात)एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त जैन विद्वान डॉ.सागरमल जी जैन के सान्निध्य एवं मार्गदर्शन में सर्वमंगल परिवार (भोपाल-इन्दौर-उज्जैन-शाजापुर) के सौजन्य से तीन दिवसीय मौन-ज्ञान-ध्यान शिविर सानन्द सम्पन्न हुआ। शिविर में स्थानीय धर्मप्रेमियों के अतिरिक्त गुजरात एवं मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों से 125 शिविरार्थियों ने भाग लिया। *-डॉ. राजेन्द्र कुमार जैन*

रायपुर (भीलवाड़ा)- 7 अप्रेल 2002 को यहां कृष्ण गोशाला के पास अहिंसाद्वार का शिलान्यास श्री जितेन्द्रसूरि जी म.सा. के सान्निध्य में एस.डी.एम. श्री राकेश जी शर्मा के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। शिलान्यास श्री पारसमल जी बागरेचा ने किया।- *कन्हैयालाल बोरड़िया, सचिव महावीर इण्टरनेशनल*

मंडी अहमदगढ़ (पंजाब)- यहां पर श्री नरेशमुनि जी म.सा. को श्रमणसंघीय उपप्रवर्तक पद प्रदान करते हुए चादर ओढायी गई। कार्यक्रम प्रवर्त्तक श्री रूपचन्द जी म.सा. एवं उपप्रवर्तक श्री सुकनमुनि जी म.सा. के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ।

- गोरेलाल जैन, मंत्री

बीकानेर- अक्षयतृतीया 15 मई 2002 को आचार्य श्री रामलाल जी महाराज के मुखारविन्द से 9 मुमुक्षु बहनों ने फोर्ट स्कूल बीकानेर में जैन भागवती दीक्षा अंगीकार की।

सरेरी (भीलवाड़ा)- आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलाल जी म.सा. एवं साध्वीप्रमुखा महासती श्री जयवंतकंवर जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर सरेरी निवासी सुश्री रितु खटोड़ ने भागवती दीक्षा अंगीकार की। *-रतनलाल जैन*

पदराड़ा (उदयपुर)- राष्ट्रसन्त श्री गणेशमुनि जी शास्त्री के सान्निध्य में विदुषी महासती श्री चन्दनबाला जी म.सा. की निश्रा में सुश्री रंजन दोलावत की 15 मई 2002, अक्षयतृतीया के दिन भागवती दीक्षा सम्पन्न हुई। नवदीक्षिता साध्वी का नाम ऋजुप्रज्ञा श्री रखा गया। *-नन्दलाल दोलावत, पदराड़ा*

नगरी- आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा घोषित संस्कार समीक्षा सुधार वर्ष के उपलक्ष्य में एक अखिल भारतीय निबंध स्पर्धा समाज सेवी श्री सोहनलाल जी कमलचन्द जी सीपाणी, बैंगलोर के सौजन्य से आयोजित की गई है। निबंध का विषय है ''संस्कार समीक्षा सुधार : एक चिन्तन'' शब्द सीमा 1000रखी गयी है। प्रथम पुरस्कार 1000/-, द्वितीय पुरस्कार 700/-, तृतीय पुरस्कार 500/-, चतुर्थ पुरस्कार 300/-, पंचम पुरस्कार 200/- के अलावा 10 अन्य प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार प्रदान किए जायेंगे। निबंध भेजने की अंतिम तिथि 10 जुलाई है। निबंध महेश नाहटा, नगरी छत्तीसगढ़ पिन- 493778 के पते पर भेजें। श्रेष्ठ निबंधों को पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया जायेगा।- *महेश नाहटा*

बधाई

जयपुर- श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में अध्ययनरत छात्र लोकेश

जैन ने राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर की ओर से अलवर में आयोजित राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में निबंध प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। प्रत्येक जिले से प्रथम स्थान पर रहे छात्र को ही प्रतियोगिता में शामिल किया गया था। लोकेश ने जयपुर जिले में भी प्रथम स्थान प्राप्त

किया था। लोकेश जैन मूलतः सवाईमाधोपुर के रहने वाले हैं। निबंध का विषय "किशोरों के सही मार्गदर्शन से ही स्वस्थ समाज की रचना संभव है" था। दसवीं कथा में 85 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले प्रतिभा सम्पन्न छात्र लोकेश ने भारतीय प्रशासनिक सेवा में जाने हेतु ग्यारहवीं में कला वर्ग के विषय चुने हैं।

नई दिल्ली-प्रतिबद्ध पत्रकारिता के माध्यम से जीवदया, मद्यनिषेध, अहिंसा व शाकाहार के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य करने पर अलवर (राजस्थान) के पत्रकार श्री ओमप्रकाश गुप्ता को इस वर्ष राष्ट्रीय स्तर पर 'जैम ऑफ इण्डिया' अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह समारोह नई दिल्ली के 'ताज पैलेस इण्टरनेशनल' होटल में आयोजित किया गया। पुरस्कार भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण राज्यमंत्री श्री रमेश वैद एवं केन्द्रीय खाद्य आपूर्ति राज्यमंत्री श्री अशोक प्रधान द्वारा दिया गया। श्री गुप्ता इससे पूर्व 'अहिंसा इण्टरनेशनल अवार्ड एवं 'अहिंसा कार्यकर्ता अवार्ड' भी प्राप्त कर चुके हैं। श्री गुप्ता अलवर से प्रकाशित दैनिक राजस्थान टाइम्स के कार्यकारी सम्पादक हैं।

कोलकाता- उदयपुर के युवा जैन विद्वान डॉ. सुरेश जी सिसोदिया को श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा, कोलकाता द्वारा 12 मई 2002 को कोलकाता में सम्मानित किया गया। डॉ. सिसोदिया आगम, अहिंसा, समता एवं प्राकृत संस्थान, उदयपुर में शोधाधिकारी हैं तथा उनका जैन धर्म, दर्शन एवं साहित्य को विशिष्ट योगदान है।

इन्दौर- होल्कर महाविद्यालय में गणित प्राध्यापक, कुन्दकुन्द ज्ञानपीठ, इन्दौर के मानद् सचिव एवं अर्हत् वचन के सम्पादक डॉ. अनुपम जैन को कोलकाता में भ. महावीर के 2600 वें जन्म कल्याणक वर्ष के समापन पर 'जैन राष्ट्र गौरव पदवी से अलंकृत किया गया। उन्हें अ.भा. दिगम्बर जैन प्रतिभा सम्मान समारोह समिति की ओर से अष्ट धातु मानस्तम्भ, काष्ठांकित प्रशस्तिपत्र तथा शाल व श्रीफल से सम्मानित किया गया। समारोह में कुल 26 पुरुष/महिलाओं को बहुमान दिया गया।—जयसेन जैन

श्रद्धांजलि

गोपालगढ़, भरतपुर- सुश्रावक श्री जगदीशप्रसाद जी जैन सुपुत्र स्व. श्री कुन्दनलाल जी जैन, मोहल्ला गोपालगढ़, भरतपुर का 78 वर्ष की आयु में 26 अप्रेल 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप स्थानीय स्वाध्याय संघ के पूर्व मंत्री एवं सक्रिय कार्यकर्ता रहे। आप कर्त्तव्य परायण, सरल स्वभावी, सेवाभावी एवं मृदुभाषी थे। सामायिक, स्वाध्याय, तप, त्याग में आपकी गहरी रुचि थी। आपके आजीवन शीलव्रत का नियम था। आप आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के अनन्य भक्त थे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ कर गये हैं।

जयपुर- सुश्राविका श्रीमती हुकमकंवर जी जैन (सिंघवी) धर्मपत्नी श्री बिलमचन्द जी सिंघवी का 16 मई 2002 को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धालु श्राविका थी।

जयपुर- श्री मेघकुमार जी कर्नावट सुपुत्र स्व. श्री नौरतनमल जी कर्नावट का 19 मई 2002 को असामयिक निधन हो गया। आप प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व थे। प्रतिदिन सामायिक, स्वाध्याय आदि धर्मक्रियाओं में ही आपका अधिक समय व्यतीत होता था। आपका पूरा परिवार आपकी भांति आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सतियों के प्रति श्रद्धानत है। कर्नावट सा. सन्त-सतियों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे। आपका जीवन अनेक सद्गुणो से ओतप्रोत था।

-प्रकाशचन्द डागा

जयपुर- श्री भभूतराज जी मेहता का 19 अप्रेल 2002 को देहावसान हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धाशील श्रावकरत्न थे। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति अगाध श्रद्धा भक्ति रखते थे।

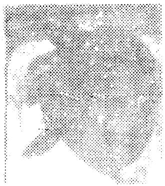

इन्दौर- जैन श्वेताम्बर समाज के वरिष्ठ श्रावक एवं इंडमा ग्रुप ऑफ कम्पनीज के चेयरमेन श्री नेमीचन्द जी बाफना का 20 अप्रेल 2002 को इन्दौर में निधन हो गया। वे धर्मनिष्ठ एवं स्वाध्यायी श्रावक थे। आपको समाज के गणमान्य जनों द्वारा श्रद्धांजलि दी गई।

खेरली- श्रीमती पुष्पादेवी जी जैन, धर्मपत्नी सुश्रावक श्री धर्मचन्द जी जैन (वरिष्ठ स्वाध्यायी), कजोड़ी का नंगला, खेरली का 52 वर्ष की आयु में 26अप्रेल 2002 को संथारा सहित देहावसान हो गया। धर्म परायण, शीलव्रती श्राविका गत आठ वर्षों से प्रतिवर्ष अठाई तप कर रही थी। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्य प्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा. का विशेष प्रभाव रहा।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

पक्खी दिवस

ज्येष्ठ शुक्ला 15, सोमवार 24 जून 2002

आषाढ़ कृष्णा 14, मंगलवार 9 जुलाई 2002

आषाढ़ शुक्ला 14, मंगलवार 23 जुलाई 2002 (चातुर्मास प्रारम्भ)

महत्त्वपूर्ण तिथि

ज्येष्ठ शुक्ला 13-14, रविवार 23 जून 2002- आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी म.सा. की 157वीं पुण्य तिथि

राष्ट्रीय समाचार

छत्तीसगढ़ में अब कोई बूचड़खाना नहीं खुलेगा-जोगी

रायपुर- मुख्यमंत्री अजीत जोगी ने कहा है कि छत्तीसगढ़ में अब कोई बूचड़खाना नहीं खोला जायेगा और गोमाता की सेवा के लिए इस राज्य में जो कोई भी गोशाला संचालित करना चाहेगा, प्रदेश सरकार उसे यथासंभव जमीन सहित सुविधा मुहैया करायेगी। श्री जोगी ने यहां टाउनहॉल में भगवान महावीर के 2600वें जन्मकल्याणक महोत्सव के समापन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर एक वर्ष तक मनाये गये इस महोत्सव को छत्तीसगढ़ में चालू वर्ष में भी जारी रखा जायेगा। उन्होंने कहा कि जिस तरह की कठिन परिस्थितियों से आज पूरा भारत गुजर रहा है उन्हें देखते हुए सत्य, अहिंसा और मानव कल्याण की भावना पर आधारित भगवान महावीर के जीवनदर्शन की आज सम्पूर्ण देश में बहुत अधिक जरूरत अनुभव की जा रही है। मुख्यमंत्री ने कहा कि विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए मांस-निर्यात को बढ़ावा देने के प्रयोजन से देश में बड़ी संख्या में बूचड़खाना खोले जाने की केन्द्र सरकार की नीति से छत्तीसगढ़ सरकार सहमत नहीं है। कार्यक्रम की अध्यक्षता साहू रमेशचन्द्र जैन ने की।

ग्राम चैनपुरा में यान्त्रिक कत्लखाना नहीं खुलेगा

जयपुर नगर निगम के महापौर ने भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद्, सी.स्कीम जयपुर को 28 अप्रेल 2002 को पत्र द्वारा सूचित किया है कि ग्राम चैनपुरा में यान्त्रिक स्लाटर हाउस स्थापित करने हेतु केन्द्र सरकार से अभी तक कोई राशि प्राप्त नहीं हुई है तथा नगर निगम, जयपुर द्वारा कोई भी यान्त्रिक कत्लखाना खोलने की योजना प्रस्तावित नहीं की गई है। महापौर स्वयं भी व्यक्तिगत रूप से यान्त्रिक स्लाटर हाउस स्थापित करने के पक्ष में नहीं हैं।

शाकाहार में मांसाहार के घालमेल पर चिन्ता

जयपुर (30 अप्रेल 02)- शाकाहार और मांसाहार पदार्थ की अलग-अलग पहचान हेतु भारत सरकार ने हरे और लाल रंग के पैकेट को चिह्नित करना अनिवार्य किया है, परन्तु इस नियम को सख्ती से लागू न करने पर जयपुर चेम्बर ने चिन्ता व्यक्त की है। जयपुर चेम्बर ऑफ कॉमर्स एण्ड इण्डस्ट्री के अध्यक्ष राधेश्याम धूत एवं सचिव अजय काला के अनुसार खाद्य अपमिश्रण कानून में संशोधन हो जाने के बाद भी आइसक्रीम, सूप, फ्रेंच-फ्राइज, कस्टर्ड पाउडर, डिब्बाबंद खाद्य पदार्थ, टूथपेस्ट, टूथ पाउडर, मोश्चराइजिंग क्रीम आदि अनेक वस्तुएँ ऐसी हैं, जिन पर लाल निशान आवश्यक रूप से चिह्नित होना चाहिए, जो नहीं हो रहा है। नियम की सख्ती के अभाव में विभिन्न वस्तुओं के प्रयोग में असमंजसता समाप्त नहीं हुई है।

मुनि श्री तरुण सागर जी के प्रवचन आस्था टी.वी. पर

नई दिल्ली- दिगम्बर जैन परम्परा के विख्यात एवं क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरुण

सागर जी के दिल और दिमाग को झकझोर देने वाले अमृत प्रवचनों की एक विशिष्ट शृंखला 7 मई से आस्था चैनल पर शुरु हो गई है। सांय 4.30 बजे से 5 बजे तक इन प्रवचनों का प्रसारण भारत सहित 122 देशों में सप्ताह में पांच दिन (सोमवार से शुक्रवार) होगा। यहां उल्लेखनीय है कि क्रांतिकारी संत मुनि श्री तरुणसागर जी देश के प्रथम जैन मुनि हैं जिन्होंने आज से 4 वर्ष पूर्व जी. टीवी के माध्यम से भारत सहित 122 देशों में महावीर वाणी के विश्वव्यापी प्रसारण की ऐतिहासिक शुरूआत की थी। इसके साथ ही जैन टी.वी. पर भी मुनि श्री के प्रवचन प्रत्येक रविवार को प्रातः 7.30 बजे से 8 बजे तक आते हैं।– धर्मपाल जैन, महामंत्री, तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट, दिल्ली

जीवदया प्रेमी श्री ललित जैन की कसाइयों द्वारा निर्घृण हत्या

भिवंडी (जिला-ठाणे)- जीवदया, अहिंसा, करूणा, जिनकी रोम-रोम में बसी थीं, ऐसे बारह व्रत धारी सुश्रावक वकील श्री ललित जैन (उम्र 31 वर्ष) की महावीर जन्म कल्याणक के एक दिन पूर्व 24 अप्रेल को दोपहर 11.30 बजे भरे बाजार में कसाइयों ने गोली मारकर निर्मम हत्या कर दी। जालोर जिले के गुडाबालोतान निवासी श्री जैन वकालात करते थे। पिछले 8 वर्षों में 200 से ज्यादा केस लड़कर गैरकानूनी कत्ल के लिये ले जाये जा रहे 5000 से अधिक पशुओं को बचाया था। आचार्य श्री हेमरत्नसूरि जी म.सा. के सम्पर्क में आने के पश्चात् जीवदया, अहिंसा, करुणा, धर्म के प्रति वे पूर्ण रूप से समर्पित हो गये थे। श्रावक के बारह व्रतों को अंगीकार कर दोनों समय प्रतिक्रमण, जिन भक्ति, बीयासणे, पर्युषण आराधना करवाने जाना आदि संस्कार उनके जीवन में घुल-मिल गये थे। वे बजरंग दल-भिवंडी शाखा के प्रमुख थे। यंग एलर्ट ग्रुप, वर्धमान संस्कृति धाम, विनियोग परिवार आदि संस्थाओं से जुड़े हुए थे। स्थानीय जैन संघ के साथ प्रत्येक कार्य में अग्रणी रहते थे। सामाजिक सेवाओं को देखकर महाराष्ट्र राज्य सरकार द्वारा विशेष कार्यकारी अधिकारी (S.E.O)के रूप में उनकी नियुक्ति की गयी थी।

ललित जैन को कई बार मारने की धमकियां भी मिली थीं, पर वे जीवदया के प्रति संवेदनशील रहते हुए अपने मिशन को आगे बढ़ाते रहे और अदालतों में विजयश्री प्राप्त करते रहे।यह हिंसा कानून का पालन करने वाले एक राष्ट्रप्रेमी नागरिक की हत्या है, अहिंसा की हत्या है।

– जे.के.संघवी, मानद सम्पादक, शाश्वत धर्म, थाणे

सूचना

जिनवाणी पत्रिका का आजीवन सदस्यता शुल्क 25 अप्रेल 2002 (महावीर जयन्ती के पश्चात्) से रुपये 300 के स्थान पर रुपये 500 निर्धारित किया गया है। अतः जिनवाणी के सदस्य बनाने वाले सभी महानुभावों से अनुरोध है कि अब आजीवन सदस्यता शुल्क रुपये 500/– से ही जिनवाणी की आजीवन सदस्यता प्रदान करें।

पर्युषण पर्वाराधना हेतु स्वाध्यायी आमन्त्रित कीजिए

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर विगत 57 से भी अधिक वर्षों से सन्त-सतियों के चातुर्मासों से वंचित गांव/शहरों में 'पर्वाधिराज पर्युषण पर्व' के पावन अवसर पर धर्माराधन हेतु योग्य, अनुभवी एवं विद्वान स्वाध्यायियों को बाहर क्षेत्र में भेजकर जिनशासन एवं समाज की महती सेवा करता आ रहा है। इस वर्ष भी उन क्षेत्रों में जहां जैन सन्त-सतियों के चातुर्मास नहीं हैं, स्वाध्यायी बन्धुओं को भेजने की व्यवस्था है। इस वर्ष पर्युषण पर्व 03 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक रहेंगे। अतः देश-विदेश के इच्छुक संघ के अध्यक्ष/मंत्री निम्नांकित बिन्दुओं की जानकारी के साथ अपना आवेदन पत्र दिनांक 31 जुलाई 2002 तक इस कार्यालय को अवश्य प्रेषित करने का श्रम करावें। पहले प्राप्त आवेदन पत्रों को प्राथमिकता दी जायेगी।

1. गांव/शहरका नाम..............जिला.............प्रान्त...............
2. श्री संघ का नाम व पूरा पता..
3. संघाध्यक्ष का नाम व पता...
4. संघ मंत्री का नाम व पता...
5. संबंधित जगह पहुंचने के विभिन्न साधन...............................
6. समस्त जैन घरों की संख्या..
7. क्या आपके यहां धार्मिक पाठशाला चलती है?........................
8. क्या आपके यहां स्वाध्याय का कार्यक्रम नियमित चलता है?..........
9. पर्युषण सेवा संबंधी आवश्यक सुझाव...................................
10. अन्य विशेष विवरण...

आवेदन करने का पता-संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, प्रधान कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर- 342001 (राज.) फोन नं. 624891

स्वाध्यायियों के लिये आवश्यक सूचना

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के समस्त स्वाध्यायियों को सूचित करते हुए परम प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है कि आगामी पर्वाधिराज पर्युषण पर्व 03 सितम्बर से 10 सितम्बर 2002 तक मनाये जायेंगे। आप सभी स्वाध्यायी बन्धुओं से निवेदन है कि आप पर्युषण पर्व में अवश्य पधारकर अपनी अमूल्य सेवायें संघ को प्रदान करावें। बाहर गांव पधारने से आपकी धर्म-साधना सुचारू रूप से होगी ही, अन्य भाई-बहिनों की साधना में भी आप निमित्त बन सकेंगे।

अतः आपसे निवेदन है कि आप अपनी पर्युषण स्वीकृति स्वाध्याय संघ कार्यालय-घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001 (राज.) फोन नं. 624891 के पते पर अवश्य भिजवाने का श्रम करावें।

सुशीला बोहरा
संयोजक

रिखबचन्द मेहता
सचिव

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8127 डॉ. दिलीपकुमार जी पुत्र श्री केसरमल जी चौरड़िया, साक्री, धुलिया (महा.)
8128 श्री राजेन्द्र जी पुत्र श्री दगडूलाल जी टाटिया, साक्री, धुलिया (महा.)
8129 डॉ. प्रकाशचन्द जी चांदमल जी छाजेड़, साक्री, धुलिया (महा.)
8130 श्री राजेन्द्र जी दलीचन्द जी कांकरिया, साक्री, धुलिया (महा.)
8131 श्री प्रमोद जी मोहनलाल जी कर्नावट, साक्री, धुलिया (महा.)
8132 श्री कान्तिलाल जी बाबूलाल जी सिंघवी, कासारे, धुलिया (महा.)
8133 श्री हेमराज जी नथमल जी सिंघवी, कासारे, धुलिया (महा.)
8134 श्री हीरालाल जी गणेशमल जी पारख, कासारे, धुलिया (महा.)
8135 श्री सुरेश जी सोनराज जी पारख, कासारे, धुलिया (महा.)
8136 श्री दिलीप जी पूनमचन्द जी ओस्तवाल, साक्री, धुलिया (महा.)
8137 श्री जीवनलाल जी भागचन्द जी खिंवसरा, पिंपलनेर, धुलिया (महा.)
8138 श्री रमणलाल जी युवराज जी चौरड़िया, पिंपलनेर, धुलिया (महा.)
8139 श्री धनराज जी कोचर, पिंपलनेर, धुलिया (महा.)
8140 श्री भागचन्द जी तोलाराम जी खिंवसरा, मांडल, जलगांव (महा.)
8141 श्री विजय कुमार जी मोतीलाल जी चौपड़ा, सोमपुर, धुलिया (महा.)
8142 श्री दिलीप कुमार जी पूनमचन्द जी ओस्तवाल, सामोड़ा, धुलिया (महा.)
8143 श्री पारसमल जी बंशीलाल जी कर्नावट, तलवाड़े, नाशिक (महा.)
8144 डॉ. सुभाष जी ब्रह्मेचा, ब्राह्मणगांव, नाशिक (महा.)
8145 श्री मांगीलाल जी अमोलकचन्द जी लुंकड़, देवला, नाशिक (महा.)
8146 श्री सुनील कुमार जी कांकरिया, लोहोणेर, नाशिक (महा.)
8147 श्री कस्तूरमल जी रावतमल जी गोलेछा, लोहोणेर, नाशिक(महा.)
8148 श्री प्रेमचन्द जी इन्दरचन्द जी चौरड़िया, जलगांव (महा.)
8149 श्री पूनमचन्द जी मोतीलाल जी लोढ़ा, धुलिया (महा.)
8150 श्री राजेन्द्र जी पोपटलाल जी बागमार, मटाणे, नाशिक (महा.)
8151 श्री प्रकाशचन्द जी रतनलाल जी संचेती, कलवण, नाशिक (महा.)
8152 Shri G.S. Ranka Ji, Amravati (Maharastra.)
8158 Shri Rajendra ji Bedmutha, Buldana (M.P.)
8162 Shri Vinith Kumar Ji Gandhi, Mumbai (Maharstra)

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका के आजीवन 100 सदस्य बनाने हेतु श्री उम्मेदमल जी हुण्डीवाल, चेन्नई(भोपालगढ़ निवासी)की ओर से भेंट की गई राशि से निम्न सदस्य बनाये गये-

8179 श्री रिखबदास जी माणकचन्द जी बाफना, नाशिक (महा.)
8180 श्री जवरीलाल जी बंशीलाल जी कर्नावट, नाशिक (महा.)
8181 श्री प्रवीण कुमार जी चांदमल जी सांखला, नाशिक (महा.)
8182 श्री सुरेशचन्द्र जी चिमनलाल जी सुराणा, नाशिक (महा.)
8183 श्री कान्तीलाल जी बाबूलाल जी कोचर, नाशिक (महा.)
8184 श्री नन्दकुमार जी मिश्रीलाल जी बाघमार, नाशिक (महा.)
8185 श्री कचरूलाल जी चौथमल जी कांकरिया, नाशिक (महा.)
8186 श्री अजित कुमार जी कांतिलाल जी कांकरिया, नाशिक (महा.)

8187 श्री सुशीलकुमार जी भंवरलाल जी लूंकड़, उमरगांव, वलसाड़(महा.)
8188 श्री महेन्द्र कुमार जी कांतिलाल जी रांका, नाशिक (महा.)
8189 श्री कचरदास जी किशनदास जी कावड़िया मूथा (वालुसेठ), नाशिक (महा.)
8190 श्री प्रवीण कुमार जी गिरधरलाल जी रांका, नाशिक (महा.)
8191 श्री नौरतनमल जी चिमनलाल जी सुराणा, नाशिक (महा.)
8192 श्री ललित कुमार जी चिमनलाल जी सुराणा, सोलापुर (महा.)
8193 श्री मोहनलाल जी पारसमल जी सुराणा, सोलापुर (महा.)
8194 श्री साखरचंद जी मोतीलाल जी कांकरिया, ताहाराबाद, नाशिक (महा.)
8195 श्री प्रदीप कुमार जी साखरचन्द जी कांकरिया, नाशिक (महा.)
8196 श्री माणकलाल जी आशकरण जी सिसोदिया, नन्दूरबार (महा.)
8197 श्री जितेन्द्र कुमार जी माणिकलाल जी सिसोदिया, नाशिक (महा.)
8198 श्री पीयूष कुमार जी मीठालाल जी कुम्भट, देवलालीगांव, नाशिक (महा.)
8199 श्री मिश्रीलाल जी गुलाबचन्द जी बाघमार, नाशिक (महा.)
8200 श्री महेन्द्र कुमार जी प्रेमचन्द जी खिंवसरा, तोण्डापुर, जलगांव (महा.)
8201 श्री माणकचन्द जी मिश्रीलाल जी कांकरिया, देवलालीगांव, नाशिक (महा.)
8202 श्री कांतिलाल जी चम्पालाल जी कांकरिया, देवलालीगांव, नाशिक (महा.)
8203 श्री गुलाबचन्द जी माणकचन्द जी कांकरिया, नाशिक रोड़ (महा.)
8204 श्री सुरेशचन्द जी चम्पालाल जी कांकरिया, नाशिक रोड़ (महा.)
8205 श्री गणेशचन्द जी अशोकचन्द जी कांकरिया, देवलालीगांव, नाशिक (महा.)
8206 श्री कान्तिलाल जी नयनसुख जी खाबिया, वणी, नाशिक (महा.)
8207 श्री महेन्द्र जी कांन्तिलाल जी समदड़िया, वणी, नाशिक (महा.)
8208 श्री हुकमीचन्द जी उत्तमचन्द जी खाबिया, वणी, नाशिक (महा.)
8209 श्री बंशीलाल जी हरकचन्द जी कर्नावट, वणी, नाशिक (महा.)
8210 श्री माणकचन्द जी मोतीलाल जी चौरड़िया, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8211 श्री हीरालाल जी शान्तिलाल जी मुणोत, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8212 श्री प्रकाशचन्द जी मोतीलाल जी मुणोत, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8213 श्री अशोककुमार जी पन्नालाल जी बाघमार, विजयनगर, नाशिक (महा.)
8214 श्री रतनलाल जी पन्नालाल जी बाघमार, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8215 श्री जयंतकुमार जी मिश्रीलाल जी भण्डारी, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8216 श्री सुभाषचन्द जी मिश्रीलाल जी मुणोत, नामपुर, नाशिक (महा.)
8217 श्री साखरचन्द जी श्री कस्तूरचन्द जी मुणोत, नामपुर, नाशिक (महा.)
8218 श्री रमेशचन्द जी रतनलाल जी मुणोत, दयाना, नाशिक (महा.)
8219 श्री सोहनलाल जी जिनेन्द्र कुमार जी जैन, मण्डावर महुआ रोड़, दौसा (राज.)
8220 श्री जैनीलाल जी श्यामकुमार जी जैन, मण्डावर महुआ रोड़, दौसा (राज.)
8221 श्री किशनराम जी दगडूराम जी ओस्तवाल, नाशिक (महा.)
8222 श्री पीयूष जी मणिलाल जी कुम्भट, देवलालीगांव,नाशिक (महा.)
8223 श्री नेमीचन्द जी अखेचंद जी देसड़ला, भउर, जलगांव (महा.)
8224 श्री दिनेश जी मोहनलाल जी जैन (बरवाड़ा वाले), नाशिक (महा.)
8225 श्रीमती प्रीति जी धर्मपत्नी श्री संदीप जी ललवानी, नाशिक (महा.)
8226 श्री दिलीप जी चम्पालाल जी पारख, डिंडोरी, नाशिक (महा.)
8227 श्री सुनील जी चम्पालाल जी चौरड़िया, मुकना, नाशिक (महा.)

8228 श्री नेमीचन्द जी नेनसुख जी चौरड़िया, नाशिक रोड़ (महा.)
8229 श्री प्रकाशचन्द जी भीकमचन्द जी छाजेड़, नाशिक (महा.)
8230 श्री जवरीदास जी कचरदास जी लोढ़ा, नाशिक (महा.)
8231 श्री कान्तिलाल जी मानकचन्द जी मुणोत, बिल्होली, नाशिक (महा.)
8232 श्री सुनील जी मनोहरलाल जी चौरड़िया, नाशिक (महा.)
8233 श्री किशोर जी चम्पालाल जी चौरड़िया, मुकना, नाशिक (महा.)
8234 श्री प्रकाशचन्द जी रामलाल जी मुथा, मुकना, नाशिक (महा.)
8235 श्री सुनील जी हस्तीमल जी मूथा, मुकना, नाशिक (महा.)

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

8402 श्री मोतीलाल जी भंवरलाल जी जैन, बड़ौदा, शाजापुर (म.प्र.)
8404 श्री जी.सी. छाजेड़, बैंगलोर (कर्नाटक)
8421 श्री दिलीप कुमार जी दगडुलाल जी गांधी, ओझर, नाशिक (महाराष्ट्र)
8422 श्री ललित कुमार जी दगडुलाल जी गांधी, कस्बे सुकेना, नाशिक (महाराष्ट्र)
8423 श्री नवसुखलाल जी भागचन्द जी पींचा, घोटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
8455 श्री कन्हैयालाल जी वैदमूथा, घोटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
8456 श्री संजय कुमार जी मोहनलाल जी कावड़िया मूथा, शहापुरा, ठाणे (महाराष्ट्र)
8457 श्री नरेन्द्र कुमार जी रतनलाल जी पारख, शहरापुरा, ठाणे (महाराष्ट्र)
8458 श्री राजेन्द्र जी शान्तिलाल जी लूणावत, नाशिक (महाराष्ट्र)
8459 श्री भंवरलाल जी धनराज जी छाजेड़, इगतपुरी, नाशिक (महाराष्ट्र)
8460 श्री हीरालाल जी घेवरचन्द जी छाजेड़, इगतपुरी, नाशिक (महाराष्ट्र)
8461 श्री मनीष कुमार जी ताराचन्द जी सुराणा, मालेगांव केम्प, नाशिक (महाराष्ट्र)
8462 श्री सुनील कुमार जी पूनमचन्द जी सुराणा, मालेगांव, नाशिक (महाराष्ट्र)
8463 श्री शान्तिलाल जी सुराणा, भिवण्डी, ठाणे (महाराष्ट्र)
8464 श्री आनन्द कुमार जी केशरीमल जी बोथरा, घोटी, नाशिक (महाराष्ट्र)
8465 सौ. प्रमिला देवी धर्मपत्नी श्री रूपचन्द जी रांका, नाशिक शहर(महाराष्ट्र)
8466 सौ. विमला देवी धर्मपत्नी श्री मदनलाल जी बोथरा, नाशिक शहर (महाराष्ट्र)
8467 सौ. शोभादेवी धर्मपत्नी सुभाषचन्द जी बोथरा, नाशिक रोड़ (महाराष्ट्र)
8468 श्री शान्तिलाल जी जैतमल जी कवाड़, ठाणा (महाराष्ट्र)
8469 श्री महावीरचन्द जी मूथा, चेन्नई (तमिलनाडु)

300/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक (अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् की योजना के अन्तर्गत)

7982 श्री राजकुमार जी मारु, राजकोट (गुजरात)
7983 Shri Ramesh Ji Sidarath ji Lodha, Hyderabad (A.P.)
7984 श्री राजेन्द्र कुमार जी जौहरी, जयपुर (राज.)
7985 Shri Tikamchand Ji Kochar, Kilpack, Chennai (T.N.)
7986 Shri Prakashchand Ji Shivraj Ji Khabiya(Jain), Cuddalore (T.N.)
7987 Shri A.Goutam Ji Rathore, Chennai (T.N.)
7988 Shri B. Dharmichand Ji Kothari(Jain), Pursovakam, Chennai (T.N.)
7989 Shri Parasmal Ji Solanki, R.A.Puram, Chennai (T.N.)
7990 Shri K. Rajendar Kumar Ji Chordiya, Chennai (T.N.)
7991 Shri Mahaveerchand Ji Dhariwal, Chennai (T.N.)

7992 श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन बड़वाई, चित्तौड़गढ़ (राज.)
7993 श्री गौतमचन्द जी नाहर, बालाघाट (म.प्र.)
7994 श्री प्रधानाचार्य, अरटियाकलां, जोधपुर (राज.)
7995 Shri A. Lalchand Ji Kataria, Arani (Town Purenit), (T.N.)
7996 Shri Sohanraj Ji Hastimal Ji Bafna, Shimoga
7997 श्री चौथमल जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
7998 डॉ. रक्षकमल जी बस्तीमल जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
7999 श्री महेन्द्र जी जेठमल जी बेगाणी, बीकानेर (राज.)
8000 श्री मोहनलाल जी सिंघवी, कासारे, धुलिया (महा.)
8001 श्री शम्भुलाल जी, नई बस्ती, भटिण्डा (पंजाब)
8002 श्री पारसमल जी, नई बस्ती, भटिण्डा (पंजाब)
8003 श्री धीरेन्द्र जी सम्पतराज जी बाफणा, जोधपुर (राज.)
8004 सौ. सुरेखा जी अभिनन्दन जी भण्डारी, पिपलगांव बसवंत, नाशिक (महा.)
8005 सौ. ललिता जी धनसुखलाल जी भण्डारी, पिपलगांव, बसवंत, नाशिक (महा.)
8006 सौ. सुनन्दा जी उमेशकुमार जी चंडालिया, पिपलगांव, बसवंत, नाशिक (महा.)
8007 सौ. आशा जे. छाजेड़ जी, पिपलगांव बसवंत, नाशिक (महा.)
8008 श्री रमणलाल जी युवराज जी चौरड़िया, पिपलनेर, धुलिया (महा.)
8009 श्री सागरमल जी माणकचन्द जी टाटिया, साक्री, धुले (महा.)
8010 सौ. चन्द्रकला जी विजयकुमार जी छाजेड़, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
8011 श्री मूलचन्द जी देवीचन्द जी बाफणा, वणी, नाशिक (महा.)
8012 सौ. सुनिल जी मिलिन्द जी चौरड़िया, दिंडोरी, नाशिक (महा.)
8013 श्री माणकचन्द जी मोतीलाल जी चौरड़िया, दिंडोरी, नाशिक (महा.)
8014 श्री पंकज कुमार जी भिकमचन्द जी मुथा, पाचोरा, जलगांव (महा.)
8015 श्री राजेन्द्र कुमार जी चंपालाल जी ललवाणी, तोंडापुर, जलगांव (महा.)
8016 श्री शिलकुमार जी सुगनचन्द जी खिंवसरा, तोंडापुर, जलगांव (महा.)
8017 श्री भीकमचन्द जी बंशीलाल जी छाजेड़, अमलनेर (महा.)
8018 श्री मूलचन्द जी घेवरचन्द जी बागरेचा जैन, वणी, यवतमाल (महा.)
8019 श्री दिलीपचन्द जी प्रतापमल जी धाड़ीवाल, पिंपरखेड़ा, जलगांव (महा.)
8020 सौ. प्रभा जी प्रकाशचन्द जी कोठारी, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8021 डॉ. जी.सी. जैन, बोदवड़, जलगांव (महा.)
8022 सौ. आशा जी सुभाषचन्द जी कोठारी, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8023 सौ. ज्योतिबाई जी अशोकचन्द जी कोटेचा, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8024 सौ. विमलाबाई जी ज्ञानचन्द जी जैन, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8025 सौ. सपना जी हेमचन्द जी छलाणी, नागपुर, विदर्भ (महा.)
8026 सौ. सुशीलाबाई जी कांकरिया, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8027 सौ. ललिताबाई जी प्रकाशचन्द जी बरड़िया, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8028 सौ. कुमुद जी अशोकचन्द जी झाबक, बोंदवड़, जलगांव (महा.)
8029 श्री दीपक कुमार धर्मचन्द जी रूणवाल, वरणगांव, जलगांव (महा.)
8030 श्री अशोक कुमार जी लालजी शाम जी जैन, जलगांव (महा.)
8031 श्री के.सी. जी बस्तीमल जी बाघमार, नाशिक (महा.)
8032 Shri Prakashchand Ji Surana, Cuddalore (T.N.)

8033 श्री सुरेन्द्र कुमार जी माणकराज जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8034 श्री हर्षकुमार जी चन्द्रप्रकाश जी डोसी, जोधपुर (राज.)
8035 श्री उदित कुमार जी प्रवीण कुमार जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8036 श्री सुनिल जी लक्ष्मीचन्द जी कोटड़िया, जोधपुर (राज.)
8037 श्री हेमन्त जी चिरंजीलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8038 श्री आशिष जी मनीष जी सिंघवी, जोधपुर(राज.)
8039 श्री नितीन जी अशोक जी मेहता, जोाधपुर (राज.)
8040 श्री आशीष जी अनिल जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
8041 श्री श्रेष्ठ जी सुरेश जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8042 श्री गौतमचन्द जी अशोक जी भंसाली, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
8043 श्री नरेश कुमार जी सोहनराज जी भंसाली, अहमदाबाद (गुजरात)
8044 श्री विजयराज जी चम्पालाल जी चौपड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8045 श्री पारसमल जी भगवानचन्द जी सुराणा, अहमदाबाद (गुजरात)
8046 श्री नरेश कुमार जी विरधीचन्द जी चौपड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8047 श्री राजेन्द्रकुमार जी धींगड़मल जी हुण्डिया, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
8048 श्री मदनलाल जी मांगीलाल जी रांका, अहमदाबाद (गुजरात)
8049 श्री जवाहरलाल जी बांडमल जी लूंकड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8050 श्री राजेन्द्र कुमार जी नेमीचन्द जी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8051 श्री बाबूलाल जी लालचन्द जी लूंकड़, रेलवेपुरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8052 श्री नरपतराज जी लूंकड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8053 श्री राजस्थान एस.एस. जैन संघ, अहमदाबाद (गुजरात)
8054 श्री नवरतनमल जी केशरीमल जी शाह पीपाड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8055 श्री राजेश जी मदनलाल जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8056 श्री रमेश जी भंवरलाल जी भण्डारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8057 श्री पुष्पराज जी देवीचन्द जी भण्डारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8058 श्री प्रवीण जी रणधीरमल जी लोढ़ा अहमदाबाद (गुजरात),
8059 श्री प्रदीप जी रणधीरमल जी लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8060 श्री प्रकाश जी रणधीरमल जी लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8061 श्री उदयराज जी बिरधीचन्द जी बुरड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8062 सौ. मंजुषा जी अनिल कुमार जी लोढ़ा, नाशिक (महा.)
8063 सौ. कल्पना जी सुनिल कुमार जी नागर, नाशिक (महा.)
8064 श्री रमणलाल जी सोनराज जी पारख कासारे, धुले (महा.)
8065 श्री रमेशचन्द जी गुलाबचन्द जी सिंघवी, कासारे, धुले (महा.)
8066 श्री विजयकुमार जी नथमल जी सिंघवी, कासारे, धुले (महा.)
8067 श्री बंशीलाल जी धोडीराम जी धोका, डमराणा, नाशिक (महा.)
8068 श्री संतोष कुमार जी सुभाषचन्द जी सुराणा, बात्सर, शिवणी, जलगांव (महा.)
8069 श्री मोरार जी झुंबरलाल जी ओसवाल, चांदवड़, नाशिक (महा.)
8070 श्री गुलाबचन्द जी भागचन्द जी मुथा, नामपुर, नाशिक (महा.)
8071 सौ. संगीता जी महेन्द्र कुमार जी आंचलिया, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
8072 श्री मुकेश जी तखतराज जी मेहता,पाली (राज.)
8073 श्री अजय जी एफ.एम. जी चौरड़िया, जोधपुर (राज.)

8074 श्री अभय कुमार जी बसन्तीलाल जी सेठिया, रतलाम (म.प्र.)
8075 श्री विजय कुमार जी बसन्तीलाल जी सेठिया, रतलाम(म.प्र.)
8076 श्री सुनिल कुमार जी भैरूलाल जी पगारिया, रतलाम (म.प्र.)
8077 श्री शान्तिलाल जी केशरीमल जी गादिया, रतलाम (म.प्र.)
8078 श्री महेन्द्र जी बापूलाल जी गादिया, रतलाम(म.प्र.)
8079 श्री श्रेणिक कुमार जी श्रीमाल, बरमावल, रतलाम (म.प्र.)
8080 Shri Pukhraj Ji Lunawat, Bangalore(Karnataka)
8081 Shri P.C. Singhvi, Bangalore(Karnataka)
8082 Shri Dilip Ji Mithalal Ji Surana, Bangalore(Karnataka)
8083 Shri Sampatraj Ji Lalwani, Bangalore(Karnataka)
8084 श्री ऋषभ जी कानमल जी मेहता, नई दिल्ली
8085 श्री सुनिल जी सोहनराज जी धारीवाल, नई दिल्ली
8086 Shri L.C. Bhandari, Delhi
8087 श्री जितेन्द्र कुमार जी मीठालाल जी मधुर, दिल्ली
8088 श्री पदमचन्द जी जैन, नई दिल्ली
8089 श्री एल.सी. जैन, नई दिल्ली
8090 श्री दिनेशचन्द जी जैन, फरीदाबाद (हरियाणा)
8091 श्री पी.सी. जैन, नई दिल्ली
8092 श्री शरद जी अभयमल जी लोढ़ा, जवाहरनगर, जयपुर (राज.)
8093 श्री जतनकुमार जी शोभागमल जी तातेड़, जयपुर (राज.)
8094 श्रीमती शिखा जी संतोषकुमार जी जैन, दिल्ली
8095 श्रीमती निहारिका जी राकेश जी अग्रवाल, दिल्ली
8096 श्री टेकचन्द जी ठाकरदास जी कक्कड़, दिल्ली
8097 श्रीमती निधि जी अजेन्द्र कुमार जी जैन, दिल्ली
8098 श्रीमती रिद्धि जी अजेन्द्र कुमार जी जैन, दिल्ली
8099 श्री महेन्द्र कुमार जी हुकमचन्द जी जैन, दिल्ली
8100 श्री गणपतराज जी जैन, जोधपुर (राज.)
8101 श्री पवन जी सायरचन्द जी जैन घीयां, जोधपुर (राज.)
8102 श्री महेन्द्र जी पारसमल जी जैन, दिल्ली
8103 श्री महेशचन्द जी आनन्दचन्द जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8104 श्री सोहनलाल जी हस्तीमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8105 श्री विजयराज जी अमरचन्द जी जैन, दिल्ली
8106 श्री पूरण जी अमरचन्द जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
8107 श्री प्रदीप जी विनीत जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
8108 श्री नेमीचन्द जी रतनलाल जी खिंवसरा, नामपुर, नाशिक (महा.)
8109 सौ. सरोज जी कान्तिलाल जी पारख, चालीसगांव, जलगांव (महा.)
8110 डॉ. आनन्दीलाल जी धनराज जी, वडेल, नाशिक(महा.)
8111 श्री बंकटलाल जी मोतीलाल जी, वडेल, नाशिक (महा.)
8112 श्री सुमतिलाल जी माणकचन्द जी कर्णावट, वडेल, नाशिक (महा.)
8113 श्री बंशीलाल जी रूपचन्द जी कर्णावट, वडेल, नाशिक (महा.)
8114 श्री रमणलाल जी पूनमचन्द जी धाडीवाल, वडेल, नाशिक (महा.)

8115 श्री गिरधारीलाल जी लखीचन्द जी कांकरिया, वडेल, नाशिक (महा.)
8116 श्री अशोकचन्द जी घेवरचन्द जी बाफणा, वडेल, नाशिक(महा.)
8117 श्री संजय कुमार जी अमोलकचन्द जी कांकरिया, नाशिक (महा.)
8118 श्री राहुल जी हस्तीमल जी जैन, मुम्बई (महा.)
8119 Shri Pannalal Ji Munot, Hinganghat, Wardha (Maharashtra)
8120 Shri Tanuj Pokarana, Mumbai (Maharashtra)
8121 Shri Kajariwal & Brothers, Bargarh(Orissa)
8122 श्री राजेन्द्र कुमार जी गुलाबचन्द जी लुंकड़, देवला, नाशिक (महा.)
8123 श्री अशोक कुमार जी राणूलाल जी सुराणा, देवला, नाशिक (महा.)
8124 श्री पोपटलाल जी रमेश कुमार जी संकलेचा, देवला, नाशिक (महा.)
8125 श्री कन्हैयालाल जी प्रदीप जी सुराणा, देवला, नाशिक (महा.)
8126 श्री रिखबचन्द जी कांकरिया, देवला, नाशिक (महा.)
8153 श्री राहुल कुमार जी मूथा, उज्जैन (म.प्र.)
8154 श्री धनराज जी चौरड़िया, उज्जैन (म.प्र.)
8155 श्री अशोक कुमार जी सुराणा, खाचरोद, उज्जैन (म.प्र.)
8156 श्री सज्जनसिंह जी मेहता, बड़ी सादड़ी, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8157 श्री शान्तिलाल जी चन्दनमल जी चाणोदिया, पेटलावद, झाबुआ (म.प्र.)
8159 Shri Sneh Kumar Ji Bhandari, Jaipur(Raj.)
8160 Shri Shravan Kumar Ji Lodha, Delhi
8161 श्री ललित जी मूसल, जयपुर (राज.)
8163 Shri Madan M. Kothari, Mysore (Karnataka)
8164 Shri Kishanlal Ji Kanter, Mysore (Karnataka)
8165 Shri K. Jethmal Ji Nangawat, Mysore (Karnataka)
8166 श्री दीपक जी गुलाबचन्द जी जैन, मौजपुर, अलवर (राज.)
8167 श्री शान्तिकुमार जी मूलचन्द जी जैन, मौजपुर, अलवर (राज.)
8168 श्री पारसकुमार जी भागवतसिंह जी जैन, नैमी, इलाहाबाद (उ.प्र.)
8169 श्री विरेन्द्र कुमार जी सौरभ कुमार जी डागा, मुम्बई (महा.)
8170 श्री मोहनलाल जी लालचन्द जी खाबिया, पिपलगांव, बसन्त, नाशिक (महा.)
8171 श्री कुन्दन जी जैन, जूनागढ़ (गुजरात)
8172 श्री प्रकाशचन्द जी शीतल जी सुराणा, नाशिक (महा.)
8173 श्री सुनिल कुमार जी किशनलाल जी बाफणा, नाशिक (महा.)
8174 श्री मनसुखलाल जी उत्तमचन्द जी ओस्तवाल, नाशिक रोड़ (महा.)
8175 श्री प्रवीण कुमार जी बुधराज जी जैन, सिसोदिया, नाशिक (महा.)
8176 श्री संतोष जी हरकचन्द जी लोढ़ा, वैजापुर, औरंगाबाद (महा.)
8177 श्री महावीरप्रसाद जी रेवतीलाल जी जैन बिचगांवा, अलवर (राज.)
8178 श्री कमलचन्द जी बैद, जयपुर (राज.)
8236 श्रीमती हरकीदेवी जी धर्मपत्नी श्री त्रिलोकचन्द जी जैन, चोरू, टोंक (राज.)
8237 श्रीमती हर्षदेवी महावीरप्रसाद जी जैन, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर (राज.)
8238 श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, श्योपुरकलां (म.प्र.)
8239 श्री रमेश जी सौभाग्यमल जी जैन, श्योपुरकलां (म.प्र.)
8240 श्री मिलापचन्द जी जैन, श्योपुरकलां (म.प्र.)

8241 श्री शीतल जी नरेशचन्द जी मेहर, श्योपुरकलां (म.प्र.)
8242 श्री राजेन्द्रसिंह जी मेहता, कोटा (राज.)
8243 श्री ज्ञानचन्द जी अग्रवाल जैन, जयपुर (राज.)
8244 श्री मुरलीधर जी किशन जी वैद्य मून्दड़ा, जोधपुर (राज.)
8245 श्री सुमेरमल जी मिश्रीमल जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
8246 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें) अजन्ता डिस्ट्रीब्यूटर्स, जोधपुर (राज.)
8247 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें) विकास ओटोमोबाइल्स, जोधपुर (राज.)
8248 श्री कान्तिलाल जी बादलचन्द जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8249 श्री (स्वयं का नाम भेजे) मोनिका ब्रदर्स, जोधपुर (राज.)
8250 श्री महेश जी गणेशमल जी राठी, जोधपुर (राज.)
8251 श्री नरेन्द्रकुमार जी भंवरीलाल जी सेठिया, नई दिल्ली
8252 श्री राजेश कुमार जी अजीतमल जी बोथरा, जोधपुर (राज.)
8253 श्री शान्तिलाल जी बोरून्दिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8254 श्री चन्द्रप्रकाश जी शान्तिलाल जी नगरीवाला, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8255 श्री सुधीरकुमार जी सौभागमल जी हड़पावत, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8256 श्री विनोद कुमार जी नानालाल जी लसोड़, प्रतापगढ़, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8257 श्रीमती विमला जी निरंजन कुमार जी बरड़िया, ब्यावर, अजमेर (राज.)
8258 Shri L.M. Mehta, Bangalore (Karnataka)
8259 श्री रूपाराम बाल विद्या मन्दिर, केरू, जोधपुर (राज.)
8260 डॉ. दिलीप जी केसरीमल जी चौरड़िया, साक्री, धुलिया (महा.)
8261 Shri Moolchand Ji Bafna, Chennai(T.N.)
8262 श्रीमती शकुन्तला जी जैन, आगरा (उ.प्र.)
8263 Shri Bhanwarlal Ji Chordia, Bangalore(Karnataka)
8264 श्री राजेन्द्र कुमार जी शांतिलाल जी झाबड़, लासूरगांव, औरंगाबाद (महा.)
8265 श्री राजेन्द्र कुमार जी मांगीलाल जी कोचर, लासूरगांव, औरंगाबाद(महा.)
8266 श्री प्रफुल कुमार जी सुवालाल जी झाबड़, लासूरगांव, औरंगाबाद(महा.)
8267 श्री महेन्द्र कुमार जी बरड़िया, शेलवड़, जलगांव (महा.)
8268 श्री शंकरलाल जी बागरेचा, शेलवड़, जलगांव (महा.)
8269 श्री सुगनचन्द जी बरड़िया, शेलवड़, जलगांव (महा.)
8270 Shri Indrachand Ji Lunkar, Chennai(T.N.)
8271 श्री रतनराज जी नेमीचन्द जी भण्डारी, भायन्दर वेस्ट (महा.)
8272 श्री ललित कुमार कान्तिचन्द जी जैन, बीचगांवा, अलवर (महा.)
8273 श्री कन्हैयालाल जी सुराणा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
8274 श्री सुरेशचन्द जी जैन, मुम्बई (महा.)
8275 श्री जगबीरसिंह जी जैन, मुम्बई (महा.)
8276 श्री नरेन्द्र जी जैन, मुम्बई (महा.)
8277 श्री गौतम जी खिंवसरा, मुम्बई (महा.)
8278 श्री सुनिल बी. मेहता, मुम्बई (महा.)
8279 श्री दीपक जी अभयमल जी मेहता, मुम्बई (महा.)
8280 श्री शान्तिलाल जी सांखला, मुम्बई (महा.)
8281 श्री गजेन्द्र जी राजेन्द्र जी भण्डारी, जयपुर (राज.)

8282 श्री स्नेहिल जी शान्तिलाल जी मारू,उदयपुर (राज.)
8283 श्रीमती ओमशान्ति जी मनोहरसिंह जी बम्ब, उदयपुर (राज.)
8284 Smt. Kamaladevi Ji Ashok Ji Chopra, Coppal (Karnataka)
8285 श्री आकाश जी मांगीलाल जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8286 श्री शिखरचन्द जी बोथरा, जबलपुर (म.प्र.)
8287 श्री प्रकाशचन्द जी मेहता, जबलपुर (म.प्र.)
8288 श्री राजेन्द्र रतन जी बोहरा, जबलपुर (म.प्र.)
8289 श्री शैलेन्द्र जी जैन, जबलपुर (म.प्र.)
8290 श्री गेरीलाल जी जैन, उज्जैन (म.प्र.)
8291 श्री अतुल जी कैलाशचन्द जी सर्राफ, जोधपुर (राज.)
8292 श्री सुनिलराज जी सुखराज जी ढड्ढा, जोधपुर (राज.)
8293 श्री सतीश जी आसूलाल जी बोहरा, जयपुर (राज.)
8294 श्री सम्पतराज हुकमीचन्द जी रेड, पाली (राज.)
8295 Shri Gautam Ji Balchand Ji Kothari, Secundrabad (A.P.)
8296 Smt. Padma Ji Vinaychand Ji Abad, Jalna
8297 Shri Shantilal Ji Champalal Ji Lodha, Hyderabad (A.P.)
8298 Shri Anil Ji Shantilal Ji Chanadiya, Hyderabad (A.P.)
8299 Shri Navratanmal Ji Mohanlal Ji Singhvi, Hyderabad (A.P.)
8300 Shri Kantilal Ji Bhinwarlal Ji Bothra, Hyderabad (A.P.)
8301 Shri Dharmichand Ji Pudkrajji Bhandari, Hyderabad (A.P.)
8302 Shri Ratan Ji Sajjanraj Ji Katariya, Hyderabad (A.P.)
8303 Shri Bhanwarlal Ji Champalal Ji Katariya, Hyderabad (A.P.)
8304 Shri Gautamchand Ji Lalchand Ji Mehta, Secundrabad (A.P.)
8305 Shri Gautamchand Ji Bhanwarlal Ji Bohra, Secundrabad (A.P.)
8306 Shri Banechand Ji Harakchand Ji Chordia, Secundrabad (A.P.)
8307 Shri Padamchand Ji Bhikamchand Ji Sisodia, Hyderabad (A.P.)
8308 Shri Prakashchand Ji Gulabchand Ji Hingad, Hyderabad (A.P.)
8309 Shri Nemichand Ji Mishrimal Ji Katariya, Hyderabad (A.P.)
8310 Shri Rikhabchand Ji Kanhiyalal Ji Pokhrna, Hyderabad (A.P.)
8311 Shri Premraj Ji Kundanmal Ji Khinsara, Hyderabad (A.P.)
8312 Capt. B.L. Ji Jodhraj Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
8313 Shri Rikhabchand Ji Bhanwarlal Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
8314 Shri Pukhraj Ji Bhanwarlal Ji Pipada, Secundrabad (A.P.)
8315 Shri Dharmichand Ji Bhanwarlal Ji Pipada, Hyderabad (A.P.)
8316 Shri Mukeshchand Ji Kanakmal Ji Bafna, Hyderabad (A.P.)
8317 Shri Sudhir Kumar Ji Nemichand Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
8318 Shri Yashwant Ji Inderchand Ji Tated, Secundrabad (A.P.)
8319 Shri R.K. Joharilal Ji Jain, Secundrabad (A.P.)
8320 Shri Vinod Kumar Ji Jain, Secundrabad (A.P.)
8321 Shri Jayantilal Ji Otermal Ji Jain, Hyderabad (A.P.)
8322 Shri Dipesh Ji Adeshwar Ji Kucheria, Parbhani (M.S.)

8323 श्रीमती उषा जी सुरेश जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8324 श्री ऋषि जी प्रदीप जी शाह, जोधपुर (राज.)
8325 श्री अभिषेक जी गौतमचन्द जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8326 श्री प्रीति जी अमित जी गांग, जोधपुर (राज.)
8327 श्री विनय जी महेन्द्र जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8328 श्रीमती जनकंवर जी डूंगरसिंह जी नाहर, उदयपुर (राज.)
8329 श्रीमती विमला जी विजयसिंह जी खिंवसरा, उदयपुर (राज.)
8330 श्री पदम जी मदनलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8331 श्री नितीज जी दलपतसिंह जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8332 श्री आश्रय जी उम्मेदराज जी जैन, जोधपुर (राज.)
8333 श्री अमित जी गौतमराज जी भंसाली, जोधपुर (राज.)
8334 श्री खींमराज जी रूपचन्द जी छाजेड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8335 श्री मोतीलाल जी सेवाराम जी बांठिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8336 श्री हरिशकुमार जी सोलंकी, अहमदाबाद (गुजरात)
8337 श्री पारसमल जी तिलोकचन्द जी मेडतवाल, अहमदाबाद (गुजरात)
8338 श्री पारसमल जी सोहनलाल जी बांठिया अहमदाबाद (गुजरात)
8339 श्री महेन्द्र कुमार जी चम्पालाल जी सुराणा, अहमदाबाद(गुजरात)
8340 श्री सुरेश कुमार जी पन्नालाल जी बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8341 श्री प्रकाशचन्द जी बिरदीचन्द जी बुरड, अहमदाबाद (गुजरात)
8342 श्री पारसभाई जी कन्हैयालाल जी बाफना, अहमदाबाद (गुजरात)
8343 श्री प्रवीणचन्द आर. जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8344 श्री इन्द्रचन्द जी गुमानमल जी नाहटा, अहमदाबाद (गुजरात)
8345 श्रीमती निशाबेन जी गोखरू, इन्दौर (म.प्र.)
8346 श्री सरदारमल जी पन्नालाल जी ललवानी, अहमदाबाद (गुजरात)
8347 श्री धर्मीचन्द जी नेमीचन्द जी बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8348 श्री सुभाषभाई वी. जी विजयराज जी शाह, अहमदाबाद (गुजरात)
8349 श्री देवराज जी चुन्नीलाल जी जाम्बड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8350 श्री शान्तिलाल जी मेहताबचन्द जी रांका, अहमदाबाद (गुजरात)
8351 श्री उत्तमचन्द जी चतुर्भुज जी गुगलिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8352 श्री मदनलाल जी बालबक्ष बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8353 श्री गौतमचन्द जी मोहनलाल जी भण्डारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8354 श्री सुशीलकुमार जी धनराज जी डांगी, अहमदाबाद (गुजरात)
8355 श्री निहालचन्द जी बालचन्द जी लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8356 श्री राजेन्द्र कुमार जी चौधरी, अहमदाबाद (गुजरात)
8357 श्री निर्मलकुमार जी चम्पालाल जी जाम्बड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8358 श्री अनुराग जी धर्मीचन्द जी बम्ब, अहमदाबाद (गुजरात)
8359 श्री निलेश जी नौरतनमल जी ढेडिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8360 श्री कान्तीलाल जी सिरेमल जी मुनोत, अहमदाबाद (गुजरात)
8361 श्री रिखबचन्द जी सोहनलाल जी बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8362 श्री अजयकुमार जी शान्तिलाल जी श्रीश्रीमाल, अहमदाबाद (गुजरात)
8363 श्री विनोद कुमार जी धनराज जी डांगी, अहमदाबाद (गुजरात)

8364 श्री नेमीचन्द जी मदनलाल जी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)
8365 श्री राजेन्द्र कुमार जी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8366 श्री सुरेश कुमार जी मदनलाल जी मेहता, अहमदाबाद (गुजरात)
8367 श्री अचलचन्द जी शेषमल जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8368 श्री सुनिल कुमार जी पुखराज जी रांका, अहमदाबाद (गुजरात)
8369 श्री हुकमीचन्द जी धोकलचन्द जी रांका, अहमदाबाद (गुजरात)
8370 श्री संजीव कुमार जी शान्तिलाल जी लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8371 श्री भंवरलाल जी तेजपाल जी कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8372 श्री धनपतराज जी तेजपाल जी कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8373 श्री विजयराज जी सायरमल जी मंडोत, अहमदाबाद (गुजरात)
8374 श्री दिलीप कुमार जी राजेन्द्र कुमार जी जैन,सिरसा (हरियाणा)
8375 श्री गोपाल जी चन्द्रभान जी गोयल, गोलुबाला मण्डी, हनुमानगढ़ (राज.)
8376 श्री ज्ञानचन्द जी जैन, मुणग(पंजाब)
8377 श्री नरेन्द्र जी जैन, जाखलमण्डी, फतियाबाद (हरियाणा)
8378 श्री अश्विनीकुमार जी सुरेश जी जैन, टोहना, फतियाबाद (हरियाणा)
8379 श्री विक्रमसिंह जी अचलसिंह जी सिसोदिया, जोधपुर (राज.)
8380 Shri Rajkaran Gulguilya, Lakkavalli, Chickmagloor (Karnataka)
8381 श्री राजेन्द्रचन्द जी गणपतचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
8382 श्री राजेन्द्र जी धनराज जी बालड़, जोधपुर (राज.)
8383 श्री विनोद जी बलदेवमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8384 श्री (स्वयं का नाम भेजे) भूत मोटर्स, जोधपुर (राज.)
8385 श्री राजेन्द्र जी बद्रीनाथ जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8386 श्रीमती प्रेक्षा जी जयप्रकाश जी जैन, जोधपुर (राज.)
8387 श्री (स्वयं का नाम भेजे) गणेशम वीडीओकोन प्लाजा, जोधपुर (राज.)
8388 श्री श्रीकान्त जी शर्मा, जयपुर (राज.)
8389 श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, बड़ा महवा, भीलवाड़ा (राज.)
8390 श्री सोहनलाल जी मांगीलाल जी कोठारी, खेरोदा, उदयपुर (राज.)
8391 श्री सुरेश जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8392 श्री शान्तिलाल जी अमरचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
8393 श्री अभिनव जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8394 श्री प्रेमचन्द जी पटवा, अहमदाबाद (गुजरात)
8395 श्री जसवन्तसिंह जी सदावत, जोधपुर (राज.)
8396 श्री प्रवीण जी लूंकड़, अजमेर (राज.)
8397 श्री वीतराग पुस्तकालय, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8398 श्री ओसवाल केन्द्रीय पुस्तकालय, जोधपुर (राज.)
8399 श्री अमृतलाल जी केशरीमल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8400 श्री हंसराज जी घीसूलाल जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
8401 Shri Gayanesh Ji Mukundraj Ji Mehta, Arsikere, Hasan (Karnataka)
8403 श्री प्रेमचन्द जी भंवरलाल जी छाजेड़, चेन्नई (तमि.)
8405 श्री ईशान जी सुरेन्द्र कुमार जी गुप्ता, जयपुर (राज.)
8406 श्री आयुष जी हरकचन्द जी जैन, कोटा (राज.)

8407 श्री गोविन्द जी प्रकाश जी जैन, इन्दौर (म.प्र.)
8408 श्री राकेश कुमार जी रमेशलाल जी जैन, जयपुर (राज.)
8409 श्री नवरतनमल जी भंसाली, जयपुर (राज.)
8410 श्री सुभाषचन्द्र जी डागा, जयपुर (राज.)
8411 श्रीमती चंचल जी जैन, अजमेर (राज.)
8412 Shri C.M. Bachhawat Ji IAS, Kolkata (W.B.)
8413 श्री राजीव जी बाफना, जयपुर (राज.)
8414 श्री चद्रसिंह जी मेहनोत, जयपुर (राज.)
8415 श्री राकेश जी दुगड़, त्रिनगर, दिल्ली
8416 श्री नवरतनमल जी हीरावत, जयपुर (राज.)
8417 श्रीमती मिथलेश जी धर्मपत्नी श्री महावीर प्रसाद जी जैन, खोह, अलवर (राज.)
8418 श्री बाबूलाल जी जैन, हिण्डौन सिटी, करौली (राज.)
8419 श्री रमेश जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8420 श्री भगवती देवी जी जैन, भरतपुर (राज.)
8424 श्री रिषभ जी सिरहमल जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)
8425 श्री राजेश जी ज्ञानचन्द जी ढढ्ढा, जयपुर (राज.)
8426 श्री रणजीत जी भंवरलाल जी बिराणी, जयपुर (राज.)
8427 श्री आलोक जी अशोक कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)
8428 श्री सुनील जी उत्तमचन्द जी छाजेड़, जयपुर (राज.)
8429 श्री देवेन्द्रस्वरूप जी रामस्वरूप जी चन्देल, जयपुर (राज.)
8430 श्री कैलाशकुमार जी बी.एल. वर्मा, जयपुर (राज.)
8431 श्री राकेश जी रघुपथसिंह जी बैद, जयपुर (राज.)
8432 श्रीमती कमलेश देवी जी शान्तिलाल जी जैन, मुम्बई (महा.)
8433 श्री माणकचन्द जी स्व. अमरचन्द जी बोहरा, ब्यावर, अजमेर
8434 श्री सुशीलकुमार जी स्व. भंवरलाल जी सोनी, मदनगंज, किशनगढ़,अजमेर (राज.)
8435 श्री अरूण जी देवेन्द्र जी भंसाली, दिल्ली
8436 श्री देवेन्द्र कुमार जी रघुवीरसिंह जी सिसोदिया, थाणे (महा.)
8437 श्री अरूण कुमार जी रतनलाल जी रांका, जयपुर (राज.)
8438 श्री सुनील जी प्यारेलाल जी जैन, जयपुर (राज.)
8439 श्री वैभव जी जयदीप जी ढढ्ढा, जयपुर (राज.)
8440 श्री विमलचन्द जी ज्ञानचन्द जी मोदी, जयपुर (राज.)
8441 श्री रितेष जी एस.एस. बोथरा, मुम्बई (महा.)
8442 श्री गजराज जी चम्पालाल जी बोरड़, जयपुर (राज.)
8443 श्री पार्श्वकुमार जी धूलेलाल जी जैन, नवसारी (गुजरात)
8444 श्री प्रहलाद कुमार जी अमरचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
8445 श्री संजय जी तिलोकचन्द जी श्रीमाल, जयपुर (राज.)
8446 श्री रामशरण जी दुर्गालाल जी रावत, जयपुर (राज.)
8447 श्री गजानन्द जी भगवान सहाय जी गुप्ता, जयुपर (राज.)
8448 श्री राजेन्द्र जी तेजकरण जी जैन, कोटा (राज.)
8449 श्री ह्रिरेन्द्र जी नाहर, जयपुर (राज.)
8450 श्री विकाश जी केसरीमल जी लोढ़ा, जयपुर (राज.)

8451 श्री प्रकाश जी राजेन्द्र जी जामड़, जयपुर (राज.)
8452 श्री अभिनन्दन जी सुरेन्द्र जी जामड़, जयपुर (राज.)
8453 श्री दीपक जी विलेश्वरप्रसाद जी गुप्ता, जयपुर (राज.)
8454 श्री दीपक जी ओमप्रकाश जी सिंघल, धौला, जयपुर (राज.)
8470 श्री विजयसिंह जी हमेरलाल जी लोढ़ा, उदयपुर (राज.)
8471 श्री महावीर जैन श्वेताम्बर समिति, उदयपुर (राज.)
8472 श्री हिम्मतसिंह जी रतनलाल जी दलाल, उदयपुर (राज.)
8473 श्री विनीत जी कर्नल डी.एस. जी बया, उदयपुर (राज.)
8474 श्री गणेश जैन छात्रावास, उदयपुर (राज.)
8475 श्री अरविन्द जी प्रकाश जी चतुर, उदयपुर (राज.)
8476 श्री प्रकाशचन्द जी शान्तिलाल जी नलवाया, उदयपुर (राज.)
8477 श्री संजय जी औंकारमल जी भण्डारी, उदयपुर (राज.)
8478 श्री रोहित जी भंवर जी सेठ, उदयपुर (राज.)
8479 श्री निर्मल जी रोशनलाल जी कुणावत, उदयपुर (राज.)
8480 श्री पृथ्वीराज जी चन्दनमल जी सालेचा, बालोतरा, बाड़मेर (राज.)
8481 श्री अशोकचन्द जी कोठारी, खेतिया, बड़वानी (म.प्र.)
8482 सौ. चरणाबाई जी कान्तिलाल जी कोठारी, तोंडापुर, जलगांव (महा.)
8483 श्री रिखबचन्द जी उम्मेदराज जी मेहता, समदड़ी, बाड़मेर (राज.)
8484 श्री सुमतिलाल जी कन्हैयालाल जी सुराणा, बड़ाकीभोई, नाशिक (महा.)
8485 डॉ. अनिल जी शंकरलाल जी चौरडिया, नाशिक (महा.)
8486 श्री बनेचन्द जी पूनमचन्द जी वेदमूथा, नाशिक रोड़ (महा.)
8487 Shri Uttam Ji Champalal ji jain, Bangalore (Karnataka)
8488 ShriDharmendra SardarmalJi Sanklecha, Pangalore (Karnataka)
8489 Shri Parasmal Ji G. Lodha, Bangalore (Karnataka)
8490 Shri Mahendra Kumar Shohanlala Ji Mehta, Bangalore (Karnataka)
8491 Shri Ramesh Ji Nathmal Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
8492 Shri Ramesh Ji NathmalJi Jain, Sojat Road, Pali (Raj.)
8493 Shri Sujanmal Ji Pyarechand Ji Karnawat, Bangalore (Karnataka)
8494 Shri Jambukumar Ji Dharraj Ji Jain, Bangalore (Karnataka)
8495 Shri Padam Ji Amarchand Jain, Dapoli, Dist- Ratnagari(Maharastra)
8496 Shri Dalpatraj Ji Nathmal Ji Jain, Sojat Road, Pali (Raj.)
8497 श्रीमती प्रेमलता जी सम्पतराज जी शाह, जोधपुर (राज.)
8498 Shri Mohanlal Ji Jain, Chennai (T.N.)
8499 श्री शान्तिलाल जी चन्दनमल जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8500 श्री विरेन्द्रराज जी शुद्धराज जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8501 श्री शेलेन्द्र जी सम्पतराज जी बरड़िया, जोधपुर (राज.)
8502 डॉ. एम.एल. जी भंवरलाल जी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
8503 श्रीमती मधु जी बलवन्तराजजी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8504 श्री प्रफुल्ल जी दलपतराज जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8505 श्री महावीर जी मांगीचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8506 श्री श्रीचन्द जी बाघमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)

8507 श्री कुशलराज जी खिंवसरा, जोधपुर (राज.)
8508 श्री ऋषभ जी गौतमचन्द जी गुन्देचा, जोधपुर (राज.)
8509 श्री राजेन्द्र जी मदनलाल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
8510 श्री राकेश जी आसूलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8511 श्री समर जी गिरीश जी सुराणा, देवास (म.प्र.)
8512 श्री रतनलाल जी लोढ़ा, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
8513 श्री सुभाषचन्द जी भंवरलाल जी धाडीवाल, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)
8514 श्री ज्ञानचन्द जी अनोपचन्द जी बूरड़, जलगांव (महा.)
8515 श्री अशोक कुमार जी भंवरलाल जी भण्डारी, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
8516 श्री रेखचन्द जी देवराज जी मूथा, पीपाड़ शहर जोधपुर (राज.)
8517 श्री शरदकुमार जी लक्ष्मीचन्द जी सुराणा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
8518 श्री नरेन्द जी संकलेचा, ब्यावर, अजमेर (राज.)
8519 श्री एस.सी. कोठारी, ब्यावर, अजमेर (राज.)
8520 श्री समता जी हेमेन्द्रसिंह जी भण्डारी, भीलवाड़ा (राज.)
8521 Smt. Renuka Kirankumar Ji Khabia, Bangalore (Karnataka)
8522 श्री अनराज जी खीमराज जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8523 श्री विनोद कुमार जी पारसमल जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8524 श्री मूलचन्द जी छगनलाल जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8525 श्री हर्षदकुमार जी प्रमोद कुमार जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8526 श्री राकेश पी. चौपड़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8527 श्री मोतीलाल जी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8528 श्री ललित कुमार जी नाहर, अहमदाबाद (गुजरात)
8529 श्री सुभाष जी उगमराज जी लुणावत, अहमदाबाद (गुजरात)
8530 श्री सुमति कुमार जी सम्पतराज जी बम्ब, अहमदाबाद (गुजरात)
8531 श्री राजेन्द्र कुमार जी भंवरलाल जी बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8532 श्री सज्जनराज जी भंवरलाल जी कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8533 श्री प्रेमचन्द जी देवराज जी गोठी, अहमदाबाद (गुजरात)
8534 श्री सुरेशचन्द जी गुदडमल जी नाहर, अंकलेश्वर, भरूच (गुजरात)
8535 श्री अनोखीलाल जी जैन, अंकलेश्वर, भरूच (गुजरात)
8536 श्री हंसमुखभाई जी कुंवर जी शाह, अंकलेश्वर, भरूच (गुजरात)
8537 श्री फतेहचन्द जी पूनमिया, अंकलेश्वर, भरूच, (गुजरात)
8538 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजे), अजीतनाथ ट्रेडर्स, अंकलेश्वर, भरूच (गुजरात)
8539 श्री प्रकाशचन्द जी चम्पालाल जी पगारिया, बड़ौदा (गुजरात)
8540 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजे), नवकार फाइनेन्स, सूरत (गुजरात)
8541 श्री सुनिल कुमार जी चौरड़िया, सूरत (गुजरात)
8542 श्री मूलचन्द जी पींचा, सूरत (गुजरात)
8543 श्री राजेन्द्र कुमार जी दुग्गड़, सूरत (गुजरात)
8544 श्री भीकमचन्द जी बोथरा, सूरत (गुजरात)
8545 श्री प्रकाशमल जी बोथरा, सूरत (गुजरात)
8546 श्री सुरपतमल जी कांकरिया, सूरत (गुजरात)
8547 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजे), राजेश मोटर फायनेंस, सूरत (गुजरात)

8548 श्री मेहन्द्र कुमार जी पारसमल जी गुलेच्छा, अहमदाबाद (गुजरात)
8549 श्री राजेश कुमार नवरतनमल जी बुरड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8550 श्री प्रकाशचन्द जी नैनचन्द जी कर्नावट, जोधपुर (राज.)
8551 श्री दलजीतलाल जी चांदबिहारीलाल जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8552 श्री महावीरचन्द जी कपूरचन्द जी खिंवसरा, जोधपुर (राज.)
8553 श्री रासबिहारीलाल जी डॉ. अमृतलाल जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8554 श्री लक्ष्मीपाल जी माणकचन्द जी लुणावत, जोधपुर (राज.)
8555 श्री पारसमल जी बंशीलाल जी छाजेड़, जोधपुर (राज.)
8556 श्री प्रकाशमल जी भंवरलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8557 श्री प्रसन्नराज जी ऋषभराज जी जैन, जोधपुर (राज.)
8558 Smt. Manju Ji Prakash Ji Jain, Mysore (Karnataka)
8559 श्री अमृतलाल जी चौधरी, जोधपुर (राज.)
8560 श्री सुपारसराज जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
8561 श्री विजयमल जी ओस्तवाल, जोधपुर (राज.)
8562 श्री प्रकाशमल जी सिंघवी, जोधपुर (राज.)
8563 श्री गुलाबसिंह जी सदावत, जोधपुर (राज.)
8564 श्री विरेन्द्र जी नरसिंहलाल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8565 श्री बी.के.जी हस्तीमल जी पारलेचा, जोधपुर (राज.)
8566 श्री जवाहरलाल जी बाबूलाल जी जैन, पहरसर, भरतपुर (राज.)
8567 श्री राजकुमार जी सुदर्शनलाल जी जैन, पहरसर, भरतपुर (राज.)
8568 श्री विजयसिंह जी राजपूत, मेड़तासिंटी, नागौर (राज.)
8569 श्री सुखदेवमल जी टाटिया, जोधपुर (राज.)
8570 श्री सोहनलाल जी गेलड़ा, भदेसर, चित्तौड़गढ़ (राज.)
8571 श्रीमती गुलाबीदेवी जी जैन, जोधपुर (राज.)
8572 ब्रिगेडियर डॉ. एन.एम.सिंघवी जी, जोधपुर (राज.)
8573 श्री जयश्री जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8574 श्री विजयराज जी चम्पालाल जी गेलड़ा, बोरावड़, नागौर (राज.)
8575 श्री महेन्द्र कुमार जी अमरचन्द जी जैन, बोरावड़, नागौर (राज.)
8576 श्री सुरेशचन्द जी पदमचन्द जी दुग्गड़, बोरावड़, नागौर (राज.)
8577 श्री टीकमचन्द जी गणपतलाल जी बोथरा, बोरावड़, नागौर (राज.)
8578 श्री रजनीश कुमार जी सागरमल जी गेलड़ा, मकराना, नागौर (राज.)
8579 श्री उत्तमचन्दजी सोहनलाल जी गेलड़ा, दिल्ली
8580 श्री नेमीचन्द जी ताराचन्द जी गेलड़ा, बोरावड़, नागौर (राज.)
8581 श्री महावीरचन्द जी केवलचन्द जी गेलड़ा, बोरावड़, नागौर (राज.)
8582 श्री कपिल जी लालचन्द जी बाफना, बोरावड़, नागौर (राज.)
8583 श्री पंकज कुमार जी हंसराज जी पींचा, बोरावड़, नागौर (राज.)
8584 श्री सुबोध जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
8585 श्री राजेन्द्र जी इन्दरचन्द जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8586 श्री महादेव जी हेमनदास जी नानकानी, जोधपुर (राज.)
8587 श्री कैलाश जी किशनचन्द जी पटवा, जोधपुर (राज.)
8588 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें), बी.एम.शाह एण्ड कम्पनी, जोधपुर (राज.)

8589 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें), विमल हैण्डलूम, जोधपुर (राज.)
8590 श्री नरेन्द्र कुमार जी लाडूमल जी खींची, जोधपुर (राज.)
8591 श्री निरंजन जी सुमतिचन्द जी बाफना, जोधपुर (राज.)
8592 श्री रामलाल जी मोहनलाल जी जांगिड़, जोधपुर (राज.)
8593 श्री मुरलीधर जी मेघराज जी गहलोत, जोधपुर (राज.)
8594 श्री उत्तमचन्द जी जैन, जोधपुर (राज.)
8595 श्री पारसमल जी भूरमल जी टाटिया, जोधपुर (राज.)
8596 श्री एस.पी. नाहर, जोधपुर (राज.)
8597 श्री जसवन्तराज जी मेहता, जोधपुर (राज.)
8598 श्री मोहनराज जी अशोककुमार जी बाघमार, जोधपुर (राज.)
8599 श्री खिंवराज जी रंगराज जी मेहता, पाली मारवाड़ (राज.)
8600 श्री रमेश कुमार जी मदनलाल जी बरड़िया, पाली मारवाड़ (राज.)
8601 श्री पारसमल जी दलीचन्द जी छाजेड़, पाली मारवाड़ (राज.)
8602 श्री राजेश जी सोहनलाल जी बलाई, पाली-मारवाड (राज.)
8603 श्री सज्जन जी छोटमल जी धारीवाल, पाली-मारवाड़ (राज.)
8604 श्री सुधीर जी भण्डारी, जोधपुर (राज.)
8605 Shri Gajendra Ji Mehta, Chennai (T.N.)
8606 श्री टी.के. श्रीपालचन्द जी मेहता, सांगानेर, जयपुर (राज.)
8607 Shri Rohan Ji Sripalchand Ji Mehta, Chennai (T.N.)
8608 श्री राजकुमार जी संकलेचा, जोधपुर (राज.)
8609 श्री मोहनलाल जी चौपड़ा, जोधपुर (राज.)
8610 श्री महेन्द्र जी पारख, जोधपुर (राज.)
8611 श्री विमल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
8612 श्री जोगराज जी नेमीचन्द जी लूंकड़, जोधपुर (राज.)
8613 श्री शंकरलाल जी हेमराज जी बोहरा, जोधपुर (राज.)
8614 श्री अनिल जी गौतमसिंह जी पारख, जोधपुर (राज.)
8615 श्री सांवरमल जी अग्रवाल, जोधपुर (राज.)
8616 श्री सोहनलाल जी जैन, जोधपुर (राज.)
8617 श्री सोनाज जी जैन, भावनगर (गुंजरात)
8618 श्री तरूणभाई जी जैन, भावनगर (गुजरात)
8619 श्री कमलेशभाई जी मारू, भावनगर (गुजरात)
8620 श्री अशोकभाई जी जैन, भावनगर (गुजरात)
8621 श्री अनिलभाई जी जैन, भावनगर (गुजरात)
8622 श्री सागरमल जी जैन, भावनगर (गुजरात)
8623 श्री अशोक जी रांका, भावनगर (गुजरात)
8624 श्री जवाहरलाल जे. मेहता, सूरत (गुजरात)
8625 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें), अशोक एण्टरप्राईजेज, सूरत (गुजरात)
8626 श्री पन्नालाल के.पींचा, अहमदाबाद (गुजरात)
8627 श्री कन्हैयालाल जी चम्पालाल जी सुराणा, अहमदाबाद (गुजरात)
8628 श्री सुशील कुमार जी लालचन्द जी सिंघवी, अहमदाबाद (गुजरात)
8629 श्री संजय कुमार जी धर्मीचन्द जी कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)

8630 श्री पुखराज जी धनराज जी बोथरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8631 श्री हुक्मीचन्द जी आइदानमल जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
8632 श्री महेन्द्र कुमार जी मोतीलाल लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8633 श्री विजयराज जी चम्पालाल जी लोढ़ा, अहमदाबाद (गुजरात)
8634 Shri Sanjay Kumar Ji Mithalal Ji Chhajed, Chennai (T.N.)
8635 Shri Dharmichand Ji Madanlal Ji Kanted, Arcot, Dist.-N.A..
8636 Shri Prakashchand Ji Sajjanraj Ji Roonwal, Chennai (T.N.)
8637 श्री बाबूलाल जी दलीचन्द जी बालडोटा, फालना, पाली (राज.)
8638 डॉ. संजय जी जनवरिया, बालोतरा, बाडमेर (राज.)
8639 श्री विनोद जी मोडीलाल जी सूर्या, खेड़ा ब्रह्मा, साबरकाठा (गुजरात)
8640 श्री भंवरलाल जी गेहरीलाल जी चतर, विजापुर, मेहसाना, (गुजरात)
8641 श्री बरदीचन्द जी जमनालाल जी डागा, वडाली, साबरकांठा (गुजरात)
8642 श्री भंवरलाल जी कन्हैयालाल जी पितलिया, वडाली, साबरकांठा (गुजरात)
8643 श्री ओमप्रकाश जी जसराज जी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8644 श्री जसराज जी अभयमल जी नाहर, अहमदाबाद (गुजरात)
8645 श्री सुरेन्द्र जी कदावत, बडौदा (गुजरात)
8646 श्री शान्तिलाल जी भेड़ा, बडौदा (गुजरात)
8647 श्री नथमल जी सोहनलाल जी राठौड़, अहमदाबाद (गुजरात)
8648 श्री अभयकुमार जी धर्मीचन्द जी कांकरिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8649 श्री नवरतनमल जी सोहनलाल जी बोहरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8650 श्री प्रकाशचन्द जी भंवरलाल जी लुणिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8651 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें), मैसर्स आनन्द फायनेन्स, अहमदाबाद (गुजरात)
8652 श्री नरेश कुमार जी मोहनलाल जी तलेसरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8653 श्री कमलचन्द जी तनसुखदास जी चौरड़िया, अहमदाबाद (गुजरात)
8654 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें),मैसर्स सिद्धश्री एण्टरप्राईजेज,अहमदाबाद (गुजरात)
8655 Shri(Please Send Your Name) M/s. Gugaliya Finance. Chennai (T.N.)
8656 श्री प्रवीण कुमार जी हडमानचन्द जी बौरून्दिया, अहमदाबाद (गुजरात)
8657 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें) मै.एम.एच. बाफना एण्ड कं., अहमदाबाद (गुजरात)
8658 श्री दिनेश कुमार जी ज्ञानचन्द जी कोठारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8659 श्री जसवन्तराज जी सोनराज जी पोरवाल, अहमदाबाद (गुजरात)
8660 श्री सुभाषचन्द जी भंवरलाल जी बाघमार, अहमदाबाद (गुजरात)
8661 श्री मोहनलाल जी दलचन्द जी बोथरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8662 श्री कमलेश जी रेवतचन्द जी भण्डारी, अहमदाबाद (गुजरात)
8663 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें) भंसाली फायनेन्स, अहमदाबाद (गुजरात)
8664 श्री अरिहन्त कुमार जी ज्ञानचन्द जी मुणोत, अहमदाबाद (गुजरात)
8665 श्री सुरेश कुमार जी हीरालाल जी तलेसरा, अहमदाबाद (गुजरात)
8666 श्री (कृपया स्वयं का नाम भेजें), मैं एम.एम. ऑटो फायनेन्स, अहमदाबाद (गुजरात)
8667 श्री मदनलाल जी राठोड़, उज्जैन (म.प्र.)
8668 श्री सागरमल जी कोठारी, उज्जैन (म.प्र.)
8669 श्रीमती स्नेहलता जी गोलेछा, जयपुर (राज.)
8670 श्री नरेन्द्र कुमार जी जैन, जयपुर (राज.)

8671 श्री महेश जी सोगाणी, जयपुर (राज.)
8672 ममता जी जैन, जयपुर (राज.)
8673 श्री विमलचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

21000/– श्री प्रकाशचन्द जी सी. सुराणा, नाशिक, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के नाशिक पधारने पर दर्शनों की खुशी में।

2100/– श्री कैलाशचन्द जी डागा, जयपुर, अपने सुपुत्र चि. संजीव का विवाहोत्सव दिनांक 17.2.02 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1101/– Sangam Exhibitors, Jaipur की ओर से जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री भंवरलाल जी रमेशचन्द जी ओस्तवाल, चेन्नई, श्री जवरीलाल जी ओस्तवाल का स्वर्गवास दिनांक 6 फरवरी 2002 को हो जाने पर उनकी पुण्यस्मृति में।

1100/– श्री नवरतनमल जी, राकेश कुमार जी, विक्रम कुमार जी बाघमार, चेन्नई, अपने पूज्य पिताजी श्री भंवरलाल जी बाघमार की पुण्यस्मृति में।

1100/– श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रीसंघ, धुलिया, वर्ष 2001 का चातुर्मास पू. आचार्यप्रवर, पू. उपाध्यायप्रवर आदि ठाणा 10 तथा सतीमण्डल ठाणा 6 के सान्निध्य में सफल चातुर्मास सानंद सम्पन्न होने की खुशी में।

1100/– श्री लूणकरणजी सज्जनराजजी लोढ़ा,कानपुर।अपनी पूज्य माता श्रीमती झणकार कंवर जी लोढ़ा धर्मपत्नी स्व. श्री हेमराज जी लोढ़ा(हीरादेसर) की पुण्यस्मृति में।

1000/– श्री सुमेरमल जी कांकरिया, जोधपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कंचन जी कांकरिया के वर्षीतप की तपस्या के उपलक्ष्य में।

1000/– श्रीमती कमला जी मेहता, जोधपुर, पूज्य श्री गौतममुनि जी म.सा. के सान्निध्य में पाली में अक्षय तृतीया के अवसर पर वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

1000/– श्री राजेश जी गांग, श्रीमती योगिता जी गांग, जोधपुर, पूज्य पिताजी श्री चंचलमल सा गांग की सेवा निवृत्ति का 1 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में।

501/– श्री श्रवण कुमार जी जैन, गंगापुर सिटी, अपनी सुपुत्री सौ. कां. रेखा का विवाहोत्सव दिनांक 15.02.02 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

501/– श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा, धर्मपत्नी स्व. श्री त्रिलोकचन्द जी गुलेच्छा एवं श्रीमती जतनराज जी गुलेच्छा, जोधपुर, श्री जतनराज जी गुलेच्छा, बैंगलोर का दिनांक 5 अप्रेल 2002 को देवलोक होने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

501/– श्री गौतमचन्द जी कांकरिया, जोधपुर, महासती जी श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के सुखशांति पूर्वक सानन्द वर्षीतप की तपस्या पूर्ण होने एवं पारणे की खुशी में।

501/– श्री विजयकुमार जी प्रसन्नकुमार जी सिंघवी, ब्यावर, सौ. पूजा (सुपुत्री श्री प्रसन्नकुमार जी सिंघवी) संग चि. विजयकुमार जी सुपुत्री श्री पारसमलजी सा अजमेर के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में।

500/– श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लूणिया, पल्लीपेठ, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– श्री कांतिलाल जी भीकचन्द जी चौधरी, धुलिया, चि. हितेश (सुपुत्र श्री कांतीलाल जी चौधरी) का शुभ विवाह सौ. का. बिन्दू (सुपुत्री श्री रामलाल जी मेहता, इन्दौर–चेन्नई) के संग दिनांक 8 मई 2002 को इन्दौर में सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

500/– श्रीमती रतनदेवी धर्मपत्नी श्री चंपालाल जी कांकरिया, एवं श्री हीराचन्द जी कांकरिया, जोधपुर, श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के सुखशांति पूर्वक सानन्द वर्षीतप

की तपस्या के पारणे की खुशी में।

251/– श्री डिग्गीप्रसाद जी महावीर प्रसाद जी जैन करेला वाले, सवाईमाधोपुर, आपकी माताश्री की पुण्यस्मृति में।

251/– श्रीमती अकलकंवर जी धर्मपत्नी श्री इन्दरचन्द सा. सिंघवी, जोधपुर, महासती जी श्री सौभाग्यवती जी म.सा. के सुखशांति पूर्वक सानन्द वर्षीतप की तपस्या पूर्ण होने एवं पारणे की खुशी में।

201/– श्री जैन स्थानक, दिल्ली, जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने की खुशी में।

101/– श्री अमीरचन्द जी जैन, करौली, सुपुत्र चि. संतोष संग सौ.कां. कविता सुपुत्री श्री पदमचन्द जी जैन, जयपुर का दिनांक 15.02.02 को विवाहोत्सव सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

101/– श्री बनवारीलाल जी विक्रम कुमार जी जैन, जयपुर, विवाहोत्सव के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्री धर्मराज जी सुराणा, दादरा, चि. ऋषभ का विवाहोत्सव सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

100/– श्री बाबूलाल जी जैन, भेडोला, जिला–सवाईमाधोपुर, ज्येष्ठ पुत्रवधु श्रीमती मन्जू देवी जी धर्मपत्नी श्री प्रदीप जी जैन की पुण्य स्मृति में।

100/– श्रीमती रतनदेवी धर्मपत्नी श्री चंपालाल जी कांकरिया, एंव श्री हीराचन्द जी कांकरिया, जोधपुर, श्रीमती उगमकंवर धर्मपत्नी श्री रतनलाल जी बोथरा के वर्षीतप के पारणक के उपलक्ष्य में।

51/– श्री कस्तूरचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी, सुपुत्र श्री राकेश जी संग सौ.कां. सुनिता जी सुपुत्री श्री बृजलाल जी जैन, गुंडवास के साथ दिनांक 15.02.02 को विवाहोत्सव सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

51/– श्री जशकरण जी डागा, टोंक, कुमारी नेहा सुपुत्री श्री देवेन्द्र कुमार जी डागा का कक्षा आठ में टोंक जिले में प्रथम स्थान आने व गार्गी पुरस्कार से पुरस्कृत होने की खुशी में।

51/– श्रीमती भगवती देवी सम्पतसिंह जी जैन, भरतपुर, पूज्य गुरुदेव की पुण्यतिथि के अवसर पर जिनवाणी को भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

500/– श्री शान्तिलाल जी खाबिया, भोपाल(मध्यप्रदेश) से मण्डल को आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त।

साहित्य-प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

30000/– श्री जी.एस. प्यारेलाल जी कोठारी जैन, चेन्नई, पुस्तक "झलकियाँ जो इतिहास बन गई" प्रकाशन हेतु मण्डल को आर्थिक सहयोग सप्रेम प्राप्त।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार–प्राप्त

1000/– श्रीमती कमला जी मेहता, जोधपुर, पूज्य श्री गौतम मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में पाली में अक्षयतृतीया के अवसर पर वर्षीतप का पारणा सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में।

500/– श्री कमलेशचन्द जी सा बाफना, चेन्नई, पूज्य पिताजी श्री नेमीचन्द जी बाफना की मासिक पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

1411/– श्री रतनचन्द जी सा गोठी, रामामण्डी (पंजाब) सहायतार्थ।

2072/– गुप्तदान, रामामण्डी (पंजाब) सहायतार्थ।

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्तता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
✆ 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

JAI MAHAVEER JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
- आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

परंपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं

आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.

आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL GROUP
SINCE 1854

मे. राजमल लखीचंद

(गोल्ड एम्पोरियम)

१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57 डाक पंजीयन संख्या RJ/2803/02

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।